



अंतस

अर्द्धवार्षिक पत्रिका, अंक-19, 26 जनवरी 2021



जिंदगी ऑनलाइन



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

नियम-निर्देश



- ☞ अंतस के आगामी अंक के प्रकाशन हेतु अपनी मौलिक एवं यथासंभव अप्रकाशित रचनाएँ भेजने का कष्ट करें।
- ☞ रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।
- ☞ लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आंकड़ों से संबंधित आरेख स्पष्ट होना चाहिए।
- ☞ अनूदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान राजभाषा प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।
- ☞ प्रकाशन के लिए किसी भी लेखक को किसी प्रकार का मानदेय नहीं दिया जाएगा।
- ☞ अंतस में उन सभी प्रकार के विचारों का स्वागत होगा जो संस्थान परिसर में रहने वाले अथवा काम करने वाले लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं किन्तु किसी प्रकार के राजनीतिक विचारों को प्रोत्साहित नहीं किया जाएगा।
- ☞ अंतस में प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मण्डल अथवा राजभाषा प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की होगी।
- ☞ रचनाएं अंतस के अनवरत दो अंकों में प्रकाशित न होने की स्थिति में संबंधित रचनाकार राजभाषा प्रकोष्ठ से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- ☞ प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिन्दी भाषा हो।

स-आभार
सम्पादक मंडल

अंतस परिवार

संरक्षक

प्रोफेसर अभय करंदीकर

निर्देशन

प्रोफेसर एस गणेश

मुख्य संपादक

डॉ. अर्क वर्मा

संपादक

डॉ. वेद प्रकाश सिंह

सम्पादन सहयोग

प्रोफेसर अरुण कुमार शर्मा

प्रोफेसर शिखा दीक्षित

प्रोफेसर कांतेश बालानी

श्री सोमनाथ डनायक

अभिकल्प

अल्पना दीक्षित

अनुवाद

श्री जगदीश प्रसाद

छाया चित्र

श्री गिरीश पंत

विशेष सहयोग

प्रस्तुत अंक के सभी रचनाकार

समस्त संस्थान कर्मी

एवं

विद्यार्थी साहित्य सभा

पारसनाथ
LECTURE HALL
COMPLEX

संकेतक

शुभेच्छा

निदेशक	3
उपनिदेशक	4
कुलसचिव	5
सम्पादकीय	6

रिपोर्ट

53वाँ दीक्षांत समारोह	7-8
सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2020	9
हिंदी दिवस समारोह-2020	10-11

साहित्य-यात्रा

गूगल मौसी	12-13
जिंदगी ऑनलाइन	14-15
कोरोना से आजादी	16
मेरी बहन, मेरी दोस्त	16
धन्यवाद-ऑनलाइन जिंदगी	17-18
स्कूल दोस्तों का वर्चुअल गेट-टूगेदर	17-18
इम्यूनिटी बूस्टर लड्डू (सिठौरा)	19
कोरोना और दादी माँ	20
मैं हिंदुस्तान हूँ	21
समाचार	22
मन	22
मेरी तनया	23
कोरोना की घड़ी है मुश्किल बड़ी	23
डाली और उसकी पत्नी	23
उलझी जिंदगी महामारी के दौर में	24
नारी	24
जिंदगी ऑनलाइन-एक मौका	25

लेख

सहनशीलता की परीक्षा	26
सतर्क भारत, समृद्ध भारत	27
किसान और किसानी	28
लॉकडाउन की बंदिशों के साथी इंटरनेट और टीवी	29-30

तकनीकी लेख

C3i हब: भारत के डिजिटल भविष्य को सुरक्षित करने की दिशा में एक पहल वर्चुअल लैब (आभासी प्रयोगशाला)	31-35
--	-------

विरासत

उसने कहा था (कहानी)	36-39
---------------------------	-------

अतिथि रचनाकार

लोकगीत: मानव हृदय के सहज उद्गार	40-42
---------------------------------------	-------

भाषा-विमर्श

आलोचना	43-44
मलयालम भाषा	45-46

बालबत्तीसी

नकल का फल	47-48
-----------------	-------

कार्यालयीन टिप्पणियाँ



शुभेच्छा

निदेशक की कलम से...

प्रिय पाठक,

हम सभी जानते और मानते हैं कि मनुष्य निरंतर प्रकृति के सानिध्य में ही रहकर अपने अस्तित्व की परिकल्पना और व्यक्तित्व के विकास की अवधारणा को मूर्त रूप प्रदान करता है, और आदतन प्रकृति पर हावी होने का प्रयत्न भी करता रहता है। परंतु पिछला वर्ष कोविड-19 महामारी के कारण जहाँ तमाम ऊहापोह, अनिश्चितता, अकेलापन, अवसाद और भय जैसे नकारात्मक अनुभवों के साथ बीता वहीं संस्थान में इस दौरान कई नवाचारों को मूर्त रूप प्रदान किया गया। संस्थान ने बहुत कम समय में पूर्णतया स्वदेशी वेंटिलेटर का निर्माण किया। देश में मास्क के अभाव को दूर करने के लिए उन्नत एवं कम कीमत का N-95 मास्क का निर्माण किया गया, इसी क्रम में एक श्वसन-यंत्र के आविष्कार के साथ ही वायरस डिसिन्फेक्शन डिवाइस का भी आविष्कार हुआ जो किसी भी स्थान को कोविड-19 के साथ-साथ और भी कई विषाणुओं से सुरक्षा प्रदान करता है। सुखद है कि हमारे देश के वैज्ञानिकों के अथक परिश्रम एवं शोध से वैक्सीन की खोज के साथ पूरे देश में टीकाकरण का अभियान भी शुरू हो चुका है जिसके सकारात्मक परिणाम शीघ्र ही देखने को मिलेंगे।

वर्ष 2020 की परिस्थितियों ने जीवन की सभी गतिविधियों में डिजिटलाइजेशन के महत्व को विस्तार प्रदान किया है। चाहे शिक्षा हो या work from home सभी को मान्यता मिली। इसी कड़ी में संस्थान की गृह पत्रिका अंतस के 19वें अंक का विषय-वस्तु भी जिंदगी ऑनलाइन पर आधारित है। हमेशा की तरह संस्थान परिसर के रचनाकारों ने अपने खट्टे-मीठे अनुभवों को व्यक्त करते हुए अपने लेखों और कविताओं के माध्यम से इस पत्रिका को सजाया सँवारा है। मैं व्यक्तिगत रूप से सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ और उनके स्वस्थ जीवन की कामना करता हूँ।

समस्त पाठकों से मेरा अनुरोध है कि पत्रिका को अवश्य पढ़ें एवं अपनी प्रतिक्रिया से सम्पादक मंडल को अवगत कराएँ तथा अपनी रचनाओं से आनेवाले अंकों को और समृद्ध और उपयोगी बनाने में अपना योगदान दें।

धन्यवाद!

अभय करंदीकर
निदेशक





शुभेच्छा

उपनिदेशक की दृष्टि में...

प्रिय पाठक गण,

मुझे इस बात की बहुत प्रसन्नता है कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान अपनी हिंदी साहित्य की गृह पत्रिका 'अंतस' के 19वें अंक के साथ आपके समक्ष उपस्थित हुआ है। संस्थान में कार्यरत विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा अन्य परिसरवासियों ने पिछले कई वर्षों से अपनी रचनाओं से इस पत्रिका को समृद्ध और पठनीय बनाने में अपना सहयोग प्रदान किया है।

पिछला वर्ष हम सभी के लिए कई मामलों में अभूतपूर्व रहा। जहाँ एक ओर पूरा विश्व अवसाद और भय से ग्रसित था तो वहीं दूसरी ओर भारतीय संस्कृति और प्राचीन जीवन-शैली को प्रमाणिकता की कसौटी पर कसा गया और उसे एक नई पहचान मिली। वर्तमान परिस्थिति में जहाँ डिजिटलाइजेशन का विस्तार हुआ है वहीं हिंदी भाषा के प्रयोग का भी चलन बढ़ा है।

इस अवसर पर अंतस पत्रिका के सम्पादन-कार्य से जुड़े समस्त सदस्यों का आभार प्रकट करते हुए संस्थान-परिसर के सभी निवासियों से अनुरोध करता हूँ कि यथा-सम्भव अपनी रचना-धर्मिता से पत्रिका को समृद्ध बनाएँ जिससे यह संस्थान में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ पाठकों तक आपकी बात को पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम बन सके।

धन्यवाद!

गणेश

एस गणेश
उपनिदेशक





शुभेच्छा

कुलसचिव की कलम से...

प्रिय पाठकों,

देश और दुनिया के लिये गतवर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से चुनौतीपूर्ण रहा है। कोरोना महामारी के कारण देश-दुनिया की अधिकांश शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक गतिविधियां बाधित रही हैं। लोगों ने सावधानीपूर्वक, बड़े ही धैर्य के साथ इस संकट-काल को पार किया है। कोरोना महामारी का यह काल देशवासियों के लिये अनेकानेक अवसर लेकर आया। **आवश्यकता अविष्कार की जननी है** का कथन इस कोरोना काल में चरितार्थ सिद्ध हुआ। इस कथन के क्रम में हमारे वैज्ञानिकों ने कोरोना के स्वदेशी टीके का अविष्कार कर लिया है। इसके साथ भारत उन चुनिंदा देशों की सूची में शामिल हो गया है जिन्होंने कोरोना के इलाज के लिये सबसे पहले टीका तैयार किया है, जो अब देशवासियों को लगनी भी शुरू हो चुकी है। यह सर्वविदित है कि कोरोना काल में लोगों ने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा रोजमर्रा की जिंदगी को व्यवस्थित रूप से संचालित करने के लिये विभिन्न **ऑनलाइन टूल्स** का प्रयोग किया तथा संकट में भी जिंदगी की गति को सुगमतापूर्वक चालू रखा। हिंदी पत्रिका अंतस के इस अंक का शीर्षक भी **जिंदगी ऑनलाइन** ही है।

हमारे परिसरवासियों एवं विद्यार्थियों ने भी इस चुनौती का बड़े ही धैर्यपूर्वक सामना किया। कोरोना काल में पठन एवं पाठन पूर्णरूप से ऑनलाइन माध्यम से हुआ। यद्यपि संस्थान में चरणबद्ध तरीके से विद्यार्थियों का आगमन शुरू हो चुका है जिसके फलस्वरूप संस्थान की शैक्षणिक गतिविधियां धीरे-धीरे सामान्य होने की ओर तेजी से अग्रसर हैं, तथापि सभी विद्यार्थियों के आगमन में कुछ और समय लगेगा।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर हिन्दी पत्रिका अंतस के 19वें अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे व्यक्तिगत रूप से अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। हमारे रचनाकारों ने नियमित रूप से अंतस को अपनी रचनाएं एवं लेख उपलब्ध कराये हैं। जिसके कारण प्रस्तुत अंक समय से प्रकाशित हो रहा है। पत्रिका के इस अंक के माध्यम से मैं पाठकों से भी अनुरोध करना चाहूंगा कि वे भी अंतस के लिये अपने उपयोगी लेख व रचनाएं उपलब्ध कराते रहें जिससे इसे और अधिक आकर्षक एवं लोकप्रिय बनाया जा सके।

नववर्ष-2021 कि शुभकामनाओं के साथ!

कृष्ण कुमार तिवारी
कुलसचिव





सम्पादकीय

सम्पादक की कलम से...

सभी पाठकों को मेरी और अंतस परिवार की तरफ से नमस्कार एवं हार्दिक अभिनन्दन ।

सबसे पहले मैं आपको और हमारे समस्त परिसर निवासियों को नए वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें देना चाहता हूँ। हम सभी को ज्ञात है कि वर्ष 2020 केवल हमारे लिए ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के लिए बहुत अच्छा नहीं रहा। कोरोना वायरस संक्रमण के कारण फैलने वाली कोविड -19 महामारी ने पूरे विश्व की आबादी को प्रभावित किया और कई महीनों तक सभी को अपने अपने घरों पर बैठने के लिए मजबूर किया।

यह समय सभी के लिए बहुत मुश्किलों से भरा रहा है, जहाँ कुछ लोगों या उनके परिवारजनों ने इस बीमारी को करीब से देखा और उससे संघर्ष किया होगा वहीं बहुत से लोगों, ने इसके कारण अन्य कठिनाइयों से मुकाबला किया होगा। इसी श्रृंखला में हमारे परिसर के सभी छात्र, शिक्षक एवं अन्य कर्मचारियों ने भी कोरोना के समय में भी अपने क्रियाकलाप जारी रखने के लिए नए और अभिनव तरीकों को अपनाया है।

अंतस का यह विशेषांक 'जिंदगी ऑनलाइन' इन्ही प्रयासों से प्रेरित है।

सोमनाथ डनायक जी की रचना 'गूगल मौसी' से शुरू होकर, आशीष शर्मा, दिव्या त्रिपाठी, अजय मोहन जैन और 'केशवन्दु' संतोष मिश्रा जी की रचनायें इन अनूठे अनुभवों को संकलित करके पाठकों को उनके जीवन की याद दिलाती हैं। निश्चय ही इन विगत कुछ महीनों ने हमें अपनी अपनी संघर्ष करने की क्षमता और किसी भी परिस्थिति में लड़ते रहने और अनुकूलन की जिजीविषा से दोबारा परिचित कराया है। उपेंद्र कुमार पराशर जी के लॉकडाउन से जुड़े अनुभव भी इसी की बानगी देते हैं।

आज का युग डिजिटल तकनीकी का युग है और इस दिशा में भारत और भारत के संस्थानों को बेहतर रूप से तैयार रहना ही होगा। चाहे वो शिक्षा का क्षेत्र हो या फिर डिजिटल व्यापार आदि के उपक्रम। सुरत्ना दास का लेख हमें हमारे संस्थान के C3i Hub उपक्रम के बारे में परिचित कराता है। यह उपक्रम साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में अग्रणी अनुसंधान की दिशा में कार्यरत है। भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा पोषित इस उपक्रम की जानकारी पाठकों को रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक लगेगी। इसके साथ ही प्रोफेसर कांतेश बालानी की आभासी प्रयोगशाला के बारे में लिखा हुआ तकनीकी लेख भी हमें काफी पठनीय लगेगा।

भाषा और साहित्य में रुचि रखने वाले पाठकों को आलोचना पर लिखा हुआ लेख बहुत पसंद आयेगा। इसके साथ ही मलयालम भाषा के विषय में भाषा विमर्श भी पाठकों का ज्ञान बढ़ाएगा।

मैं आशा करता हूँ कि आप सभी अंतस के इस विषय वस्तु को पसंद करेंगे और अंतस परिवार के प्रति अपना स्नेह बनाये रखेंगे।

अर्क वर्मा

डॉ अर्क वर्मा

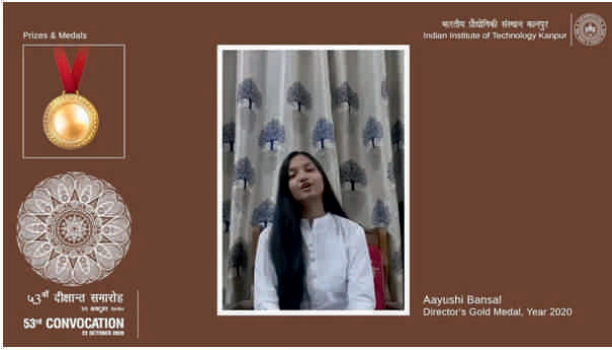
प्रोफेसर प्रभारी (राजभाषा प्रकोष्ठ) एवं मुख्य संपादक



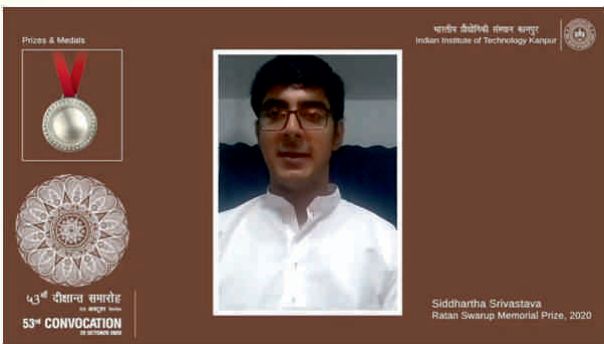
रिपोर्ट

53वाँ दीक्षान्त समारोह

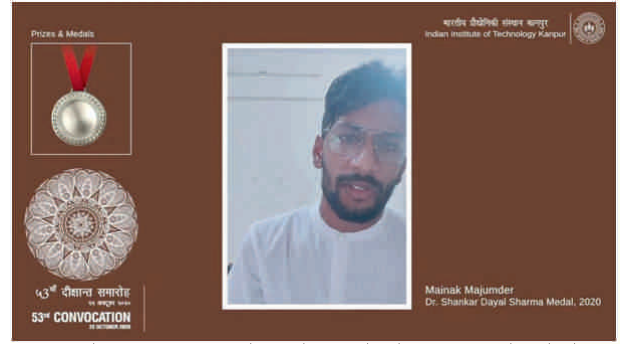
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में विगत 22 अक्टूबर 2020 को 53 वें दीक्षान्त समारोह का आयोजन किया गया। आईबीएम के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. अरविंद कृष्णा इस समारोह में बतौर मुख्य अतिथि जुड़े जबकि संचालक मण्डल के अध्यक्ष डॉ. कोपिल्लिल राधाकृष्णन ने समारोह की अध्यक्षता की। इस दीक्षान्त समारोह के अवसर पर कुल 2207 विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान की गईं। अवसर पर संस्थान के प्रतिभावान छात्रों को विभिन्न प्रतिष्ठित पुरस्कारों एवं मेडल प्रदान कर सम्मानित किया गया।



संस्थान के निदेशक प्रोफेसर अभय करंदीकर के निर्देशन में आयोजित हुए इस दीक्षान्त समारोह में आईबीएम के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. अरविंद कृष्णा ने 28 पीएचडी छात्रों को उत्कृष्ट थीसिस के लिए सम्मानित किया। इस दौरान सौ से अधिक मेडल एवं पुरस्कार भी प्रदान किये गये। समस्त उपाधियां, मेडल एवं पुरस्कार कोविड-19 प्रतिबंधों एवं सामाजिक दूरी के चलते विद्यार्थियों की भौतिक उपस्थिति के बिना ही ऑनलाइन वितरित किये गये। अन्य महत्वपूर्ण प्रतिष्ठित पुरस्कारों एवं पदकों में राघव गर्ग को प्रेसिडेंट गोल्ड मेडल, सौम्यदीप दत्ता को डायरेक्टर्स गोल्ड मेडल, आयुषी बंसल को डायरेक्टर्स गोल्ड मेडल, सिद्धार्थ श्रीवास्तव को रतन स्वरूप ममोरियल पुरस्कार, मैनक मजूमदार को शंकर दयाल शर्मा मेडल प्रदान किया गया।



इसके अतिरिक्त अध्यापन में उत्कृष्टता के लिए संस्थान को दो संकाय सदस्यों, डॉ. मोहित एस लॉ (यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग) को स्नातक छात्रों द्वारा चुने गए उत्कृष्ट शिक्षक के लिए 'द गोपाल दास भंडारी मेमोरियल टीचर अवार्ड' एवं डॉ. अरिजित गांगुली (गणित एवं सांख्यिकी विभाग) को शिक्षण तथा अनुसंधान के



माध्यम से शुद्ध गणित को आगे बढ़ाने के लिए छात्रों को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए 'सुशीला एवं कांतिलाल मेहता' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि एवं संस्थान के पूर्व छात्र डॉ. अरविंद कृष्णा ने विद्यार्थियों का आह्वान किया कि उन्हें हमेशा इनोवेटिव सोच के साथ जिज्ञासु एवं मजबूत इरादे वाला होना चाहिए। हर चीज में जिज्ञासा होनी चाहिए कि ये कैसे और क्यों हुआ? इसमें अगर कुछ बदलाव किया जाए तो क्या ये और बेहतर हो सकता है? डॉ. कृष्णा ने कैंपस में गुजरी अपनी पुरानी यादों को भी साझा किया। विद्यार्थियों को कामयाबी के गुर बताए। उन्होंने कहा कि यदि किसी कार्य को प्रारंभ किया है तो उसे अंतिम मंजिल तक ले जाने की हठ होनी चाहिए। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रोफेसर अभय करंदीकर ने अपने उद्बोधन के माध्यम से सभी को अवगत कराया कि कोरोना काल में संस्थान के वैज्ञानिक, छात्र एवं पूर्व छात्रों ने नये-नये इनोवेशन



कर देश और समाज की मदद की है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण पोर्टबल वेंटीलेटर है। इस दौरान उन्होंने संस्थान के अनेक संकाय सदस्यों को प्राप्त पुरस्कारों एवं सम्मानों की भी जानकारी उपलब्ध कराई। संस्थान के संचालक मण्डल के अध्यक्ष द्वारा अध्यक्षीय संबोधन दिया गया।

इस दीक्षान्त समारोह में पीएचडी की कुल 239 उपाधियां प्रदान की गई हैं। संस्थान के इतिहास में यह संख्या अब तक की सबसे बड़ी संख्या रही है। गत वर्ष संस्थान के बावनवें दीक्षान्त समारोह में कुल 208 विद्यार्थियों को पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई थी। उल्लेखनीय है कि गत पांच वर्षों से पीएचडी कार्यक्रम (पाठ्यक्रमों) में नामांकन की संख्या लगातार बढ़ी है। अर्थात् वर्ष 2014-15 में 1426 से बढ़कर वर्ष 2019-20 में यह संख्या 1942 हो गई है। वर्ष 2015 के दीक्षान्त समारोह में प्रदान की गई पीएचडी-उपाधियों की संख्या 136 रही है।

Congratulations to Awardees



Prof. Arijit Ganguly
Sushila and Kantilal Mehta
Award



Prof. Mohit Law
The Gopal Das Bhandari Memorial
Distinguished Teacher Award

उल्लेखनीय है कि गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए स्नातक के बाद सीधे पीएचडी (डॉक्टरेट) कार्यक्रम में प्रवेश लेने वाले प्रतिभावान शोध छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए सीनेट ने गतवर्ष पीएचडी के साथ अतिरिक्त मास्टर डिग्री प्रदान करने वाले प्रावधान को अनुमोदित कर दिया है बशर्ते संबंधित विद्यार्थी ने निर्धारित

शैक्षणिक अर्हताओं को पूर्ण किया हो। संस्थान के लिए यह भी हर्ष का विषय रहा कि एमटेक-पीएचडी संयुक्त उपाधि के अंतर्गत दूसरे बैच के 18 छात्रों को इस दीक्षांत समारोह में उपाधियां प्रदान की गईं। दीक्षान्त समारोह के अंतर्गत प्रदान की गई कुल उपाधियों का विवरण इस प्रकार से है।

उपाधि	विद्यार्थियों की संख्या
पीएचडी	221
एमटेक-पीचडी (संयुक्त उपाधि)	18
एम टेक	546
एमबीए	56
मास्टर ऑफ डिजाइन	10
मास्टर ऑफ साइंस (अनुसंधान द्वारा)	39
पीजीपीईएक्स-वीएलएफएम	39
एमएससी (पांच वर्षीय)	01
एमएससी (2 वर्षीय)	135
डबल मेजर	22
दोहरी उपाधि	181
एमएस-पीडी (एमएस पार्ट ऑफ ड्यूल डिग्री)	12
बी टेक	628
बी एस	100
कुल	2008

कुल मिलाकर 2008 छात्रों को इस दीक्षान्त समारोह में उपाधियां प्रदान कर सम्मानित किया गया। दोहरी एवं संयुक्त उपाधियों को मिलाकर इनकी कुल संख्या 2207 है।

संस्थान के निदेशक ने उन समस्त विद्यार्थियों को बधाई दी जिन्होंने इस दीक्षान्त समारोह के माध्यम से अपनी उपाधियां ग्रहण कीं। विद्यार्थियों की इन उपलब्धियों पर निदेशक ने सभी को शुभकामनाएं दीं साथ ही साथ विद्यार्थियों के अभिभावकों एवं माता-पिता तथा परिवार के सदस्यों को भी हार्दिक बधाई दीं जिन्होंने आईआईटी कानपुर जैसे राष्ट्रीय महत्व के शैक्षणिक संस्थान में अपने बच्चों को

अध्ययन हेतु प्रवेश दिलाने के लिए अपना सर्वोच्च न्योछावर किया।

प्रेरणा-स्वरूप निदेशक महोदय ने विद्यार्थियों से यह भी कहा कि आप असाधारण परिस्थिति में अपनी उपाधि प्राप्त कर रहे हैं। जीवन में आगे भी कई बाधाएं आएगी जिसके फलस्वरूप रोजगार के अवसरों एवं उनके पारंपरिक विकल्पों या अवसरों के सामने भी संकट खड़ा हो सकता है। निदेशक ने विद्यार्थियों का आह्वान किया कि आप निराश न हों बल्कि आशावादी बनें तथा अवसरों की तलाश में लगे रहें। आप नौकरी लेने वाले नहीं बल्कि नौकरी देने वाले बनें।



रिपोर्ट

सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2020

दिनांक 27 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2020



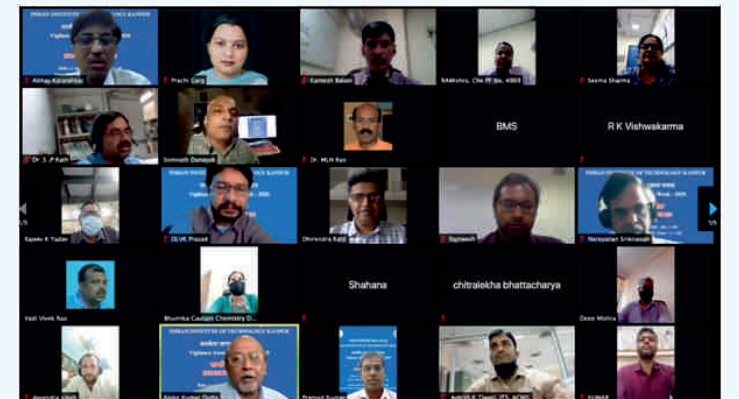
केन्द्रीय सतर्कता आयोग, नई दिल्ली के आदेशानुसार आई आई टी कानपुर में दिनांक 27 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2020 के मध्य सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष के सतर्कता जागरूकता सप्ताह का विषय सतर्क भारत, समृद्ध भारत रहा है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के शुभारंभ पर दिनांक 27 अक्टूबर 2020 (मंगलवार) को प्रातः 11 बजे निदेशक प्रोफेसर अभय करंदीकर द्वारा संस्थान के विभागाध्यक्षों, अधिष्ठाताओं, संकाय सदस्यों एवं अधिकारियों तथा कर्मचारियों को "सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा" दिलवाई गई जिसके माध्यम से उन्होंने सभी से अपना शासकीय कार्य इमानदारी पूर्वक करने का आह्वान किया। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान जनरल विजिलेंस पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में आयोग के निदेशक श्री एस पी सिंह को आमंत्रित किया गया। इस व्याख्यान के माध्यम से संस्थान कर्मियों को सरकारी खरीद एवं निविदा संबंधी नियमों की स्थापित प्रक्रियाओं से अवगत कराया गया साथ ही साथ विजिलेंस के विभिन्न पहलुओं से भी परिचित कराया गया। इस व्याख्यान का आयोजन आनलाइन हुआ जिससे संस्थान के लगभग दो सौ से अधिक संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों ने हिस्सा लिया। इसके अतिरिक्त इस सप्ताह के दौरान संस्थान के सतर्कता कार्यालय द्वारा 'सतर्क भारत समृद्ध भारत' विषय पर एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया जिसमें हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा वर्ग के तहत संस्थान के लगभग 27 विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों ने अपनी प्रविष्टियां जमा की। दोनों भाषा वर्ग में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय तथा सांत्वना स्थान पाने वाले कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों का विवरण इस प्रकार से है।

हिन्दी भाषा वर्ग
श्री मनमोहन नाथ (इमेजरिंग प्रयोगशाला) प्रथम, श्री रिषपाल मीणा (विद्युत अभियांत्रिकी) द्वितीय, श्री गुड्डू कुमार (पदार्थ विज्ञान एवं अभियांत्रिकी) तृतीय तथा श्री संजीव कुमार गुप्ता (पृथ्वी विज्ञान) सांत्वना।



अंग्रेजी भाषा वर्ग
सुश्री सूर्या मनीषा (रासायनिक अभियांत्रिकी) प्रथम, श्री अनिकेत द्विवेदी (पदार्थ विज्ञान एवं अभियांत्रिकी) द्वितीय, श्री विनय कुमार शुक्ला (अनुसंधान एवं विकास) तृतीय एवं श्रीमती पूनम सिंह (पी.के.केलकर पुस्तकालय) सांत्वना।
इस अवसर पर मुख्य सतर्कता अधिकारी प्रोफेसर आलोक दत्ता ने समस्त विजेता प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया तथा शुभकामनाएं दी।



रिपोर्ट

हिन्दी दिवस समारोह-2020

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं इसके प्रयोग की गति को बढ़ावा देने के लिए दिनांक 14 से 21 सितम्बर 2020 तक संस्थान में हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। हिन्दी सप्ताह का आयोजन (विद्यार्थी एवं कर्मचारी) दो वर्गों में किया गया। प्रथम वर्ग के तहत संस्थान के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक बढ़-चढ़ कर

हिन्दी पखवाड़े में भागीदारी की जबकि दूसरे वर्ग के अंतर्गत संस्थान के कर्मचारियों ने अप्रत्याशित रूप से अपनी भागीदारी दर्ज कराई। हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले कर्मचारियों का विवरण इस प्रकार से है।

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता (तकनीकी वर्ग)

कृष्ण कौशल बाजपेई	कनिष्ठ सहायक	क्रय एवं भण्डारण अनुभाग	प्रथम
आशीष अवस्थी	कनिष्ठ सहायक	सुरक्षा इकाई	द्वितीय
कौशलेश कुमार	परियोजना सहायक	स्वास्थ्य केन्द्र	तृतीय

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता (तकनीकी वर्ग)

विजय कुमार यादव	तकनीकी अधीक्षक	विद्युत अभियांत्रिकी	प्रथम
रंगौली अवस्थी	व.पु.सू.सा.	पी के केलकर पुस्तकालय	द्वितीय
प्रगति इंदौरिया	स.पु.सू.अ.	पी के केलकर पुस्तकालय	तृतीय

वर्तनी शोधन प्रतियोगिता (अहिन्दी भाषी)

श्री मंगेश सुखदेवे	तकनीकी अधीक्षक	पुस्तकालय	प्रथम
शत्रुघ्न धारा	कनिष्ठ अभियंता	संस्थान निर्माण विभाग	प्रथम
अमरेन्द्र मोहती	उप परि.प्रबंधक	डोरा	प्रथम
नीरजा हर्षवर्धन	उप परि.प्रबंधक	आईएमई	द्वितीय
एक के सिधूश्री	कनि. सहायक	आंतरिक अकेक्षण	द्वितीय
दिलेश्वर मोहान्कुडो	कनि. तकनीशियन	लेजर टेक्नालाजी	तृतीय

कहानी लेखन प्रतियोगिता (लिपिक वर्ग)

रामकृपाल	अटेन्डेंट	विद्युत अभि.	प्रथम
ओम प्रकाश साह	कनिष्ठ अधीक्षक	क्रय एवं भण्डारण अनुभाग	द्वितीय
गुड्डू कुमार	कनि. सहायक	पदार्थ विज्ञान एवं अभियांत्रिकी	तृतीय

कहानी लेखन प्रतियोगिता (तकनीकी वर्ग)

उपेन्द्र पारासर	तकनीकी अधीक्षक	भौतिकी	प्रथम
मनमोहन नाथ	वरि. तकनीशियन	केन्द्रीय कार्यशाला	द्वितीय
अनूप कुमार राउत	कनि. तकनीकी अधीक्षक	पदार्थ विज्ञान अग्रिम केन्द्र	तृतीय

हिन्दी पत्र-लेखन प्रतियोगिता (तकनीकी वर्ग)

प्रगति इंदौरिया	स. पु. सू.अ.	पी के केलकर पुस्तकालय	प्रथम
सौरभ बाजपेयी	तकनीकी अधीक्षक	गणित एवं साख्यिकी	द्वितीय
ज्योति वर्मा	व.पु.सू.स.	पी के केलकर पुस्तकालय	तृतीय

हिन्दी पत्र-लेखन प्रतियोगिता (लिपिक वर्ग)

अंकुर गौतम	अप्रेंटिस	पी के केलकर पुस्तकालय	प्रथम
पल्लवी गुप्ता	कनि. अधीक्षक	अनु. एवं विकास	द्वितीय
शाहना सुल्ताना	कनि. सहायक	पी के केलकर पुस्तकालय	तृतीय

अनुवाद प्रतियोगिता (लिपिक वर्ग)

अनुभव आर्य	कनि. सहायक	पी के केलकर पुस्तकालय	प्रथम
संदीप कुमार	कनि. अधीक्षक	अनु. एवं विकास	द्वितीय
रणधीर कुमार सिंह	उप परियोजना प्रबंधक	पी के केलकर पुस्तकालय	तृतीय

अनुवाद प्रतियोगिता (तकनीकी वर्ग)

प्रगति इंदौरिया	स.पु.सू.अ.	पी के केलकर पुस्तकालय	प्रथम
उपेन्द्र पाराशर	तकनीकी अधीक्षक	भौतिकी	द्वितीय
उमा शंकर	व.पु.सू.स.	पी के केलकर पुस्तकालय	तृतीय

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

सुरेश चन्द्रा	वरिष्ठ सहायक	पी के केलकर पुस्तकालय	प्रथम
रवि कृष्ण	परियोजना अभियता	अधिष्ठाता प्रशासन	द्वितीय
शिखा सौनी	सहा. परियोजना प्रबंधक	अधिष्ठाता प्रशासन	तृतीय

दिनांक 23 सितम्बर 2020 को हिन्दी दिवस समारोह का भव्य रूप में आयोजन किया गया। हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर अपने संबोधन में निदेशक प्रोफेसर अभय करंदीकर ने संस्थान के संकाय सदस्यों एवं अनुसंधानकर्ताओं से आह्वान किया कि वे हिन्दी को प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी की भाषा बनाने की दिशा में प्रयास करें ताकि हिन्दी आसानी से सभी लोगों तक पहुंच सके जिससे हिन्दी का व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग हो सके। इस अवसर पर प्रोफेसर अरुण कुमार शर्मा, प्रोफेसर अंकुश शर्मा, श्री सोमनाथ उनायक, श्री संजीव गुप्ता एवं श्री आकाश ने अपना काव्यपाठ किया। हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर प्रोफेसर इंचार्ज (राजभाषा) डॉ अर्क वर्मा ने गृह मंत्री जी के संदेश का वाचन किया जबकि कुलसचिव श्री कृष्ण कुमार तिवारी ने शिक्षा मंत्री जी के संदेश का वाचन किया। इस दौरान निदेशक द्वारा संस्थान की हिन्दी पत्रिका अंतस के ई-संस्करण का लोकार्पण भी किया गया। इसके अतिरिक्त हिन्दी पखवाड़े के तहत आयोजित प्रतियोगिताओं के समस्त विजेता

प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। हिन्दी पखवाड़ा एवं दिवस समारोह का आयोजन पूरी तरीके से आन लाइन किया गया जिसका संचालन संयुक्त कुलसचिव डॉ. वेदप्रकाश सिंह ने किया।



मनुष्य क्षमा कर सकता है, देवता नहीं कर सकता। मनुष्य हृदय से लाचार है, देवता नियम का कठोर प्रवर्तक। मनुष्य नियम से विचलित हो सकता है, पर देवता की कुटिल भृकुटि नियम की निरंतर रखवाली के लिए तनी ही रहती है। मनुष्य इसलिए बड़ा है क्योंकि वह गलती कर सकता है, और देवता इसलिए बड़ा होता है क्योंकि वह नियम का नियंता है।

-आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी-

साहित्य-यात्रा

गूगल मौसी

देखो मैं तुम्हारे लिए ये ब्रांडेड स्वेटर लाई हूँ, पत्नी ने स्नेह दर्शाते हुये पति से कहा।

अरे वाह! अच्छा है! कितने का है !

2500 का था, 2400 में लिया, ब्रांडेड है। पति के स्वभाव से परिचित पत्नी ने उत्तर दिया।

तुम से कितनी बार कहा है अकेले मत जाया करो... ठग लिया उसने तुमको... ऑनलाइन ही सस्ता मिल जाता...पत्नी की भावनाओं को दरकिनार करते हुये पति ने बड़बड़ाना प्रारम्भ किया।

कम तो करवाया है न, और कितना कम करेगा... मोटे कार्लो का है... गूगल कर के देख लो...

अरे तुम ही देख लो न अपनी बेवकूफी.... अभी पता चल जाएगी....

और अंततः गूगल मौसी ने पति पत्नी के इस झगड़े को शांत किया।

रसोई—व्यंजन विधि हो, इतिहास हो भूगोल हो या फिर विज्ञान हो ...

स्वास्थ्य हो, चिकित्सा हो, मनोरंजन हो या फिर विश्व का कोई भी

सामान हो...ज्ञान हो या

अनर्गल ज्ञान हो, गूगल

मौसी तुम महान हो...

पिछली दो—तीन

शताब्दियों में विज्ञान ने

मानव समाज में

व्यापक परिवर्तन किये

हैं। उद्योगों, कारखानों,

यातायात और शरीर

विज्ञान ने भारी प्रगति

की है। विगत

चार—पाँच दशकों में

एक कदम और आगे

बढ़कर कंप्यूटर और

मोबाइल आदि के रूप

में विज्ञान समाज के

प्रत्येक घर में

गृह—प्रवेश कर चुका है। छोटी या बड़ी कोई भी जानकारी के लिए अब

किसी को सर चढ़ाने की आवश्यकता नहीं रही। क्योंकि गूगल मौसी

आपको सब कुछ बताएगी। जी हाँ ! माँ के समान ही तो है जो बिना

थके, बिना रुके लगातार हमारी जिज्ञासाओं को शांत करती रहती है।

ऑस्कूट, फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर और अन्य सामाजिक प्रसार

माध्यमों ने मानव समाज की एक नूतन परिभाषा ही गढ़ दी है जो

वैश्विक सम्बन्धों के माध्यम से समाज के दायरे में वृद्धि तो दर्शाती है

किंतु साथ ही साथ प्रत्यक्ष समाज को एक अप्रत्यक्ष समाज (वर्चुअल

सोसाइटी) के रूप में मान्यता प्रदान करती है। सैकड़ों छवियों के मध्य

आपके मुख—मंडल को सटीक रूप से चिन्हित कर पाने में सक्षम

कृत्रिम प्रज्ञा (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) जैसी तकनीकें एवं जीवन के

विभिन्न क्षेत्र में अपनी पैठ बढ़ाती नेनो तकनीक आदि भविष्य में हमारे

समाज को उस सीमा तक परिवर्तित कर देने वाली हैं जो हमारी

कल्पना से बाहर है।

परिवर्तन के इस त्वरित दौर का अब तो प्रकृति भी साथ देती प्रतीत हो

रही है। कोरोना इसका ज्वलंत उदाहरण है। मैंने, आपने और हम सभी

ने कदाचित पहली बार देखा है कि एक लंबी अवधि तक छात्रों से रिक्त

किसी प्रशिक्षण परिसर का सन्नाटा कितना भयावह होता है। एक

निर्जन सा उद्यान जहाँ माली तो हैं किन्तु इसे सुरभित कर देने वाले

पुष्प दिखाई नहीं देते। प्रकृति क्षुब्ध सी प्रतीत हो रही है। आशा का

संचार कम हो रहा है, निराशा व्याप्त हो रही है। विद्यालय, महाविद्यालय, समस्त शिक्षण संस्थाएं लगभग एक वर्ष से ऑनलाइन चल रही हैं। विश्व भर के छात्रावासों में सन्नाटा पसरा हुआ है। आवागमन पर्यटन आदि अपने सबसे निचले स्तर पर पहुँच गए हैं, सामाजिक कार्यक्रमों की सीमायें तय कर दी गई हैं, और तो और इस संकट—काल में आप हिम्मत जुटाने हेतु अपने आराध्य, विश्व के समस्त ज्ञात अथवा अज्ञात कारणों के प्रणेता, सर्वशक्तिमान ईश्वर के मानव निर्मित द्वार पर भी जाने से वंचित कर दिये गए हैं। बस आत्ममंदिर ही शेष है, जहाँ अपना चिंतन समर्पित कर प्रेरणा ली जा सकती है।

“ऑनलाइन शिक्षण पारंपरिक शिक्षण से बेहतर है....” नामक विषय के पक्ष और विपक्ष में केंद्रीय विद्यालयों के कुछ चुनिंदा विद्यार्थियों के मध्य वाद—विवाद प्रतियोगिता का अंतिम चक्र चल रहा है। कोरोना काल है अतः प्रतियोगिता भी ऑनलाइन है। अन्य आदरणीय निर्णायकों के साथ मुझे भी इस प्रतियोगिता में एक निर्णायक की भूमिका के निर्वहन का सौभाग्य मिला हुआ है। किसी कार्यवश मुझे अपने गृह नगर आना पड़ा है, तथापि मैं आश्वस्त हूँ, क्योंकि प्रतियोगिता ऑनलाइन है। एक छात्र इसके विपक्ष में तर्क रखते हुये कहता है कि सिग्नल न मिलने पर ऑनलाइन शिक्षण प्रभावित होता

है। तर्क सार्थक

है। इस समय

दुर्बल सिग्नल्स

का मैं स्वयं भी

शिकार हूँ और

छात्रों के

हाव—भाव के

साथ साथ

उनके तर्कों को

भली भाँति

देख—सुन पाने

के लिए

प्रयासरत हूँ।

किन्तु मुझे यह

सिग्नल वाला

तर्क उतना

प्रभावी नहीं प्रतीत होता क्योंकि कोई भी तकनीक आरंभ में ही अपने

इष्टतम पर नहीं पहुँचती, यह समय के साथ परिष्कृत होती है। मैं

इन छात्रों से ऑनलाइन शिक्षण के विपक्ष में एक सर्वाधिक सशक्त

तर्क सुनना चाह रहा हूँ जो समाज की बदलती परिभाषा को व्यक्त

करता हो। अंततः एक छात्र ने इसे प्रस्तुत कर सभी निर्णायकों का मन

विजित कर ही लिया। उसने अपनी किशोर सुलभ शैली में तर्क रखा

कि अन्य छात्रों के साथ प्रत्यक्ष संपर्क में होने वाली गतिविधियों से हम

लगातार कुछ सीखते रहते थे। विभिन्न क्रियाकलापों के प्रति हमारा

भय दूर होता था और सार्वजनिक मंच पर धीरे—धीरे ही सही किन्तु

हमारा आत्मविश्वास पक्का होता था। और ऑनलाइन में हम घर पर

बांध दिये गए हैं। ये तर्क वास्तव में इस प्रतियोगिता के सर्वाधिक

प्रभावशाली तर्क थे। वास्तव में ये ऑनलाइन जिंदगी नई पीढ़ी के

शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाली

है अतः समयानुसार इसका समाधान भी अत्यंत आवश्यक है।

पहले ही हमारी जीवन शैली अत्यंत दयनीय स्थिति पर पहुँच चुकी

है। अल्प आयु में ही घुटनों की समस्या आज आम हो चली है। जब

हम घुटने का उपयोग ही नहीं करेंगे तो ये बेकार तो होंगे ही। पालथी

लगा कर बैठने की प्रक्रिया ही समाप्त हो चुकी है। महिलाएं नीचे

बैठकर भोजन पकाने के स्थान पर कुकिंग प्लेटफॉर्म पर खड़े रहना

पसंद कर रही हैं। बच्चे पास की दुकान जाने के लिए स्कूटी का

प्रयोग करते हैं। कम्प्यूटर पर लगातार बैठक वाली नौकरियों,

आधुनिक मशीनों आदि ने शारीरिक श्रम को लगभग समाप्त ही कर दिया है। रही—सही कसर सोशल मीडिया ने पूरी कर दी है जिस पर कुछ लोग तो तत्परता से सक्रिय रहते हैं, और देवी देवताओं की छवि को आगे 11 लोगों तक भेजने की अपील करते रहते हैं। कभी—कभी तो ऐसा न करने पर आपको अशुभ फल मिलने की धमकी भी दे डालते हैं। ऐसे लोग तो बिल गेट्स की बौद्धिक टीम में होने चाहिए। शारीरिक श्रम से दूरी अल्प—आयु में ही मधुमेह, रक्तचाप जैसे विविध रोगों को जन्म दे रही है। समाधान क्या है? क्या विज्ञान से ही दूरी बना लेना चाहिए? नहीं, कदापि नहीं। “परिवर्तन संसार का नियम है...।” वैज्ञानिकों के वैज्ञानिक सर्वशक्तिसंपन्न भगवान श्री कृष्ण के द्वारा कहा गया यह असाधारण वाक्य आज एकदम सटीक और वैज्ञानिक दिखाई पड़ता है। यद्यपि कुछ लोगों को तो यह नियम अब भी निरर्थक लग सकता है, विशेषकर उन्हें जो भारतीय आध्यात्म पर विचार किए बिना ही इसे मिथ्या कहानियाँ समझ लेते हैं। वहीं आस्था के वशीभूत लोगों में बिना किसी सोच—विचार के यह नियम भक्ति भाव प्रेरित कर देने वाला है तो कुछ—एक के लिए यही नियम माइकल फेराडे, न्यूटन या आइन्स्टाइन के नियमों जैसा भी हो सकता है। ये हमें बताता है कि परिवर्तन से मुक्त नहीं हुआ जा सकता, यह अवश्यभावी है। किन्तु इस परिवर्तन के साथ—साथ हमारी आगामी पीढ़ियाँ बीमार और कमजोर न हों ये हमारा अहम दायित्व है।

एक दिन मैं अपने पिताजी के समक्ष बैठा हुआ विज्ञान के चमत्कारों का वर्णन कर रहा था जिसे सुनकर वे बड़े ही प्रभावित हो रहे थे। बोले बेटा तुम्हारे दादाजी आज होते तो सुखद आश्चर्य करते कि हजारों किलोमीटर दूर एक दूसरे को देखकर वार्ता की जा सकती है। अब मैंने तकनीक का और बढ़—चढ़ कर बखान करना प्रारम्भ कर दिया। जब कुछ ज्यादा ही हो गया तो उनका संयम टूटा और वे बोले बेटा एक बात बताओ “तुम्हारे पास मोबाइल है, टीवी है, गाड़ी है, यात्राएं सहज हो चुकी हैं, अच्छे अस्पताल हैं, ये तो सब ठीक है किन्तु क्या तुम्हारे पास स्वास्थ्य है, क्या तुम्हारे पास शुद्ध जल है, क्या तुम्हारे पास शुद्ध वायु है? यदि तुम्हारे विज्ञान की यह उन्नति जीवनोपयोगी इन आधारभूत तत्वों के बलिदान पर खड़ी है तो ऐसा विज्ञान उचित नहीं है। होना यह चाहिए कि इस आधुनिक विज्ञान से उतना ही ग्रहण किया जाये जो इन आधारभूत तत्वों पर नगण्य प्रभाव रखता हो। मैं नतमस्तक था। एक नवीन सोच ने जन्म लिया। हमारे आध्यात्म में भी तो गहन विज्ञान समाया हुआ है। क्यों न इसे नए सिरे से समझने के प्रयास किए जाएँ और हमारा देश आधुनिक एवं पुरातन विज्ञान में समन्वय स्थापित कर विश्व को एक नई दिशा दे।

आज का विश्व विज्ञानमय है। इस विश्व में कदम रखने वाला एक नवजात शिशु भी आज अपने को वैज्ञानिक उपकरणों से घिरा हुआ पाता है। निःसन्देह जैसे—जैसे उसका शारीरिक विकास होता जाएगा, आधुनिक विज्ञान पर उसकी आस्था अटूट होती जाएगी। किन्तु जिस प्रकार आध्यात्म में अंधविश्वास होता है उसी प्रकार विज्ञान में भी अंधविश्वास हो सकता है। कई बार हमारे आध्यात्मिक ग्रन्थों में छिपा हुआ विज्ञान इस आधुनिक विज्ञान से श्रेष्ठतम हो सकता है। उदाहरण के लिए हमारी जीवन शैली से संबंधित कई तथ्य हमारे आध्यात्मिक ग्रन्थों में इतने सटीक हैं कि वहाँ किसी विकल्प की आवश्यकता ही नहीं। तथापि अज्ञानतावश हम इसे नकार कर उस आधुनिक विज्ञान की ओर बढ़ जाते हैं जो प्रायः अपने पूर्ण समाधान पर नहीं होता, और समय के साथ परिवर्तित होता रहता है। जैसे, हम बहुधा देखते हैं कि विपरीत प्रभावों के चलते, एक लंबी अवधि तक बाजारों में रहने के बाद कुछ जीवन रक्षक औषधियाँ अथवा उपकरण प्रतिबंधित कर दिये जाते हैं। यदि हम आगामी पीढ़ियों के उत्तम स्वास्थ्य और समृद्धि के लिए, उनको भारतीय आध्यात्म में छिपे हुये गूढ़ विज्ञान की ओर प्रेरित करना चाहते हैं तो आवश्यक है कि पहले हम स्वयं ही इसके वैज्ञानिक स्वरूप

को समझने के प्रयास करें, तभी हम युवा पीढ़ी को इस दिशा में प्रेरित कर सकेंगे।

वैज्ञानिक प्रगति के साथ—साथ यदि हमारा भविष्य ऑनलाइन जिंदगी ही है, तो इन परिस्थितियों में योग विज्ञान और आयुर्वेद का सही—सही ज्ञान हमारे लिए महत्वपूर्ण हो सकता है। आयुर्वेद के अनुसार व्यक्ति की प्रकृति पृथक—पृथक होती है तदनुसार उपचार भी पृथक—पृथक हो सकता है। आवश्यक नहीं कि जो आँवला एक व्यक्ति पर अनुकूल बैठता है वह सभी पर अनुकूल ही हो। आयुर्वेद में किसी एक व्याधि के लिए बहुत सी औषधियाँ विद्यमान हैं और व्यक्ति की प्रकृति के अनुसार कोई न कोई औषधि अवश्य काम करने वाली है। इस दिशा में विशेषज्ञों से जानकारी ली जा सकती है, किंतु प्रत्येक घर में इसके अध्ययन एवं सामान्य औषधि निर्माण के प्रति रुझान एक सुंदर पहल साबित होगी। फिर आज हमारे पास ऑनलाइन जानकारी तो है ही। किन्तु इसके लिए स्वयं परिश्रम करना होगा। उदाहरण के लिए मात्र 20 रुपये की एक छोटी सी दवा जिसे अमृत—धारा कहा जाता है, मौसमी बदलावों में होने वाले उदर रोगों की एक उत्तम औषधि है जिसकी केवल 2—3 मात्राएं ही हमें डायरिया, हैजा जैसे कष्टकारी रोगों से दूर कर देती है।

आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान कहता है कि हृदय—घात के समय व्यक्ति को खँसना चाहिए। इसके पीछे तर्क यह है कि खँसने से व्यक्ति की बाधित धमनी (ब्लॉकड आर्टरी) खुल सके और चिकित्सकों को उपचार का समय मिल सके। यद्यपि ऐसी स्थिति में शायद ही कोई खँस पाने की दशा में रहता होगा। अब अपने शास्त्रों में निहित एक अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारी पाठकों के समक्ष रखना चाहूँगा, जिसे हममें से अधिकांश लोग जानते हुये भी दूरी बनाए हुये हैं। हम सभी ने अपने बुजुर्गों को प्रतिदिन सुबह कुल्ला करते समय हाथ की दो अंगुलियों को जीभ के अंदर तक डालकर और इसी तरह अंगूठे को तालू के ऊपर अंदर तक डालकर औ—औ की आवाज के साथ औकारा लेते हुये अवश्य देखा होगा। इस प्रक्रिया में गले के अंदर स्थित कोए को स्पर्श किया जाता है जिससे वमन औकारा (वोमिटिंग सेन्सेशन) आता है। सोचिए कि यह प्रक्रिया हमारी जीवन—शैली में आधे से एक मिनट तक प्रतिदिन की जाती थी। अब क्या धमनियों में अवरोध शेष रहेगा। कफ को बाहर करना एवं आंतरिक व्यायाम इस प्रक्रिया के अन्य लाभ हैं।

तो क्यों न आधुनिक विज्ञान के साथ—साथ योग एवं आयुर्वेद को संक्षिप्त रूप में विद्यालयीन शिक्षा का एक भाग बनाया जाये ताकि छात्रों को शारीरिक लाभ के साथ—साथ उनमें इसके प्रति अभिरुचि उत्पन्न हो। भौतिकी और रसायन के प्रयोगों के साथ साथ क्यों न उनको घरेलू आयुर्वेदिक निर्माण पद्धतियाँ भी सिखाई जायें। कोरोना काल में हमें स्वास्थ्य तकनीशियन्स की कमी देखने को मिली। इससे शिक्षा ग्रहण करते हुये क्यों न इंजेक्शन, ड्रिप चढ़ाने या यूरेनरी ब्लाडर लगाने जैसे साधारण कार्यों को छात्रों को विद्यालय स्तर पर ही सिखा दिया जाये। आधुनिक युग में हम सभी को इससे दो—चार होना पड़ सकता है। तब ये जानकारियाँ घर में स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए अत्यंत उपयोगी हो सकती हैं। तो आइये आधुनिक विज्ञान की श्रेष्ठतम उपलब्धियों के साथ—साथ हम सब मिलकर अपने पुरातन विज्ञान को नए सिरे से जागृत करने की कोशिश करें और ऑनलाइन जिंदगी का उपयोग अपने आराध्य देवों की छवियों को 11 अन्य लोगों तक प्रेषित करने के स्थान पर रचनात्मक जानकारियाँ भेजने में करें।

सोमनाथ डनायक, पदार्थ विज्ञान कार्यक्रम



जिंदगी ऑनलाइन

सर्दी का समय होते हुए भी अनमोल आज सुबह सुबह ही नहा-धो कर पूजन सामग्री के साथ जल्द से जल्द थोड़ी ही दूर पर स्थित मंदिर में सुबह की आरती में शामिल होने के लिए भागा। वो आज के दिन की शुरुआत ईश्वर के आशीर्वाद के साथ करना चाहता था क्योंकि आज उसका जन्मदिन है। अनमोल अपने घर से मीलों दूर एक शहर में अपनी आजीविका और बेहतर भविष्य के लिए संघर्षरत है और आज अपने जन्मदिन पर सभी प्रियजनों को याद कर रहा है। पूजन और ईश्वर के आशीर्वाद के बाद मंदिर की सीढ़ियों से उतरते ही अनमोल ने अपना वॉट्सएप खोला, पूरा वॉट्सएप जन्मदिन की शुभकामनायों के संदेशों से भरा पड़ा था। संदेशों को देख कर उसकी आँखों में चमक तो आयी पर अगले ही पल निराशा ने उसे घेर लिया क्योंकि इतने सारे बंधु-बंधव, मित्रगण होते हुए भी वो आज के दिन अकेला ही खड़ा था। सहसा अनमोल की दृष्टि, सीढ़ियों से लगे हुए एक चबूतरे पर बैठे चार वृद्धजनों पर पड़ी। वे चारों कुल्हड़ की चाय की चुस्कियों से ज्यादा आनंद शायद उस समय का ले रहे थे जिसमें वो थे। चारों बुजुर्गों के चारों ओर रखे हुए चाय के कुल्हड़, जो आधे-आधे चाय से भरे हुए थे, चारों के बगल में रखे ऐसे लग रहे थे मानो उन चारों की बातें मुहँ फँलाये बड़े चाव से सुन रहे हो। अनमोल अपने मन में ऐसे दृश्य की परिकल्पना कर के गदगद हुआ फिर वो आगे बढ़ा। अनमोल अपने जूते पहनने के लिए झुका ही था कि एक तेज आवाज ने उसका ध्यान उस ओर आकर्षित किया – “अरे आनंद यार पकड़, कैच है कैच”।

अनमोल ने उधर देखा तो थोड़ी दूरी पर स्कूल के बच्चे क्रिकेट मैच खेल रहे थे और आवाज वहीं से आ रही थी। एक तरफ चाय पीते कुछ बुजुर्ग और दूसरी तरफ क्रिकेट खेलते हुए बच्चे, इन दृश्यों ने अनमोल को अपने बचपन के उस पल की याद दिला दी जो उसके दिल के बहुत करीब था और वो उस याद में ऐसा खोया मानो समय कुछ पलों के लिए ठहर सा गया हो – “अब अनमोल की टीम को मैच जीतने के लिए आखिरी बॉल पर चार रनों की आवश्यकता है और बल्लेबाजी पर है आखिरी बल्लेबाज आनंद।” ये समय था जब अनमोल स्कूल में था और अपने स्कूल कि क्रिकेट टीम का प्रतिनिधित्व कप्तान के रूप में करते हुए एक क्रिकेट मैच प्रतियोगिता का फाइनल मैच खेल रहा था। अगर ये मैच उसकी टीम जीती तो उसके स्कूल की टीम, उसके प्रतिनिधित्व में, प्रान्तस्तरीय विजेता कहलाएगी –

“मैच जीतने का महत्व अनमोल और आनंद दोनों अच्छी तरह जानते थे कि जीत उन्हें क्या दिलवाएगी पर ये अंतिम विकेट भी था तो संभल के खेलना भी था। अनमोल, आनंद के पास गया और उसके कान में कुछ कहा, फिर दोनों मुस्कुराए और आनंद अगली बॉल खेलने को तैयार। आनंद को याद था कि आज उसके जिगरी दोस्त अनमोल का जन्मदिन भी है और वह उससे यह जीत तोहफे में देना चाहता था इसीलिए आनंद ने थोड़ी देर के लिए आंखे बंद की, ईश्वर से प्रार्थना की और उसके बारे में सोचा जो अनमोल ने उसके कान में कहा था। आनंद अंतिम बॉल के लिए तैयार हुआ, दूसरे छोर से बॉलर ने दौड़ना प्रारंभ किया, आनंद ने बैट को और नीचे से पकड़ा ताकि हाथों की पूरी ताकत लगा सके। बॉलर बॉल फेंकने के लिए उछला, आनंद की आंखे चील की तरह एकदम बॉल के ऊपर, बॉल आधे पिच से टेप्या खा कर आनंद के सीने तक जैसे



ही आयी, आनंद पूरी ताकत से बैट घुमाते हुए जोर से चिल्लाया – “जय बजरंगबली, तोड़ दुश्मन कि नली !!” यही वो मन्त्र था जो अनमोल ने आनंद के कान में फूँका था। बॉल सीधा सीमा रेखा से बाहर, ये चौके की जगह छक्का था और अनमोल की टीम ने प्रतियोगिता जीत ली, इसका नायक रहा आनंद जिसने अपने सबसे अच्छे दोस्त को आज जन्मदिन का तोहफा दे ही दिया था। दोनों मित्र एक-दूसरे की तरफ उल्लास के साथ दौड़ पड़े और आँखों में प्रसन्नता के आँसू लिए हुए एक दूसरे से लिपट गये, पीछे से टीम के सारे खिलाड़ी एक-एक करके उन दोनों से लिपटते चले गये।”

इस विजय ने पूरे प्रान्त में अनमोल और आनंद के खेल के साथ-साथ उनकी मित्रता को बहुचर्चित किया। ये पल उन दोनों के जीवन का सबसे यादगार पल था पर उससे याद किये हुए काफी समय व्यतीत हो चुका था।

तभी अचानक से अनमोल के फोन की घंटी बजी और उस घंटी कि आवाज ने, बचपन के यादों के ब्रह्मांड की कल्पनाशीलता में तैरते हुए अनमोल के मस्तिष्क को पुनः वास्तविक धरातल पर ले आयी। कुछ पल अनमोल को अपने आप को पुनः स्थापित करने में लग गये, परन्तु उसकी आँखों में यादों के आँसू अवश्य थे। उसने मोबाइल को देखा तो खुशी के उन आँसूओं में बढ़ोत्तरी हो गयी क्योंकि मोबाइल पर उसके परम मित्र आनंद की वीडियो कॉल आ रही थी। अनमोल ने कॉल को रिसेव किया और दोनों मित्रों ने एक दूसरे को जैसे ही देखा, आनंद ने तुरंत ही अनमोल को जन्मदिन कि शुभकामनाएं दी क्योंकि वो देरी से फोन कर रहा था परन्तु अनमोल तो बचपन की उन यादों के आनंद में था इसलिए आनंद को देखते ही उसके चेहरे कि चमक और आँसूओं की रपतार दोनों ही बढ़ गये। उसके आँसूओं को देख आनंद ने अनमोल से इसका कारण पूछा तो अनमोल ने कॉल पर थोड़ी तेज आवाज में सिर्फ इतना कहा – “जय बजरंगबली, तोड़ दुश्मन कि नली !!” और अपने मोबाइल के कैमरे को घुमाते हुए उसने आनंद को उस



क्रिकेट मैच को वीडियो कॉल पर दिखाया जो थोड़ी दूर पर ही बच्चों द्वारा खेला जा रहा था। वापस जैसे ही अनमोल ने कैमरे को घुमा कर आनंद को देखा तो दोनों के चेहरे पर खुशी के विस्मयभाव थे और एकाएक आनंद की आँखों में भी वही खुशी के आँसू छलक आए।

आनंद अब अपने मित्र के मन की वेदना को भलीभांति समझ चुका था कि टेक्नोलॉजी व्यक्तियों के बीच की दूरियाँ तो कम कर सकता है पर मन से मन मिलने के लिए आज भी व्यक्तिगत स्पर्श ही सर्वोत्तम है। किंचित मात्र भी देर न करते हुए आनंद ने ऐसी बात कही जिसने मित्रता को और भी मजबूत बना दिया— “दोस्त, आज शाम मैं तुम्हारा जन्मदिन वैसे ही धूमधाम से मनाऊँगा जैसे हम बचपन में मनाया करते थे। तुम आज अपना काम जल्दी खत्म कर लेना, मैं निकलता हूँ यहाँ से, पहुँचकर कर कॉल करता हूँ। जल्दी ही मिलते हैं दोस्त” – आनंद ने ऐसा कह कर फोन रख दिया। अपने मित्र के द्वारा ऐसा अप्रत्याशित उपहार पा कर अनमोल गदगद हो उठा क्योंकि वह भी हमेशा से ऐसा ही चाह रहा था। उसने भी वंहा से निकलने का सोचा और अपने जूते पहन लिए परन्तु जैसे ही वो चलने के लिए हुआ पीछे से किसी ने उसे आवाज लगायी – “ओ लाला, जरा इन्हा तो आओ !! ये आवाज उन चारों में से एक बुजुर्ग की थी। अनमोल उनके पास गया, सभी को प्रणाम किया और उनसे बुलाने का कारण पूछा। “लाला हमरे फोन से हम चारन की एक फोटो खींच देहो का, काहे कि हमका फोटो खीचब

नही आत है, तुम अगर खींच देओ तो अच्छा रही। हम अपने नाती—पोतन का याहे फोटो दिखयबे की ई हमरे सब यार दोस्त आन्ही।” – बुलाने वाले बुजुर्ग ने उम्मीद भरी दृष्टि से कहा। अरे क्यूँ नही, ये तो मेरा सौभाग्य रहेगा— ऐसा कह कर अनमोल ने उनकी एक प्यारी सी यादगार फोटो खींचकर उनकी सहायता की और बदले में ढेर सारा आशीष ले कर वंहा से जल्दी जल्दी निकलने लगा क्योंकि अब उसे अपने जिगरी मित्र का इंतजार जो था। चलते चलते अनमोल के मन और मस्तिष्क में सिर्फ एक ही बात थी कि—

“!! जिंदगी में ऑनलाइन तो जरूरी है पर ऑनलाइन ही जिंदगी बन जाये ये जरूरी नही !!”

आशीष शर्मा
पदार्थ विज्ञान पाठ्यक्रम



पूर्णतः निःस्वार्थ रहो, स्थिर रहो और काम करो। एक बात और है सबके सेवक बनो और दूसरों पर शासन करने का तनिक भी यत्न न करो, क्योंकि इससे ईर्ष्या उत्पन्न होगी और इससे हर चीज बर्बाद हो जायगी। आगे बढ़ो, सोचो तुमने बहुत अच्छा काम किया है। अपने भीतर से ही सहायता माँगो अन्य से सहायता के लिए प्रतीक्षा मत करो। मेरे बच्चे आत्मविश्वास रखो, सच्चे और सहनशील बनो।

—स्वामी विवेकानंद—



एक वायरस कोविड-19 या फिर कह सकते हैं
कोरोना
देश विदेश में जाने अभी और कितनों को है
मरना.....

इससे बचने के रास्ते दिखा रही है सरकार,
उपयोग करें सैनेटाइजर और फेस मास्क,
सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें, घर में रहें,
सुरक्षित रहें.....
नहीं तो देर न लगेगी देश की दशा स्पेन, रोम
और इटली होने में
इसीलिए तो कहते हैं हैंड शेक छोड़, नमस्ते
और अभिनंदन की आदत अपनाओ
दूसरों को प्रेरित करो और सपरिवार टीका
लगवाओ
विश्व के सभी देशों में भारत की अनूठी
संस्कृति फैलाई जाए
देश क्या विदेशों में भी नमस्कार की प्रथा
अपनाई जाए
कोरोना से आजादी का तो अभी किसी को
पता नहीं
लेकिन उन सभी कोविड योद्धाओं को शत शत
नमन
जो देश के लिए अपने घर परिवार से दूर
होकर भी
देश की सेवा खुशी से करे जा रहे हैं समझ
कर अपने करम.....

— रूपाली बोस



मेरी बहन है सबसे प्यारी,
लगती मुझको बहुत न्यारी,
दो हजार पंद्रह को वो आई है,
मुझे सबसे अच्छी दोस्त मिली है।
कभी कभी हम लड़ते हैं,
कभी कभी हम झगड़ते हैं,
माँ आकार सुलझा देती है,
फिर हम प्यार से रहते हैं।
खाने में वो करती है देर,
फिर माँ उसको डांटती है ढेर,
फिर भी है मेरी बहन प्यारी,
बहुत सारा प्यार उसको मैं करती।
मेरी सबसे अच्छी दोस्त,
मेरी सबसे प्यारी दोस्त।

अर्चिषा भट्टाचार्या

कैम्पस स्कूल

कक्षा -3

‘धन्यवाद-ऑनलाइन जिंदगी’

आज से कुछ वर्ष पूर्व हमारा बचपन इस “ऑनलाइन” शब्द से पूर्णतः अनजान बाबा- नाना की गोद में अटखेलियां खाता जिंदगी की किताब के पन्ने पलटते हुए गुजर गया और हम आ गए ऑफलाइन मोड के कंफर्ट जोन से निकल कर आ खड़े हुए जीवन युद्ध के रण में पूरी तरह से ऑनलाइन।

खैर आज यह पूर्णतः जाना पहचाना बल्कि मात्र जाना पहचाना कहना न्यायोचित नहीं होगा हमारी जीवनशैली की आवश्यकता बन गया है। आज आधुनिक परिवेश में माता-पिता अपने दूर बसे बच्चों व नाती पोतों को इसी ऑनलाइन सुविधा के माध्यम से देख पाते हैं उनके वह भोला चेहरा, लड़खड़ा के चलना अपने अत्यंत अनमोल पलों से वंचित नहीं होने देता यह “ऑनलाइन”।

हमारी व्यस्त जिंदगी को आसान बनाती है यह ऑनलाइन सुविधा अब जहाँ हम अत्यंत व्यस्त होने के कारण अपने किसी बहुत प्रिय व्यक्ति के जीवन के महत्वपूर्ण क्षणों में साथ नहीं हो पाते तो यह ऑनलाइन हमें उन तक कुछ भी उपहार पहुंचाने में मददगार होता है। दूर देश में बैठी बहन के लिए भाई का प्यार उपहार का रूप ले सहजता से पहुंच जाता है। यह तो हुई भावनात्मक बातें, पर इतना ही नहीं तकनीकी रूप में रेलवे आरक्षण हो या बिलों का भुगतान या फिर किसी भी प्रान्त में बैठे व्यक्ति का सुदूर प्रान्त ही क्या अन्य देश में भी रोजगार के लिए आवेदन करना कितना सहज, आसान बना दिया है इसने। कितनी आसानी से दूर देश के व्यक्ति भी अपने ज्ञान व शोध को हम सबसे साझा कर पाते हैं।

बिलों के भुगतान, रेलवे आरक्षण की लंबी कतारों से हमें बचा कर सुरक्षित अपने ही कमरे से 30 सेकंड के छोटे से समय में सुरक्षित व समय के अपव्यय से बच कर अपना कार्य संपादित कर पा रहे हैं।

विगत कुछ माह से हम जिस भयंकर महामारी की मार सह रहे हैं उसमें तोयह वरदान ही साबित हुआ है। मूलभूत आवश्यकतायें भी इसके माध्यम से सहजता व सुरक्षित रूप से पूर्ण हो पा रही हैं।

हमारे देश का भविष्य प्यारे बच्चे अबाधित रूप से कक्षाओं का लाभ ले पा रहें हैं। हम भी एक दूसरे से इसी माध्यम से मिलकर अपनी ऊर्जा व जिजीविषा का संरक्षण कर पा रहे हैं। अंततः यही कहूंगी कि धन्यवाद—ऑनलाइन जिंदगी।।

लेखक

दिव्या त्रिपाठी

टाइप—३ आई आई टी कानपुर



स्कूल दोस्तों का वर्चुअल गेट-टूगेदर



जिंदादिली का नाम है जीवन, परिस्थितियाँ हो चाहे जैसी।

परेशान नहीं होना है, बस हमें वर्तमान की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए अपने को नई परिस्थितियों में ढालना है।

प्रवीण ने फोन पर मोहन को याद दिलाया कि मई में स्कूल साथियों का गेट-टूगेदर होना था पर कोरोना के चलते नहीं हो पाया था। हाँ, ठीक कह रहे हो पर अभी भी नहीं कर सकते हैं। ... बहुत दिन हो गए मिले हुए, मोहन ने कहा।

अभी तो दो-तीन महीने और इंतजार करना पड़ेगा, प्रवीण थोड़ा हताश होकर बोला।

अच्छा, एक काम करते हैं। ...मेरे दिमाग में एक आईडिया आया, क्यों न इस बार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग करके वर्चुअल गेट-टूगेदर करके देखा जाए...मोहन ने सुझाव दिया। पर इतने लोग जुड़ेंगे कैसे? प्रवीण ने पूछा।

हम लोग नये एप जूम या गूगल-मीट पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग करेंगे। इन पर बहुत से लोगों की वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग एक साथ कर सकते हैं और इस तरह इन पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में सब लोग एक साथ जुड़ जाएंगे, मोहन ने कहा।

आईडिया अच्छा है, इसमें सारे लोग जुड़ जायेंगे? प्रवीण एकदम आशान्वित होकर बोला।

हाँ, इसमें सारे लोग जुड़ जायेंगे और यह वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की तरह होता है। इसमें एक-दूसरे को देखने के अलावा दूर-दूर दूसरी जगहों पर रहने वालों से भी मिल सकेंगे जो फिजिकल गेट-टूगेदर में नहीं आ सकते हैं, मोहन ने कहा।

ठीक है, तो हम लोग इस इतवार को शाम को 6:30 बजे वर्चुअल गेट-टूगेदर जूम पर रखते हैं, मोहन ने आगे कहा।

बिल्कुल ठीक है। तुम ही जूम सेट-अप कर देना, प्रवीण बोला।

डन!... ठीक है मैं सेट-अप कर दूंगा और सब दोस्तों को आई-डी के साथ इनविटेशन व्हाट्सएप पर भेज दूंगा, मोहन तैयार हो गया। मिलते हैं फिर जूम पर...और प्रवीण ने फोन काट दिया।

इतवार शाम को 6:30 बजे स्कूल दोस्तों का वर्चुअल गेट-टूगेदर जूम पर

हैलो... हैलो... हाय कहाँ थे! ... बहुत दिनों बाद देख रहे हैं एक दूसरे को! अबे कोरोना ने तो ऐसी की तैसी कर दी, वहीं घर वालों की शक्ल देख-देख कर चट गये... सबका वही हाल है...

मोहन- अच्छा दोस्तों अब फॉर्मली शुरू किया जाए, काफी लोग आ गए हैं मतलब जुड़ गए हैं... प्रवीण... (तालियां... तालियां... तालियां...)

प्रवीण- हैलो फ्रेंड्स! आप सभी का जूम पर इस वर्चुअल गेट-टूगेदर में स्वागत है। मई में जो गेट-टूगेदर कोरोना की वजह से नहीं हो पाया था वो अब हो रहा है। हालांकि यह वर्चुअल जरूर है पर बहुत से मायनों में फिजिकल से बेहतर है। कहीं आना-जाना नहीं पड़ा। इसमें दूर-दूर से अलग-अलग जगहों से भी लोग जुड़ सके जैसे अनिलेन्द्र विशाखापत्तनम से, निर्मल पूना से, प्रशांत दिल्ली से, देवेंदु नई-दिल्ली से, विवेक आगरा से और बाकी बहुत सारे लोग लखनऊ कानपुर से। बस इसमें कुछ खाने-पीने को नहीं मिलेगा।

हा हा हा हा हा हा हा

प्रवीण- वेलकम सुनील

सुनील- हाँ, यार थोड़ी देर हो गयी, मरीज देखने जाना पड़ा।

गोपाल- बिल्कुल, वो सबसे पहले, सबसे जरूरी है।

सुनील- यहाँ तो निर्मल वगैरह दूसरी जगहों के भी लोग दिख रहे हैं।

निर्मल- हाँ, वैसे तो मैं पूना में रहता हूँ पर आजकल अमेरिका में न्यू जर्सी में आया हुआ हूँ। पूना से ही फिजिकल गेट-टूगेदर में आना नामुमकिन था, यहाँ से तो सोच भी नहीं सकता। मैं जूम की वजह से सबको देख पा रहा हूँ।

मोहन- जूम की वजह से हम वो सब भी देख सकते हैं जो वैसे न देख पायें

आशुतोष- बेटा सब रिकॉर्ड होता है जूम पर...

मोहन- होता है तो होने दो...

प्रशान्त- यही रिप्रट होनी चाहिये। किसी ने सही फरमाया है...

उम्र का बढ़ना तो दस्तूरे जहाँ है...

उम्र का बढ़ना तो दस्तूरे जहाँ है!

पर महसूस न करो... तो बढ़ती कहाँ है!!

चन्द्र मोहन- बिल्कुल सही। उम्र की ऐसी की तैसी... किसी ने सही कहा है-

जीने का जज्बा कायम हो तो,

उम्र की गिनती फिर फिजूल है।

अपने शौक को जिंदा रखो,

जीने का बस यही उसूल है।।

जिंदादिली का नाम है जीवन,

परिस्थितियाँ हों चाहे जैसी।

उम्र की ऐसी की तैसी।।

मोहन- बहुत सही। वाकई उम्र की ऐसी की तैसी...

तरुण- पहले सोचते थे कि कोई मिलने क्यों नहीं आया और अब कोरोना के बाद सोचते हैं कि कहीं कोई मिलने ना आ जाये... कोरोना ने सब बदल दिया, सब बेहाल कर दिया।

मोहन- परेशान नहीं होना है, बस हमें वर्तमान की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए अपने को नई परिस्थितियों में ढालना है। ... तुमने देखा ही कि जब कोरोना की वजह से वास्तविक गेट-टूगेदर नहीं हो पा रहा था तो हम लोगों ने कैसे वास्तविक गेट-टूगेदर की बजाय जूम पर वर्चुअल गेट-टूगेदर कर लिया। यह एक तरह से अच्छा ही रहा क्योंकि इसमें दूर-दूर से लोग जुड़ सके। कहीं किसी को आना-जाना नहीं पड़ा। ...अब जब कोरोना की वजह से ऑफिस नहीं जा पा रहे हैं तो सारा काम श्वर्क फ्रॉम होमश होने लगा, यहाँ तक कि मीटिंग वगैरह भी ऑनलाइन हो जाती हैं। ऑफिस नहीं जाना पड़ता है। परेशान नहीं होना है, बस अपने को नई परिस्थितियों में ढालना है। सबको अपना ध्यान रखना है और नियमों का पालन करना है। मास्क, सोशल डिस्टेंसिंग और हाथ धोते रहना है।

प्रवीण- विवेक, आगरा में कोरोना के क्या हाल हैं?

विवेक- बीच में बहुत हो गया था, अब फिर भी ठीक है।

ओम प्रकाश- यहाँ लखनऊ में भी बहुत फैल गया था पर गनीमत रही कि गांवों में नहीं फैला।

अनिल, श्याम- यहाँ कानपुर में भी बहुत फैल गया था, अब थोड़ा कंट्रोल है।

राजकुमार, जितेंद्र (एक साथ)- बहुत सावधानी रखने की जरूरत है।

गणेश, अनूप- खासकर कोरोना की दूसरी लहर से।

विमल- बिल्कुल, बहुत जरूरी है।

शशांक- एकदम सही कह रहे हो।

अनिलेन्द्र- शशांक तो डॉक्टर है, एकदम सही कह रहा है, खासकर जब तक कोई वैक्सीन नहीं आ जाती।

देवेंदु, कुलदीप (एकसाथ)- हाँ, तब तक कोई ढिलाई नहीं करनी।

सुरेश- उसके बाद ही कुछ सोच सकते हैं।

सुधीर- बिल्कुल।

राकेश- तभी उसके बाद ही शायद हम लोग वास्तविक गेट-टूगेदर में मिल पायें।

मोहन- हाँ। ...हम लोगों का जूम गेट-टूगेदर का ट्रायल अच्छा रहा। दोस्तों अब जूम का टाइम खत्म हो रहा है...

प्रवीण- जूम का नहीं, जूम का फ्री वाला टाइम खत्म हो रहा है... मोहन को तो हर चीज सिर्फ फ्री वाली करनी होती है। ... अभी बच्चे आ रहे थे तो मोहन ने उनके लिए ऑप्टिक-फाइबर वाले नेट का एक महीने का ट्रायल वाला पैक लेकर 29 दिनों तक खूब रगड़ा और 30वें दिन बेकार कहकर हटवा दिया।

...हा हा हा हा हा हा हा

अच्छा तो अब चलते हैं, फिर मिलेंगे...

बाय ...बाय ...बाय ...बाय ...बाय

...बाय ...बाय ...बाय ...बाय.....

अजय मोहन जैन

बीटी/76



इम्युनिटी बूस्टर लड्डू, (सिठौरा)

भागती दौडती जिंदगी पलक झपकते ऐसे रुक जाएगी, इसकी कल्पना शायद ही किसी ने कभी की थी, कोरोना महामारी के भारत में प्रवेश से इतनी चिंता नहीं हुई, जितनी की 22 मार्च 2020 को माननीय प्रधानमंत्री जी के संबोधन से हो गई थी, उनका संबोधन पूरा खत्म भी नहीं हुआ था की मेरे घर में एक लंबी चौड़ी लिस्ट तैयार हो चुकी थी, रात के 8:15 बज रहे थे और हम पति पत्नी अपनी अपनी लिस्ट लिए आईआईटी की ही दुकानों में, लंबी कतारों में कई सारी चिंता और बड़े बड़े बैगों को लिए अपनी पारी का इंतजार कर रहे थे।

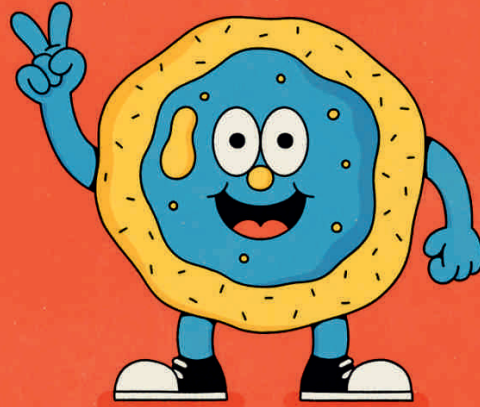
काफी इंतजार के बाद ये देखने को मिला कि कई लोग आटा, दाल के कई पैकेट जल्दी जल्दी भरे जा रहे थे, मानो जैसे धरती से सारा राशन सब्जी खत्म होने वाला हो या कोरोना कोई दानव हो जो की सारा राशन सब्जी खत्म कर जाएगा, हमने भी इसी सोच के साथ तीन चार महीने का सामान राशन और एक महीने की सब्जी घर ले आए, कोरोना के डर की वजह से सब्जियों को इतनी बार धुला था की छिलके भी आधे पतले हो गए थे, कुछ ही दिनों में नवरात्र का पर्व आया और सीमित सामानों के साथ हमने ये पर्व मनाया, हाउस हेल्प, अखबार, कुरियर, बाहर जाना सब बंद था, सारा काम खुद करने में यूँ लगता था कि कोई पहाड़ टूट पड़ा हो, कभी कभी सोचते कि जैसे सारे लोग वर्क फ्रॉम होम कर रहे हैं, काश वैसे ही हमारे हाउस हेल्प भी अपने घर से हमारा काम कर पाती तो कितना सरल होता।

बहरहाल, ये सब रोजमर्रा में शामिल हो चुका था न्यूज चैनल में कोरोना के आंकड़े दिन भर दिन कई गुना बढ़ते ही जा रहे थे, रोज इसी आस में टीवी देखते कि इसकी वैक्सीन कब आएगी, लॉकडाउन एक खत्म होते ही दूसरा भी शुरू हो जाता, अभी तक हमने ढेर सारा राशन, सब्जी, दवाइयों, कैश पैसे निकालकर घर पे ही जमा कर चूके थे कि कहीं ऐसा न हो कि जब पैसे की जरूरत पड़े तब एटीएम खाली मिले, मास्क और सैनिटाइजर हमारे रोजमर्रा के महत्वपूर्ण साथी बन चूके थे, कानपुर में भी धीरे धीरे कोरोना ने अपनी जड़ें फैलायी और आईआईटी में भी नए आंकड़े आने शुरू हुए।

हल्की फुल्की सर्दी जुकाम खांसी में भी मन घबराता कि कहीं हमें कोरोना ने तो नहीं धर लिया, देसी इलाज अपने चरम पर था जैसे गर्म पानी, काढ़ा, परिजनों द्वारा भेजा हुआ देसी लड्डू सिठौरा (सोठ और मेवा का पारंपरिक लड्डू) जो कि प्रायः सर्दियों में खाया जाता है, पर हमने इसे पूरे साल खाया, सच में इससे ज्यादा इम्युनिटी बूस्टर लड्डू का हमने अनुभव पहले नहीं किया था।

लॉकडाउन की वजह से अपने परिजनों से न मिल पाने का अफसोस भी बहुत था, रोज के आंकड़े देखकर डर ही लगा रहता था कि कहीं कोई रिश्तेदार या करीबी कोरोना की चपेट में न आ जाये, मिल तो सकते नहीं थे किसी से उस समय, तो वीडियो कॉल से ही काम चला लेते थे, अब मुलाकातें वीडियो कॉल में बदल चुकी थी, उसी दौरान मायके और ससुराल में नए घर की गृह प्रवेश पूजा भी संपन्न हुई, पर चाहकर भी हम लोग वहाँ पहुँच नहीं पाए क्योंकि भाई सरकार द्वारा बनाए नियम पर भी तो चलना था, काफी कुछ निराशाजनक भी रहा।

सरकार द्वारा लिया गया जो लॉकडाउन का निर्णय जरूरी तो था पर स्थिति ऐसी हो गई कि काफी लोगों को तकलीफ भी उठानी पड़ गयी, हर रोज इंतजार रहता टीवी में वैक्सीन की कोई खबर तो आए पर टीवी में सिर्फ देश विदेश से लोगों के कोरोना से मरने की खबरें ही आती थी, बाकी जो कोरोना से नहीं प्रभावित हुआ उन्हें नौकरी जाने का अवसाद, भूख से मरने की स्थिति से कुछ लोगों ने आत्महत्या तक कर ली, कोरोना ने काफी लोगों की जिंदगी को प्रभावित किया था कुछ लोगों पर प्रकृति ने कहर भी ढाया माहौल ऐसा था कि परिजन एक ही बात बोलते थे



‘घर आ जा परदेशी तेरा देस बुलाए रे’

पर हम यही बोलते थे कि आई आई टी में नियम काफी ज्यादा सख्त हैं, यहाँ पे कहीं बाहर जाने की अनुमति सिर्फ और सिर्फ इमरजेंसी में ही मिलेगी और लौट आने के बाद अगर 7 दिन के ऊपर का समय हुआ तो 14 दिन का होम क्वारंटीन कर दिया जाएगा।

आईआईटी कैंपस में सब कुछ ऑनलाइन चल रहा था, सारा सामान दूध सब्जी तब घर बैठे ही मिल जा रहा था, और तो और रेस्टोरेंट बंद होने की स्थिति में अगर किसी कारण घर में खाना नहीं बना, तो भाई भला हो कैंपस हाट का जिसने आईआईटी के कई घर के कई किचन को जोड़ा था, जिसमें एक से बढ़कर एक व्यंजन घर पर बैठे उचित कीमतों पर कोरोना निर्देशों को ध्यान में रखकर घर पर ही उपलब्ध कराए जाते थे, जिससे बाहर जाए बिना पसंदीदा साफ सुथरा घरेलू खाना घर पर ही खाया जा सकता था, जिसमें कई लोगों ने अपने खाना बनाने के शौक को एक कमाई का जरिया भी बनाया, जहाँ कई लोग आपदा की

कोरोना और दादीमाँ

स्थिति में अपनी रोजीरोटी से हाँथ धो बैठे थे, वही कैंपस हॉट जैसे संस्था ने इस आपदा को अवसर में बदला। दिन बीते एक से दो और दो से तीन लॉकडाउन में जिंदगी की कीमत अच्छे से समझ आ चुकी थी, ये तो पता लग ही गया था कि इंसान ने प्रकृति से कुछ ज्यादा ही खिलवाड़ किया होगा जिसका दंड हमें इस रूप में मिल रहा है, जैसे एक आखिरी वार्निंग मिली हो कि अब नहीं सुधरे तो फिर न जाने आगे क्या होगा।

इस आपदा की स्थिति में बुरा तो हुआ पर काफी कुछ अच्छा भी हुआ, जैसे सुबह 9:00 बजे सबका मिलजुलकर रामायण देखना, परिवार के साथ समय बिताना, मिलजुल कर घर का काम करना, नई नई रेसिपी बनाना सीखना, नए नए शौक अपनाना, अपनों के लिए समय निकालना इत्यादि, विश्व भर में जहाँ हाहाकार मचा हुआ था वहाँ अभिनेता सोनू सूद जैसे भी कुछ लोग थे जिन्होंने समाज की परवाह की जरूरतमंद लोगों को अपने घर पहुंचाया। जरूरत का सामान पहुंचाया, पढ़ाई में आ रही दिक्कतों को दूर कर विद्यार्थियों की मदद भी की, उनके इस कदम की वजह से हर तरफ उनकी तारीफें ही हो रही थी, रातों रात सोनू सूद प्रवासी मजदूरों का भगवान बन चुका था। कुछ लोग उन्हें लॉकडाउन का हीरो नाम से भी बुलवाने लगे, इस वैश्विक महामारी से लड़ने के लिए सभी लोग ने एकजुट होकर सरकार की भी मदद की, कोरोनावायरस जैसी आपदा से लड़ने के लिए एक बढ़िया सुनियोजित तैयारी मुश्किल तो थी पर असंभव नहीं थी, आखिरकार 2020 बीता पर काफी कुछ सीखा गया। नया साल आते ही कोरोना की वैक्सीन भी आ गई, देश भर में ट्रायल चल रहे हैं वैक्सीन आने की खुशी किसी उत्सव से कम नहीं है, जिसप्रकार लॉकडाउन में हमने बिना दिवाली के दिए जलाये, शंख बजाए, घंटियां बजाई उससे काफी हिम्मत और सकारात्मकता भी आई, उस समय उसका महत्व तो समझ में नहीं आया था पर अब समझ में आ गया है कि स्थिति कैसी भी हो पर उसका समाधान असंभव नहीं होता। कई प्रवासी भारतीय जब आपदा की स्थिति में अपनी नौकरियां छोड़कर अपने गांव देश आए, तो कृषि में भी काफी युवाओं ने अपनी रुचि दिखाई और माना की कृषि में भी काफी संभावनाओं हैं। इससे ना कि लोग खुद आत्मनिर्भर बनें बल्कि इससे और लोगों को भी रोजगार मिला, कोरोना महामारी आने का एक तो अच्छा प्रभाव ये हुआ ही है कि लोगों ने अपने आस पास संभावनाएँ तलाशनी शुरू कर दी है। न्यू नॉर्मल एक नई क्रांति की तरह ही आया है, जिसका आदि अंत अभी ठीक तरीके से पता तो नहीं, पर किसी ने कहा है वक्त तो सबसे बलवान है आगे भी न जाने क्या दिखाएगा।

आयुषी त्रिपाठी
आई आई टी कानपूर परिसरवासी



अगर किसी देश को भ्रष्टाचार—मुक्त और सुंदर मन वाले लोगों का देश बनाना है तो, मेरा दृढ़तापूर्वक मानना है कि समाज के तीन प्रमुख सदस्य ये कर सकते हैं: पिता, माता और गुरु।

—डॉ अब्दुल कलाम—

सर्वप्रथम दुविधा मेरे मन में यह थी कि इस लेख का शीर्षक 'कोरोना और दादीमाँ' लिखूं या फिर 'दादीमाँ और कोरोना'। दादीमाँ इस दुनिया में पहले आईं और कोरोना बाद में। पर दादीमाँ को दुनिया वाले नहीं जानते जबकि कोरोना को पूरी दुनिया जानती है। इसलिए कोरोना का हक बनता है। कोरोना नया है पर ये बात नई नहीं कि इस महामारी ने एक साल से अधिक समय से हम सबको परेशान कर रखा है।

जब हम सब लॉकडाउन के दौरान घरों में बंद थे उन दिनों भी आशा की किरण ने हमारा साथ नहीं छोड़ा था। एक दूसरे की हौसला अफजाई हमारे रोजमर्रा के कामों में शामिल हो गया है।

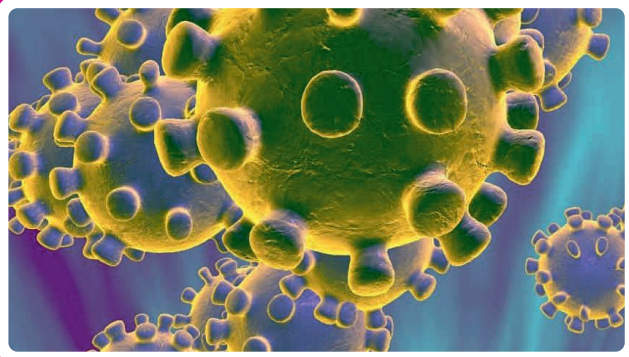


हर दिन कई उपदेश व्हाट्सएप और सोशल मीडिया पर आते एयर साथ ही कई चुटकुले भी। उनमें से एक, आप में से कई लोगों ने देखा होगा— साहित्य में नोबेल पुरस्कार विजेता गैब्रिएल गरसिया मरकज (Gabriel Garcia Marquez) लिखित पुस्तक लव इन द टाइम्स ऑफ कॉलेरा शीर्षक का उपयोग करते हुए लिखा गया था जो कि 'लव इन द टाइम्स ऑफ कोरोना' शीर्षक से काफी वायरल हुआ था। जी हाँ, वायरस का वायरल पोस्ट और उसे देखकर मेरे दिमाग में बात आई, 'कोरोना इन द टाइम्स ऑफ दादीमाँ'। ऐसा क्यों हुआ ये बताने से पहले एक बार कोरोना काल में उचित कार्यों की सूची दोहराकर आगे बढ़ना शायद आसान होगा। सबसे पहला है स्वच्छता बनाये रखना यानि हाथ मुँह साफ रखना। जिसके लिए आवश्यक है हाथ को बार—बार साबुन से धोते रहना। घर से बाहर जाओ तो मास्क का इस्तेमाल करना। लोगों से उचित दूरी बनाये रखना।

मेरी दादी का जन्म 1912 में हुआ था अर्थात् 1918 के प्लेग के दौरान वो छः वर्ष की थीं और एक छः वर्ष की बच्ची में आस—पास होने वाली घटनाओं के प्रति पर्याप्त जागरूकता होती है। शायद यही कारण था कि वो अत्यधिक साफ सफाई के प्रति अत्यंत निष्ठावान थीं। मेरे मन में उनकी छवि स्पष्ट है — बिल्कुल

साफ सफेद साड़ी, उतने ही सफेद केश, आंखों में चश्मा, एक दम सीधा चलने वाली, न कोई लाठी न छड़ी।

दादी के साथ बाजार जाओ तो वाहनों से निकलते धुएँ और झाड़ू लगने के कारण उड़ती धूल से बचने के लिए हमें नाक पर रूमाल रखना होता था। दादी स्वयं साड़ी के पल्ले से अपना मुँह ढंक लेतीं। बच्चों को बीमार लोगों से दूर रहने की सख्त सलाह थी। उनका कहना था, 'बैर बीमारी से है, बीमार से नहीं'। बाहर से आकर हाथ पैर अच्छे से धोना, जूते चप्पल



बाहर रखना, कपड़े तुरंत बदलना, ये सारी रोजमर्रे की आदतें हम सब में डाली गई थीं। ये तो दादी की आम हिदायतें थीं। खास बातों में एक थी कच्ची खाने वाली चीजें जैसे फल और सलाद की सब्जियों को पोटैशियम परमैंगनेट (KMnO4) से धोना अनिवार्य था। दूसरी खास बात थी – दादी हमेशा एक बोतल में डेटोल पानी का घोल लेकर सफर में निकलतीं थीं और साथ में पुराने कपड़ों के छोटे छोटे टुकड़े। रेलगाड़ी की खिड़कियों को डेटोल से पोंछ कर ही हम पोते पोतियों को बैठने की इजाजत थी। खाना पानी घर से लिवाकर चलती थीं। रास्ते में कुछ भी खरीदकर नहीं खाना होता था। तीसरी खास बात – बाजार से लौटे नोटों को अलग रखतीं और सिक्कों को साबुन से धोकर सुखाने के बाद ही बटुए में डालतीं। चवन्नी अटन्नी नहाकर ही हमारे हाथ आते।

कुल मिलाकर सोचने वाली बात ये है कि यदि कोरोना दादी के समयकाल में आया होता, या फिर आज दादी हमारे साथ होतीं तो कोरोना हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। सच ये भी है कि दादी के सिखाये रास्ते पर चलकर आज हमारा परिवार सुरक्षित है। हमारी दादी जैसी सभी दादी नानियों को शत-शत नमन।

अंजना पोद्दार
644, आई आई टी कानपुर



बुद्धिमान को चाहिए कि वह धन का नाश, मन का संताप, घर के दोष, किसी के द्वारा उगा जाना और अपमानित होना—इन बातों को किसी के समक्ष न कहे।

-चाणक्य-

साहित्य-यात्रा

मैं हिन्दुस्तान हूँ

मैं हिंदुस्तान हूँ,
मैं फिर फिर खड़ा होता हूँ।
जितना लड़खड़ाता हूँ,
उतना बड़ा होता हूँ।
ये क्षणिक ठहराव,
आते हैं, आते रहेंगे।
मेरे करोड़ों कंधे हैं,
मुझे सजाते रहेंगे,
राहों से कंटक हटाते रहेंगे,
दुनियाँ में ऊँचा उठाते रहेंगे।
हजारों साल की है दास्तां,
हजारों साल जाना हैं।
कुछ मुश्किलें यूँही,
तनिक थम कर मिटना है।
मैं गाथा कर्मवीरों की,
जन्मभूमि में जीरो की।
नित परमार्थ में जो रत,
मैं मिट्टी उन शरीरों की।
स्वयं समय प्रमाण है,
मेरे अमर अभिमान का।
गा रहा मेरा लहूँ,
गीत फिर बलिदान का।
मैं थमा हूँ, रुका नहीं,
प्रगति पथ से डिगा नहीं।
फिर चलूँगा,
फिर चलूँगा झूम कर।
लहर कर, धूम कर,
आँधियों में ले मशालें,
विघ्न बाधा तोड़ कर।
सभ्यता का आदि हूँ मैं,
सभ्यता का नाद हूँ मैं,
फिर समर्पित सभ्यता को,
ले नया अंदाज हूँ।
मैं हिंदुस्तान हूँ,
मैं फिर फिर खड़ा होता हूँ,
जितना लड़खड़ाता हूँ,
उतना बड़ा होता हूँ।
अंकित यादव



वक्त बेवक्त यूँ ही लिखता हूँ,
कलम सही चलती नहीं फिर भी लिखता हूँ,
हूँ नहीं में वैसा, जैसा तुमको दिखता हूँ,
सौदा सही करो तो, मैं हर नुक्कड़ पर
बिकता हूँ।
प्रतिदिन चाय के साथ परोसा जाता हूँ,
तुम क्या जानो दिन भर कितना कोसा
जाता हूँ,
चंद घंटों बाद कचरे के डिब्बे में मिलता हूँ,
पुराना हो गया तो क्या,
फिर भी, मैं किलो के भाव में बिकता हूँ।
किस्से बिकते हैं, बिकती है हर कहानी,
बचपन बिकता, बुढ़ापा बिकता,
इंसान बिकता, इंसान बिकता,
बिकती है यहां पर जवानी,
सत्य बिकता, झूठ बिकता,
सुंदरता बिकती, ईमान बिकता,
बिकता है आंखों का पानी,
समाचार तो अब व्यापार हो चला है,
बस एक उचित खरीददार चाहिए,
पाठक नहीं ग्राहक मिलते हों जहां,
सूत्रों को एक ऐसा अखबार चाहिए।

जलज कुमार श्रीवास्तव



आज फिर विवश हुआ है मन,
देख के अपना खाली जीवन
कुछ तो सोच रहा इस क्षण,
मन में खयाल कई आते हैं,
कुछ तो मन को हर्षाते हैं।
पर कुछ मन को तरसाते हैं,
कुछ खालीपन भर जाते हैं,
कुछ सूना मन कर जाते हैं।
ठीक उसी तरह जैसे जीवन में,
कई लोग हमें मिल जाते हैं।
कुछ दुःख हर कर ले जाते हैं,
कुछ दर्द हमें दे जाते हैं।
पर हमें शिकवा नहीं है उनसे,
ना ही गिला है इस जीवन से।
हम तो हैं बस उड़ते पंछी,
हाथ किसी के कब आते हैं।
हर गम को बस भूल के अपने,
जीवन पथ पर बढ़ जाते हैं।
जैसे मिलिंद बैठ मंजरी पे,
मधुरस बनाया करते हैं।
देख वैसे ही चमक चपला की,
मेघ, नीर बरसाया करते हैं।
और पखेरू देख के वारि
नव नीड़ बनाया करते हैं
बस यही देख मेरे मन में भी
कई नए खयाल आ जाते हैं।
कुछ खालीपन भर जाते हैं
कुछ सूना मन कर जाते हैं।

प्रियंका

मेरी तनया

मेरी तनया मेरी आब्या, सबके मन को भाती
करती हैं ये प्यार सभी से, सबको खूब रिझाती
हैंसी ठिठोली करे सभी से, सब पे प्यार लुटाती
मेरी तनया मेरी बिटिया, सबके मन को भाती

सूना सूना लगता है घर, जब यह बाहर जाती
बातें करती खूब सभी से, सबको दोस्त बनाती
थोड़ा जिद्दी, थोड़ा गुस्सा, हमको ये दिखलाती
मेरी तनया, मेरी बिटिया, सबके मन को भाती

सुने सुनाये खूब कहानी, करती है मनमानी
है साहसी और निडर, मेरी बिटिया रानी
आऊँ मैं जब ऑफिस से घर, सारी थकान मिटाती
मेरी तनया, मेरी बिटिया, सबके मन को भाती।

लेखक: डॉ असित प्रकाश बाजपेयी (REO)
पदार्थ एवं अभियांत्रिकी विज्ञान विभाग

कोरोना की घड़ी है मुश्किल बड़ी

इस छोटे से कीड़े ने लगा दी आफतों की झड़ी।
कोरोना का कीड़ा घुस रहा चोरी से हर देश में,
इतना कि बंद कर डाला लोगों का आना जाना विदेश
में।

धैर्य न खोना, इस समय संयम बनाये रखना,
आपस में दूरी रखकर सबको बचाये रखना।
ध्यान दें! जब पीते हम गरम पानी,
तब कोरोना की रुकती मनमानी,
उसे याद आती अपनी नानी।

अब औषध इसके सामने फीके,
ठीक हो सकते हैं गरम पानी पीके।
कब तक रहेगा कोरोना, अब और झेला नहीं जाता,
दोस्तों और सहपाठियों के बिना खेला वो नहीं जाता।

आइये हम सब एक जुट हो जायें,
ईश्वर से प्रार्थना कर कोरोना भगाएं।

चिरायु पोटलुरी
पुत्र – डॉ. राम प्रसाद पोटलुरी

डाली और उसकी पत्नी

तुम एक डाली और मैं उसकी पत्नी हूँ
जब तक तुम्हारे साथ था
हरा था
पोषण से भरपूर।
पर जब असमय मुझे
टूट कर अलग होना पड़ा
मैं सीधा अपने गन्तव्य
अपने अंत
जमीन पर नहीं आ पाया।
मैं एक कठिन सफर से गुजरा हूँ
हवाओं ने मुझे झकझोरा है
धूप ने जलाया है
बूंदो ने चोट पहुँचाई है।
और इन सब के बीच
मैं जब भी
हरी पत्तियों को
अपनी डालियों के साथ झूमते हुए देखता था,
मैं कभी एक सच्चे आनंद
और कभी झूठी ईर्ष्या से भर जाता था।
तुमसे अलग होन के बाद
मेरा प्राण संचार भी समाप्त हो गया
पर मेरा अस्तित्व था
इसलिए उस सफर में
अपने अस्तित्वहीन अस्तित्व को बचाने में
पूरा का पूरा खर्च हुआ हूँ
पर अब मैं धरा पर धरा हूँ।
धूप मुझे जला कर भी अब जला नहीं सकती,
बूंदो के अंतिम प्रहार भी मुझे
मेरी जड़ता को चेतना के वाहक मात्र लगते हैं
कुछ हवाएं कभी किसी जतन से
मेरे ऊपर माटी के कुछ कण ले आती है
मानो मेरा अंतिम संस्कार कर रहीं हो
चरणबद्ध अंतिम संस्कार।
मैं चरणबद्ध तरीके से मुक्त हो रहा हूँ।
और मैं धरा पर धरा हुआ
अपने अंतिम क्षणों में
तुम्हें देख रहा हूँ
तुमने हर तूफान को मेरे बिना जीता है
मैं खुश हूँ और तुम्हें....क्योंकि मैं!!!!

रवि शुक्ल
एम. टेक.
सिविल इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट



नारी है अभिमान धरा का,
 दो उनको सम्मान जरा सा।
 नारी तो है पूर्ण समर्पण,
 कर देती सर्वस्व अर्पण।
 कुछ तो उनमें निश्वास भरो,
 कुछ तो उन पर विश्वास करो।
 नारी तो है श्रोत सुधा की,
 अनमोल रत्न हैं इस वसुधा की।
 निश्चल प्रेम बरसाने वाली,
 व्यथित मन हर्षाने वाली।
 नारी है तो, नई जिंदगी है,
 बस कुछ नहीं, बंदगी है।
 वो निर्झर झरने सी बहती,
 वो कल-कल कलरव भी करती,
 हर गम को मन ही मन सहती,
 कभी किसी से कुछ न कहती।
 हे नर! उनका सम्मान करो
 निज हाथों से यह काम करो
 दो पुष्प न अर्पित करो मगर
 अस्मिता उनकी रह जाए अगर
 तो भी उनका सम्मान रहेगा,
 उन पर तेरा एहसान रहेगा।
 उनको खुद पर अभिमान रहेगा,
 जग में उनकी पहचान रहेगा।

प्रियंका दूबे

उलझी जिंदगी महामारी के दौर में

जिन्दगी कितनी कठिन है इस महामारी के दौर में।

बाहर जाने पर कोरोना का भय है,
 एकाकी रहने पर रोजी रोटी का भय है।
 जिन्दगी मुश्किल है इस महामारी के दौर में।
 जिन्दगी कितनी कठिन है इस महामारी के दौर में।

लोग फिर भी खड़े हैं एक दूसरे के दुख में,
 डॉक्टर, सुरक्षाकर्मी, मीडिया एवं स्वच्छताकर्मी,
 लोगों की सेवा में डटे रहे, इस मुश्किल दौर में
 जिन्दगी कितनी कठिन है इस महामारी के दौर में।

खाली पड़े पार्क, सूने रहे झूले, कार्यालयों,
 स्कूलों में

पसरा सनाटा इस मुश्किल दौर में
 जिन्दगी कितनी कठिन है इस महामारी के दौर में।

वैक्सीन आई खुशियाँ लाई, डरे नहीं भाई
 इस मुश्किल दौर में।

आओ मिलकर साथ चले इस महामारी के दौर में

फिर से गुलजार करे इस उपवन को, इस
 मुश्किल दौर में

जिन्दगी कितनी कठिन है इस महामारी के दौर में।

अनामिका तिवारी

म. क. 262 टाइप



“जिंदगी ऑनलाइन” एक मौका

जिन्दगी जिन्दगी..... मेरे घर आना जिन्दगी..... कहीं दूर ये सुरलहरी..... पिघल पिघल कानो तक पहुँच रही थी । मौसम भी कुछ अनमना सा था..... शाम की परछाइयाँ लंबी हो चली थी सूरज कहीं दूर लुढ़कते हुए जा रहा था..... और पक्षी अपने घरोंदे की तरफ कूच कर चुके थे । इतना सब कुछ हो रहा था लेकिन कुछ ऐसा था जो नहीं था..... जो होना था पर नहीं हो रहा था..... पर क्यूँऐसा क्या हो गया..... ऐसा क्या था जो नहीं हो रहा था..... अरे! रे! याद आया..... इन सबके बीच हम कहीं नहीं थे मैं नहीं था.....आप नहीं थे.. वे सब नहीं थे, हम सब नहीं थे..... पर ऐसा क्या हुआ कैसे कैसे वो जो हमेशा से इन का हिस्सा रहा है.....सदियों से पक्षियों के घर वापसी का साक्षी रहा है ।

अब नदारद है । हाँ मैं उसी मनुष्य की बात कर रहा हूँ शायद व्यस्त होगा अपने मित्रों के साथ या संबंधियों के साथ, या अभी ऑफिस से घर नहीं आया होगा या कहीं शायद न्यूज देख रहा होगा..... थोड़ा इंतजार कर लेते हैं,साथे और भी लंबे हो गए..... अब तो झींगूरों ने भी बोलना शुरू कर दिया । मामला कुछ ओर ही है..... मनुष्य इतना शांत नहीं रह सकताउसका खुरापाती मस्तिष्क कुछ न तो कुछ तो करना चाहेगा..... कहीं न कहीं तो दिखेगा..... कोई न कोई तो संपर्क में आएगा..... इसी उधेडबुन में कितना समाये निकाल गया.....और परिणाम वही ढाक के तीन पात.....में कैद कर दिया है । नाम है कोरोना हाँ वही....

नाम तो सुना ही होगा.... कई बार आ चुका है मनुष्यों के बीच..... मगर इस बार तो कुछ ज्यादा ही बर्बर हो के लौटा है, और इसे नाम मिला है को० वि० २.....तो क्या मनुष्य हार मान लेगा, छोड़ देगा सब कुछ, खो देगा अपनी असलियत..... अगर ऐसा हुआ तो..... मनुष्य जो खुद को सबसे ज्यादा विकसित मस्तिष्क का स्वामी समझता है..... हारा हुआ नहीं महसूस करेगा?..... लेकिन ये भी नहीं भूलना है की इस विपदा से पहले भी सैकड़ों बार प्रकृति के कहर को सहा है और लड़ कर वापस लौटा है और विश्वास इसी बात का है की मनुष्य कुछ न कुछ ऐसा करेगा की को०वि०-२ को ऐसी पटकनी लगेगी की वो देखता ही रह जाएगा अब देखना है की ऐसा क्या होगामनुष्य का जीवन चलेगा कैसे -----संभवतः “जिन्दगी ऑनलाइन” का सफर शुरू होगा..... मगर ये है क्या, क्या होता है इसमें..... कौन कौन शामिल हो सकता है----- क्या क्या अवयव हो सकते है इसकी पूर्णता के.....पता नहीं तो क्यूँ न समझने की एक कोशिश ही कर लें की “जिन्दगी ऑनलाइन” है क्या? और कैसे इस आपदा में मनुष्य की सहायता के लिए आई है ।

“जिन्दगी ऑनलाइन”..... सुन के ही लगता है की कुछ न कुछ

जिन्दगी है इसमें भले ही ऑनलाइन लोवस्तुतः तो जिन्दगी अपने आप में ही हमेशा रेखा बध्य होकर रहती है..... तो ऑनलाइन जिन्दगी में तो इस रेखा बाध्यता की पराकाष्ठा हो सकती है..... हाँ ये सही लगता है.....मैं—आप—हमसब जब ऑनलाइन हैं तो ये संबन्धित रेखाएँ अपने जाल को बढ़ाने को तत्पर हैं और आवश्यक भी । इसी का वृहत रूप तो “वेश प्रणाली” है शायद । तो कहने का मतलब ये हुआ की “ऑनलाइन जिन्दगी” जीवन की रेखाओं का वो जाल है जो हमे आपको हम साब को वेब प्रणाली के माध्यम से जोड़ता है । अब धर्मसंकट ये है की इस जाल में गूँथी हमारी जिन्दगी “उलझी” मानी जाए या “सुलझी” । अगर उलझी मान लें तो शिकायत का समाधान क्या, जब असल जिन्दगी को ताले लग गए हो और अगर सुलझी मान ले तो पक्षियों का क्या, उस लुढ़कते सूरज का क्या..... जो सब हमारे ऑनलाइन जिन्दगी के हिस्से में जगह नहीं बना पाये..... इस अंतर्द्वंद का समाधान तो कहीं निकट नहीं दिखता । क्यूँ न हम इस प्रकृति से ही पूछ ले इसका समाधान की ऑनलाइन जिन्दगी के जाल में हम “सुलझे” हैं की “उलझे” हैं । अब ये मत सोचिए की मैं आपके लिए प्रकृति से बात कर के आपको जवाब मोहैया करवाऊँगा ।

ये काम तो आपको खुद करना होगा..... आइये

बाहर निकलिये उन रास्ते के फूलों से पूछिये की क्या उन्होने आपको याद किया, इन पिछले कुछ महीनो में जब आप ऑनलाइन जिन्दगी को अपनी जिन्दगी का विकल्प मान बैठे थे । जा के उन पशुओं की आँखों में देखिये और महसूस करिए क्या उन्हे आपके वहाँ न होने का फर्क पड़ा.....जा के उन मयूरों को निहारिये, और पता करिए क्या उन्हे आपके इस प्रकृति से दूर होने पर कोई मलाल हुआ..... अगर जवाब ऐसा आये जो कहे.....दो हराये.

..... और बताए की इन प्रकृति के संयोजकों ने आपको तनिक भी याद न किया । तो समाये आ गया है की आप अपनी

जीवन शैली में परिवर्तन करें । क्यों जब जिन्दगी “सतही रेखाओं” (online) पर थी तब भी आप प्रकृति से न जुड़े थे और जब जिन्दगी “online” हुई तब भी आपको किसी की कमी न खली तो आपकी जिन्दगी वास्तव में “कम” है..... ये बताता है की इस “ऑनलाइन जिन्दगी” जीने के मौके ने वो मौका दिया की हम पहचाने की हमारी जिन्दगी में किन मौकों की कमी है । भांप लो की इस प्रकृति ने क्या तुम्हें खोजा दिया, जब तुम्हारी जिन्दगी उन बन्दिशों में कैद थी । गर नहीं ऐसा हुआ तो बदल लो कुछ इस तरह, “ऑनलाइन जिन्दगी” न जिन्दगी की मौज थी, बस कुछ दिनों की बात है आगे खुलेगा ये जहाँ जाना जहाँ पर इस प्रकृति की हर कदम रौंद थी ।

तब हकीकत में खुलेगी गुत्थियाँ जो फंस चली थी, “ऑनलाइन जिन्दगी” से पहले भी जो मौन थी ।

डॉ संतोष कुमार मिश्र “केशवेन्दु”
बी एस बी ई



सहनशीलता की परीक्षा

आज देश में ही नहीं पूरे विश्व में कोरोना जैसी महामारी अपने प्रचंड व भयावह रूप में फैली है। ऐसा संकटकाल हमारी धैर्य व सहनशीलता की परीक्षा का समय है। यह संकट हमारा, हमारे समाज और हमारे शासन तीनों के लिए सहनशीलता अनुशासन व नियमपालन का समय है इन्हीं तीनों के अनुपालन से हम अपने राष्ट्र व समाज को इस संकट से उबार सकते हैं।

इस स्थिति में व्यक्ति के रूप में समाज को और समाज द्वारा शासन को सहयोग देना ही हमारा शाश्वत धर्म है आज हम युवा वर्ग को अपने से जोड़कर असुविधा व कम साधनों में जीना तो सिखा ही सकते हैं। परिवार के संग सब मिल बैठ कर खायें तो कुछ महीने चटनी रोटी में भी छप्पन भोग का आनंद मिलता है बस आवश्यकता है आनंद से अभिभूत होकर अनुभूतित होने की।

इस संकट कालीन महामारी के



रूप में इस समय देश में एक महायज्ञ चल रहा है अगर आप भी इस महायज्ञ में अपना योगदान देना चाहते हैं तो घर में रहें और जरूरत मंद लोगों की मदद करें।

आज देश व समाज के लिये एकजुट होकर कुछ करने का समय है, उठो जागो अपना कर्तव्य समझो खुद जियो और दूसरों को भी बचाओ। आज हम अपने आपको ऑनलाइन जोड़कर समाज में जागरूकता व सकारात्मकता बढ़ा सकते हैं और इन ऑनलाइन साधनों का हमें सहारा लेकर समाज

को सही दिशा व दशा देने का प्रयास भी करना चाहिए। आजकल इतने माध्यम जैसे व्हाट्स ऐप फेस बुक व यूट्यूब आदि हैं, जिनका प्रयोग हम समाज की सकारात्मक बढ़ाने में कर सकते हैं।

इस संकट काल में हम सबको ऑनलाइन माध्यमों से जुड़े रहकर समाज के एकाकीपन को दूर करना चाहिए। हमारी एकजुटता का आज इस संकटकाल में यही एक सफलतम साधन सिद्ध हुआ है।

सभी पुरुषों से अनुरोध है कि घर के काम काज में अपनी पत्नियों व माताओं का सहयोग करें, एक दूसरे के पूरक बनें, अपनी आपसी लड़ाई फिर कभी लड़ लेना अभी मिलकर कोरोना से लड़ें।

ऐसे संकट में जिसने अपनी आवश्यकताओं को जितना कम कर लिया वही उतना बड़ा व महान है कम साधनों में संत के समान जीना सीखें और संतोषी बनें। आज हम सबको धैर्य धारण करके अपने अंदर की शक्तियों के पुनर्जागरण करने का समय है और अपने अपने राष्ट्रध्यक्षों के निर्देशों का अक्षरसह अनुपालन करने का समय है।

आज यही धर्म है राष्ट्र बचाओ बस राष्ट्र। जय हिन्द जय भारत।

संजीव गुप्ता



भारतवर्ष कम से कम छह हजार वर्ष पुराना देश है। भारत के सम्पूर्ण इतिहास का प्रतिनिधित्व वे भाषाएँ कर सकती हैं, जिनके तार संस्कृत से अनुस्यूत हों। हिंदी अपने राष्ट्रभाषा-पद को सार्थक तभी कर सकती है जब वह भारत के सम्पूर्ण इतिहास, उसकी समग्र संस्कृति का प्रतिनिधित्व कर सके। इस समग्र संस्कृति में वह संस्कार भी सम्मिलित है जिसका विकास बारहवीं सदी के बाद हुआ है। इसलिए, सम्विधान ने शर्त लगा दी है कि राष्ट्र-भाषा हिंदी में हिंदुस्तानी के भी रूप, शैली, और अभिव्यंजना का समावेश होना चाहिए।

-रामधारी सिंह 'दिनकर'-

लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस के अवसर प्रतिवर्ष केन्द्रीय सतर्कता आयोग द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया जाता है। इस सप्ताह को मनाने के पीछे आयोग का उद्देश्य भारत के नागरिकों को सिस्टम में होने वाले भ्रष्टाचार के बारे में सतर्क एवं सावधान करना है। आजादी से पूर्व हमारा देश भी सोने की चिड़िया कहलाता था। इसका कारण था कि उस समय के सिस्टम एवं नागरिकों की आर्थिक महत्वाकांक्षाएं कम हुआ करती थी। व्यक्ति थोड़े में ही खुश रहा करता था। परन्तु आज के महत्वाकांक्षी जीवन एवं सामाजिक प्रतिस्पर्धा ने समाज के एक वर्ग को अत्यन्त महत्वाकांक्षी बना दिया है। ऐसा वर्ग किसी भी कीमत पर पैसा कमाना चाहता है तथा समाज में अपने स्टेटस को ऊंचा रखना चाहता है। यही कारण है कि आज हमारा समाज एवं देश इस वर्ग के कारण भ्रष्टाचार की खाई में समाता जा रहा है। इस प्रकार के भ्रष्टाचार के फलस्वरूप ही देश का विकास अवरुद्ध हो रहा है। सरकार की ऐसी कोई योजना एवं भर्ती नहीं जो भ्रष्टाचार की भेंट न चढ़ती हो। हम आये दिन समाचारों एवं टीवी चैनल्स में देखते हैं कि अमुख-अमुख भर्ती परीक्षा में मुन्नाभाई पकड़े गये हैं जो किसी दूसरे अभ्यर्थी के स्थान पर परीक्षा दे रहे थे। इसी प्रकार सरकारी योजनाओं में होने वाले भ्रष्टाचार के बारे में भी पढ़ते एवं सुनते हैं कि जैसे बोफर्स घोटाला, एच.डी. डब्ल्यू सबमरीन, स्टाक मार्केट घोटाला, एयरबस घोटाला, चारा घोटाला, दूरसंचार घोटाला, यूरिया घोटाला, सी. आर.बी आदि।

यदि आंकड़ों की बात करें तो भारत भ्रष्टाचार के 80 वे पायदान पर है। हालांकि वर्तमान सरकार ने भ्रष्टाचार पर प्रहार करने के लिए जीरो टालरेंस की नीति अपनाई हुई है। और पिछले 6 वर्षों में किसी बड़े घोटाले का अभी तक खुलासा नहीं हुआ है। वैसे भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के लिए जितना सतर्क एवं सावधान सरकार को रहने का आवश्यकता है उतना ही सतर्क एवं सावधान नागरिक को भी रहने की आवश्यकता है। तभी हम एक भ्रष्टाचार मुक्त भारत की कल्पना कर सकते हैं।

भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में नागरिकों की भूमिका (सतर्क भारत)
आज की पीढ़ियों को जो संस्कार एवं शिक्षा दी जा रही है वह नैतिक मूल्यों से रहित साबित हो रही है। हालांकि सरकार ने इस वर्ष नई शिक्षा नीति लागू की है। देखते हैं इसके लागू होने के पश्चात समाज एवं सिस्टम में कितना बदलाव आता है। भ्रष्टाचार का तात्पर्य केवल आर्थिक गबन एवं घोटाले तक ही सीमित नहीं है बल्कि भ्रष्टाचार तो भ्रष्ट आचरण करने में भी निहित है। किसी के साथ धोखाधड़ी करना या उसे किसी भी रूप में हानि पहुँचाना भी भ्रष्टाचार की श्रेणी में आता है। भ्रष्ट आचरण एवं मानसिकता का समूल नाश करने के लिए हमें आगे आने वाली पीढ़ियों को नैतिक मूल्यों से सुदृढ़ शिक्षा एवं संस्कारों से लैस करना पड़ेगा अर्थात् अपने बच्चों में नैतिक संस्कारों के रूप में निवेश करना होगा। उन्हें शुरू से ही एक अच्छे-बुरे, भ्रष्ट एवं इमानदारी की नैतिक शिक्षा देनी होगी क्योंकि यहीं बच्चे आगे चलकर देश का नेतृत्व करेंगे तथा समाज एवं उसे समृद्ध करने में अपना योगदान

देंगे। समाज के हर स्टेकहोल्डर्स को सतर्क रहना पड़ेगा। हम अक्सर देखते हैं कि सरकार के अधिकांश विभागों में अभी भी बिना सुविधा शुल्क दिये बैगर काम नहीं होता। इनके भ्रष्टतम उदाहरण (पुलिस विभाग, तहसील, कचहरी, नगर निगम, राजस्व विभाग यहाँ तक कि राजनीति के क्षेत्र में) भी प्रतिदिन देखने के मिल जाएंगे। यह सब ऐसे विभाग हैं जहाँ पर बिना सुविधा शुल्क के आपका कार्य होना लगभग असंभव सा नजर आता है। अक्सर सनुने में आता है कि एमपी, एमएलए का टिकट पाने के लिए अमुख पार्टी द्वारा सौ करोड़ चार्ज किया जाता है। जब देश को चलाने वाले एमपी, एमएलए का टिकट पाने के लिए करोड़ों रुपये देंगे तो देश एवं समाज का क्या हश्र होगा इसका अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है।

भ्रष्टाचार में सिर्फ शासकीय कार्यालयों में लेने देनेवाले घूस को ही शामिल नहीं किया जा सकता बल्कि इसके अंदर वह सारा आचरण शामिल होता है जो एक सभ्य समाज के सिर को नीचा करने में मजबूर कर देता है। भ्रष्टाचार के इस तंत्र में आज सर्वाधिक प्रभाव राजनेताओं का ही दिखाई देता है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण तो तब देखने को मिला जब नागरिकों द्वारा चुने हुए सांसदों के द्वारा संसद भवन में प्रश्न तक पूछने के लिए पैसे लेने का प्रमाण कुछ टीवी चैनलों द्वारा प्रदर्शित किया गया।

नागरिक के रूप में हम लोग ही अपना कार्य जल्दी कराने के चक्कर में संबंधित व्यक्ति को सुविधा शुल्क देकर अपना कार्य कराते हैं। कह सकते हैं देश को भ्रष्ट बनाने में हम लोग भी कहीं न कहीं जिम्मेदार हैं। नागरिकों को सुविधा शुल्क देकर अपने कार्य करना बंद करना होगा। नागरिकों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना होगा। हमें प्रतिज्ञा लेनी होगी कि सुविधा शुल्क देकर गलत ढंग से अपना कार्य नहीं करायेंगे। विधि सम्मत ही अपना कार्य करायेंगे भले ही इसमें थोड़ा और समय लग जाए यदि फिर भी संबंधित व्यक्ति सुविधा शुल्क की मांग करता है तो अपने अधिकारों का प्रयोग करके उसकी शिकायत उपर वाले अधिकारी से करेंगे। हालांकि ऐसा करने में शुरू में कुछ समस्याएं एवं बाधाएं सामने जरूर आएगी हो सकता है आपकी कुछ हानि भी हो जाए। यह एक सतत् प्रक्रिया है। नागरिक के रूप में



सिस्टम को सुधारने के लिए हमें थोड़ी असुविधा एवं बाधाओं का सामना पड़ेगा जिसके लिए हमें तैयार रहना होगा। सतत् प्रयास करने से ही बिगड़े हुए सिस्टम को सुधारा जा सकता है।

देश को समृद्ध कैसे बनाया जा सकता है

जब देश के नागरिक सतर्क रहेंगे तथा प्रतिज्ञा लेंगे कि न रिश्वत लूंगा और न ही रिश्वत दूंगा भले ही कार्य हो अर्थात् न हो (चाहे राजनीतिक पार्टी से टिकट लेना हो अर्थात् नगर निगम या तहसील से कोई प्रमाण पत्र बनवाना हो) तो निश्चित रूप से देश समृद्धि के रास्ते पर अग्रसर होगा। ऐसा करने के लिए बहुत से नागरिकों को बहुत कुछ त्यागना होगा। सिस्टम में बैठे लोगों को भी इस मुहिम को सफल बनाने में अपना योगदान देना होगा। क्योंकि सिस्टम को सुधारने एवं देश को समृद्ध बनाने में देश का यह वर्ग भी हिस्सेदार है। सिस्टम में बैठे नागरिकों को भी प्रतिज्ञा लेनी होगी कि आज से मैं अपने कार्यक्षेत्र में आने वाले सभी कार्यों को विविसम्मत बिना सुविधा शुल्क लिए ही करूंगा तथा किसी भी नागरिक को सुविधा शुल्क के नाम पर अनावश्यक परेशान नहीं करूंगा। राजनैतिक पार्टियों से जुड़े हुए नेताओं को भी अधिक से अधिक पैसा कमाने की महत्वाकांक्षा तथा सुख सुविधाओं को त्यागकर देश एवं समाज हित में निस्वार्थ भाव से काम करना होगा। देश की जनता तथा देश की बेहतरी के लिए कार्य करना होगा तथा अपने क्षेत्र में सतर्क रहकर कार्य करना होगा। अपने क्षेत्र में होने वाले भ्रष्टाचार एवं अनैतिक कार्यों पर निगरानी रखकर उन पर अंकुश लगाना होगा। साथ ही साथ अपने क्षेत्र को समृद्ध बनाने के लिए अन्य नेताओं के क्षेत्रों से प्रतिस्पर्धा का भाव जाग्रत करना होगा।

निष्कर्ष

वास्तव में देश से यदि भ्रष्टाचार मिटाना है तो ने सिर्फ साफ स्वच्छ छवि के नेताओं का चयन करना होगा बल्कि लोकतंत्र के नागरिकों को भी सामने आना होगा। उन्हें यह प्रयत्न करना होगा कि उन्हें भ्रष्ट लोगों को समाज से न सिर्फ बहिष्कृत करना होगा बल्कि उच्चस्तर पर भी भ्रष्टाचार में संलिप्त लोगों का बायकॉट करना होगा। अपनी आम जरूरतों को पूरा करने एवं शीघ्रता से अपना कार्य कराने के लिए बंद लिफाफे की प्रवृत्ति से बचना होगा। कुल मिला जब तब लोकतंत्र में आम नागरिक एवं उनके नेतृत्व दोनों ही मिलकर यह नहीं चाहेंगे तब तक भ्रष्टाचार के जिन्न से बच पाना असंभव ही है। निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि देश की समृद्धि का आधार सतर्कता पर टिका हुआ है। जब देश के नागरिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सतर्क रहेंगे तथा प्रतीक्षा करेंगे कि नागरिक के रूप में मैं न रिश्वत लूंगा और न ही रिश्वत दूंगा तो निश्चित रूप से भ्रष्टाचार पर अंकुश लगेगा और जब भ्रष्टाचार पर अंकुश लगेगा तो देश समृद्धि की राह पर चल पड़ेगा।

मनमोहन नाथ

वरिष्ठ तकनीशियन इमेजिनियरिंग प्रयोगशाला
आई आई टी कानपुर

किसान शब्द सुनते ही हमारे दिमाग में सबसे पहले क्या आता है ? खेत में काम करने वाला (खेत में काम करने वाला हर आदमी मजदूर नहीं होता है) जी हा बिल्कुल सही जवाब! ये भी लगता होगा वे कि अकुशल, अज्ञानी, अनपढ़ और अनुभवहीन लोग हैं। परंतु, ऐसा नहीं है मेरे दोस्तों! किसान वो हैं जो एक साधारण मात्र बीज को एक पौधा बना देता है फिर उसी बीज जैसे अनेक दाना पैदा करता है और हर पेट कि भूख को मिटाता है। कभी कभी हम लोग भूख लगने पर पिज्जा, बर्गर, फ्रेंच फ्राइ इत्यादि का सेवन कर लेते हैं लेकिन हमें पता होना चाहिए कि जो इन सबकी आधारभूत सामग्री वह किसान ही पैदा करता है।

आईए हम आपको एक छोटी सी क्रानालजी बताते हैं। जैसे आप कंप्यूटर कि किसी भाषा का प्रोग्राम लिखने के लिए अलगोरीदम बनाते हैं ठीक उसी तरह किसान भी अलगोरिदम बनाता है।

उदाहरण के तौर पर धान कि फसल तैयार करना है इसका अलगोरीदम हम बताने कि कोशिश करते हैं, समझिये —:

सबसे पहले पता किया जाता है कि कितने दिन कि फसल है (Time limit of project)? किस मौसम में बोया जाएगा (Type of expert required)? किस तरह से रोपाई करना (Implementation)? कितना तापमान होना चाहिए? कितना पानी कि आवश्यकता है? कितना खाद (Loops; for while)? कैसे मिट्टी होनी चाहिए (Syntax used)? किस तरह का रोग लगा है और कौन सी दवा कि आवश्यकता है (Debugging)? किस तरह कि घास है और कैसे निकालना (Finding error)? किस तरह कि कटाई (Program Running)? अगर हम उपकरण (Instruments) कि बात करे तो छोटे बड़े मिलाकर लगभग पचास से जादा उपयोग किए जाते हैं। क्योंकि हर फसल के लिए ये सारी चीजे अलग होती हैं। हा ये आपके कूबकल्स (वातानुकूलित कमरा) कि तरह नहीं होती है। ये सारी चीजे खुले आसमान में प्रोग्राम कि जाती हैं।



यदि आपको लगता है कि आप प्रोग्राम लिख कर ऐप्स बनाकर, सॉफ्टवेयर डिवेलप करके लोगों के जीवन को आसान बना रहे हैं तो इसमें कोई किसी को शक नहीं। किन्तु किसान आपको अन्न (Nutriment) प्रदान करता है, जो आपके शारीर में रक्त का संचार करती है। रक्त के संचरण से ही आपका दिल, दिमाग सही दिशा और दसा में काम कर पाती है। हम चाहते हैं कि इसी तरह से हम सबका दिल दिमाग काम करता रहे।

धन्यवाद !!!

मनोज मौर्य

लाकडाउन की बन्दिशों में जिंदगी के सारथी इंटरनेट और टीवी

मार्च 2020 का महीना था और कोरोना के कारण सरकार ने लॉक-डाउन लगा रखा था। अब कुछ भी पहले जैसा नहीं रह गया था, न ही सुबह सुबह घर में न्यूज पेपर आ रहा था और नहीं हम चाय के साथ साथ खबरों का परिवार सहित आनंद ले रहे थे। न सुबह सुबह बच्चों को तैयार करके स्कूल भेजने कि जल्दी थी, नहीं हम लोगों को भागमभाग करके अपने ऑफिस पहुंचाना था, न ही कोई रिस्तेदार और मित्र घर पर आ जा सकते थे। सुबह शाम टहलने के नाम पर दोस्तों के साथ की गपसप भी बंद थी। कोरोना महामारी की वजह से तरह तरह की पाबन्दियाँ लगी हुई थी। अब एक मात्र सहारा था जीवन में और वो था इंटरनेट और टीवी। कुछ चाहिए तो इंटरनेट या कॉल के माध्यम से ऑर्डर कीजिये, खबर भी टीवी या ऑनलाइन न्यूज पेपर से ही देखीं जा रही थीं। अब हम थैला लेके मोल भाव करके सामान लेने बाजार भी नहीं जा पा रहे थे वरन सामान इंटरनेट के द्वारा ऑनलाइन ऑर्डर हो जाता था और घर पे पूरी सावधानियों के साथ पहुंचा दिया जाता था। दोस्तों या रिश्तेदारों से मिलना भी अब ऑनलाइन हो गया था। जब भी किसी की याद आए और मिलने का मन हो कर दो वीडियो कॉल और वो आपके सामने हाजिर और फिर क्या है करिए जी भर के मन की बातें, पर पता नहीं क्यूँ इस बातचीत में वो मिठास गायब थी जो भौतिक रूप से मिलने में होती थी और जो मजा साथ में खाते पीते हुए गपसप करने में आता था वोह भी गायब था, बात तो हो जाती थी पर लगता था की कुछ रह गया। नए नए पकवान तो इंटरनेट से नयी नयी विधियाँ देख कर बनाए जा रहे थे उनको खाने में भी वोह मजा कहाँ था जो हम भारतवाषियों को दूसरों को खिलाके, फिर उनसे अपनी बनाई चीज की तारीफ सुनने में आता है।

लॉकडाउन से पहले हम सभी अपने रोजमर्रा के कामों में इतना व्यस्त रहते थे कि अपनों के लिए, अपने परिवार के लिए कभी समय ही नहीं निकाल पाते थे और न ही अपने बच्चों के छोटे छोटे पलों का आनंद ले पते थे और सभी की सिर्फ यही शिकायत रहती थी कि इन सब कामों के लिए हमारे पास समय ही नहीं है लेकिन लॉकडाउन होने से ये सारी शिकायतें खत्म हो गई हैं। इस दौरान हम सभी को अपने परिवार के साथ बिताने के लिए बेहतरीन पल मिले हैं। इन दिनों में हम लोग बहुत सारी प्यारी और मीठी यादें इस दौरान सहेज रहे हैं, अपने माता पिता और घर के बुजुर्गों के साथ समय बिता पा रहे हैं जिसके कारण बहुत से रिश्तों में आई कड़वाहटें भी मिटी हैं। जो लोग खाना बनाने के शौकीन हैं, वो यूट्यूब के माध्यम से रोज नये नए व्यंजन बनाना भी सीखे हैं। पुराने सीरियलों और फिल्मों का दौर वापस आ गया था, रामायण, महाभारत के साथ अन्य पुराने धारावाहिकों तथा फिल्मों मजा लोग



अपने पूरे परिवार के साथ बैठकर ले रहे हैं और अपनी पुरानी यादों को वापस से जी रहे थे। बच्चों के साथ वीडियो गेम्स, कैरम, लूडो बेडमिंटन जैसे गृहखेल का बड़ों ने भी बच्चों के साथ खूब आनंद लिया है। लॉकडाउन के समय लोगो ने अपने अधूरे शौक को भी पूरे किए हैं, जो लोग डांस सीखने के शौकीन थे और समय की कमी के कारण अपने इस हुनर को निखार नहीं पा रहे थे, उन्होंने अपने हुनर को पंख दिये हैं। जिन्हें म्यूजिक का शौक था, वो म्यूजिक सीख रहे हैं, कुछ पेंटिंग सीख रहे हैं। ऐसे कई शौक इस लॉकडाउन के दौरान अपने पूरे जोश के साथ रंग में दिखे हैं। लोगों की हेल्थ पे भी अलग अलग प्रभाव दिखा, कुछ लोगों ने इन दिनों में भरपूर कसरत और योगा किया और अपने शरीर को सुडौल और स्वस्थ बना लिया और कुछ लोग रोज टीवी देखते हुए तला और मसालेदार खा खाकर खूब बेडौल हो गए। परिवारों के आंतरिक माहौल पर भी इसका विपरीत प्रभाव पड़ा, कुछ परिवारों में आपसी सामंजस्य बढ़ गया और वे और अधिक खुशहाल दिखाई देने लगे और कुछ में झगड़े बहुत बढ़ गए।

अब क्योंकि बच्चे भी न तो पढ़ने स्कूल जा रहे थे और नहीं उनको कहीं बाहर जाकर अपने दोस्तों के साथ मिलकर खेलने ही अनुमति थी। उनकी पढ़ाई भी ऑनलाइन ही हो रही थी और खेल भी। इस लॉकडाउन ने छात्रों की पढ़ाई करने का तरीका ही बदल के रख दिया है, परंपरागत कक्षाओं की जगह अब वर्चुअल क्लासेज और ऑनलाइन पढ़ाई ने ले ली है, बच्चों के पढ़ाई को सुचारु रूप से चलाने के लिए ऑनलाइन शिक्षण विधि एक संकटमोचक साबित हो रही है। लॉकडाउन में भी लगभग सभी तरह के स्कूल अपने अपने छात्रों को विभिन्न तरीकों से पढ़ाई करने की भरसक कोशिश कर रहे हैं जिससे कि बच्चों की पढ़ाई में कोई रुकावट न हो, वर्चुअल क्लासेज की परिकल्पना ऑनलाइन माध्यमों से साकार हो रही है। मेरी पत्नी एक सरकारी अध्यापिका हैं जो कि प्राइमरी के विद्यार्थियों को पढ़ाती हैं, उनके यहाँ भी व्हाट्सअप ऐप, दीक्षा एप और मिशन प्रेरणा के के माध्यम से समाज के सबसे गरीब तबके के बच्चों को भी पढ़ाने की



कोशिश की जा रही है, पर इस स्तर पर ऑनलाइन शिक्षा इतनी सरल नहीं है जितनी की शहर के कान्वेंट स्कूल के बच्चों को क्योंकि यहाँ पर पढ़ाने वाले बच्चों के परिवारों की अपनी दिक्कतें हैं जिसकी वजह से ये बच्चे ऑनलाइन शिक्षा का उस तरह से लाभ नहीं ले पा रहे हैं जैसे समृद्ध परिवारों के कान्वेंट विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चे। परंतु तमाम रुकावटों के बावजूद भी सरकार व अध्यापकों के अथक प्रयासों से कुछ हद तक यहाँ भी बच्चों की पढ़ाई हो पा रही है। छात्रों की पढ़ाई के नुकसान को देखते हुए शिक्षकों ने ई-लर्निंग का रास्ता अपनाया है, जिसके माध्यम से छात्र अपनी पढ़ाई जारी रख सकते हैं। ऑनलाइन शिक्षण के लिए "गूगल क्लासरूम प्लेटफॉर्म, जूम एप और व्हाट्सअप एप बहुत ही मददगार साबित हुए हैं। इन एप के माध्यम से एक तरफ जहाँ शिक्षक छात्रों के कोर्स से सम्बन्धित शैक्षिक सामग्री एवं असाइनमेन्ट उनको भेज पा रहे हैं वहीं दूसरी तरफ इसके माध्यम से छात्र भी अपनी शैक्षिक जिज्ञासाओं का समाधान कर सकते हैं और अपनी पढ़ाई जारी रख सकते हैं। इसप्रकार लॉकडाउन के कारण स्कूल-कॉलेज बंद होने के बावजूद ऑनलाइन शिक्षण से बच्चों को लय में रखने में मदद मिल रही है। परंतु इन माध्यमों में जो पठन सामग्री बनाई गयी है या भेजी जा रही है वो बच्चों को ध्यान में रखते हुये नहीं बनाई गयी है। बहुत से स्कूल पुराने अपलोडेड वीडियो जगह-जगह से उठाकर बच्चों को शेयर कर रहे हैं। जिसके कारण बच्चों को बच्चों को अपने पाठ्यक्रम को समझने में परेशानी हो रही है। वैसे तो देश के लगभग सभी स्कूल ऑनलाइन पढ़ाई करवा रहे हैं। लेकिन फिर भी कुछ स्कूल ऐसे भी हैं जो सुविधा सम्पन्न नहीं है, ऐसे में वो ऑनलाइन पढ़ाई करवा पाने में असमर्थ हैं। इसके साथ ही ऑनलाइन पढ़ाई के लिए छात्रों के पास भी तो मोबाइल और लैपटॉप होना जरूरी है। जबकि हमारे जैसे देश में बहुत कम घरों तक ही इंटरनेट की उपलब्धता है, ऐसे में ऑनलाइन शिक्षा कितनी सार्थक होगी ये भी एक यक्ष प्रश्न है। बहुत से सर्वे और अध्ययनों से पता चलता है कि केवल 30% से भी कम भारतीयों के पास स्मार्टफोन हैं और डेस्कटॉप कंप्यूटर, लैपटॉप/नोटबुक/ नेटबुक/ पामटॉप्स या टैबलेट और इंटरनेट की सुविधा तक पहुँच तो लगभग 15 से 20% परिवारों की ही है। जिसमें शहरी घरों में इसका प्रतिशत बहुत अधिक और ग्रामीण घरों में बहुत ही कम है। इन सब समस्याओं से इतर सबसे बड़ी दिक्कत नेटवर्क की भी सामने आ रही है। लॉकडाउन के कारण इंटरनेट का उपयोग बहुत बढ़ गया है,

जिसके चलते स्पीड कम हो गयी है, इन बच्चों के परिवार के पास नेट प्लान भी कम राशि का होता है, जिससे नेट में बार-बार रुकावट आती है, पठन सामग्री डाउनलोड होने में ज्यादा समय ले रही है, क्वालिटी भी खराब होती है जिससे उसे पढ़ना और समझना बच्चों के लिए मुश्किल होता है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली की अनवरत उपलब्धता न होना भी एक बहुत बड़ी रुकावट है। बहुत से परिवारों की समस्या यह भी है कि निजी शिक्षा संस्थान अभिभावकों पर नयी पुस्तकें खरीदने और फिर पूर्ण फीस जमा करने के लिए दबाव बना रहे हैं। सोशल मीडिया और व्हाट्सएप ग्रुप्स पर अभिभावकों के द्वारा फीस का विरोध किया गया है। ये बात सही है कि संस्थान के प्रबन्धन को भी वेतन सहित अन्य खर्चे वहन करने पड़ रहे हैं किन्तु विद्यालय या महाविद्यालय में शिक्षण कार्य नहीं होने से काफी खर्च घटे भी हैं। सरकार को समन्वय स्थापित करते हुए दोनों पक्षों के आर्थिक हित सुरक्षित रखने संबंधी प्रबंध करना चाहिए थे।

ऑनलाइन पढ़ाई का एक सबसे बड़ा नुकसान ये है कि ऑनलाइन पढ़ाई से बच्चों में आंखों में समस्याएँ हो रही हैं, उनकी याद करने की शक्ति भी प्रभावित हुई है। जिसका प्रमुख कारण ये है कि बच्चे हर चीज कंप्यूटर पर सेव कर लेते हैं और किताब से तो कोई पढ़ाई हो नहीं रही, जिससे बच्चे किताब से याद भी करें। इसके अलावा शिक्षक द्वारा सतत मूल्यांकन के अभाव में बच्चे ऑनलाइन पाठ्यक्रम में उस रुचि से भी काम नहीं कर पा रहे जैसे वो विद्यालय में करते थे। जिस तरह मोबाइल या केलकुलेटर आने से हम दिमाग से गणनाएँ करना भूलते जा रहे हैं। उसी तरह से ऑनलाइन पढ़ाई से बच्चों की भी मेमोरी लॉस हो रही है और वे हर छोटी से छोटी बात के लिए भी इंटरनेट की मदद लेने लगे हैं। इसके साथ ही वो पढ़ाई के नाम पे अभिभावकों से नजर बचाकर अन्य एप भी उपयोग करते हैं और उनको धीरे धीरे इन एप की लत लगती जा रही है जो कि बहुत ही घातक है। ऑनलाइन पढ़ाई बड़ी कक्षा के बच्चों के लिए तो तब भी थोड़ी ठीक है, लेकिन छोटे बच्चे जो अभी अभी स्कूल जाना ही शुरू किए हैं उनको ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से पाठ्यक्रम में रुचि जगाना अत्यंत कठिन कार्य है। ऐसे में अभिभावकों को दायित्व बहुत अधिक बढ़ गया है और उनको अपने छोटे बच्चों की पढ़ाई के लिए अधिक समय और ध्यान देने कि जरूरत पड़ रही है। इन सब वजहों से अभिभावकों को विशेष रूप से सजग रहने की जरूरत है। बड़े उम्र के बच्चों के ऑनलाइन कंटेंट पर नजर भी रखनी है और छोटे बच्चों को भी उनकी मानसिक अवस्था को ध्यान में रखते हुए उनको ऑनलाइन माध्यम से पढ़ना भी है। घरों में अधिकांश समय मोबाइल और लैपटॉप से चिपके रहने के कारण बच्चों की रचनात्मक क्षमता प्रभावित हो सकती है। इसका सीधा असर बच्चों के मानसिक विकास पर होगा।

डॉ. उपेन्द्र कुमार पाराशर
तकनीकी अधीक्षक
भौतिकी विभाग

तकनीकी लेख

C3i हब: भारत के डिजिटल भविष्य को सुरक्षित करने की दिशा में एक पहल

आज हम अपने परिवार, दोस्तों और सहकर्मियों के साथ, साथ डिजिटल दुनिया में रहते हैं। आधुनिक जीवन में न केवल हमारे व्यक्तिगत जीवन बल्कि हमारे पेशेवर जीवन भी कंप्यूटर, स्मार्ट फोन, आईपैड से लेकर अधिक उन्नत अन्य मल्टी-मीडिया प्रौद्योगिकियों तक प्रौद्योगिकी की प्रचुरता पर निर्भर करते हैं। दुनिया पहले से कहीं अधिक प्रौद्योगिकी पर निर्भर है और सॉफ्टवेयर को अपनाने के लिए कई क्षेत्रों वित्त, सरकार, सैन्य, खुदरा व्यापार, अस्पतालों, शिक्षा, ऊर्जा सहित कुछ क्षेत्रों में वृद्धि देखी जा रही है। नतीजतन, अधिक से अधिक महत्वपूर्ण जानकारीयों डिजिटल हो रही हैं और डिजिटल डेटा का संग्रह दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

एक ओर जहाँ डेटा का डिजिटलीकरण डेटा को वायरलेस और वायर्ड डिजिटल संचार नेटवर्क और सर्वव्यापी इंटरनेट के माध्यम से सुलभ बनाता है तो दूसरी ओर डिवाइस और उनके अंतर्निहित सिस्टम, जिसके माध्यम से डिजिटल डेटा पूरे इंटरनेट और अन्य उपकरणों में संचारित होता है, में कमजोरियाँ होती हैं, जिसका प्रयोग करके साइबर हमलावर अक्सर साइबर आक्रमण को अंजाम देते हैं। साइबर-हमलावर अवैध तरीके, उपकरण और पहुँच का उपयोग करते हैं, जिससे नुकसान और व्यवधान उत्पन्न होते हैं या कंप्यूटर, डिवाइस, नेटवर्क, एप्लिकेशन और डेटाबेस तक अनधिकृत तरीके से पहुँच जाते हैं। ऐसा करके साइबर-हमलावर जानबूझकर किसी लक्षित संगठन या व्यक्ति की सूचना प्रणालियों की गोपनीयता, अखंडता और उपलब्धता का शोषण कर कमजोर और असुरक्षित करने का प्रयास करते हैं। साइबर-हमले विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं, जैसे:

- 1. मैलवेयर:** जहाँ दुर्भावनापूर्ण सॉफ्टवेयर जैसे कंप्यूटर वायरस, स्पाईवेयर, ट्रोजन हॉर्स, की-लॉगर्स किसी डिवाइस पर हमला करते हैं।
- 2. रैंसमवेयर:** जहाँ मैलवेयर जब तक कि फिरौती न दे दी जाय तब तक संवेदनशील डेटा को या तो इनक्रिप्ट कर देता है या लॉक कर देता है।
- 3. फिशिंग हमले:** जहाँ संवेदनशील डेटा को प्रच्छन्न ई-मेल, फोन कॉल, या पाठ संदेशों के माध्यम से निकाला जाता है।
- 4. उन्नत स्थायी खतरा:** जिसमें एक अनधिकृत उपयोगकर्ता किसी सिस्टम या नेटवर्क तक पहुँच प्राप्त करता है और बिना पता चले लम्बे समय तक नुकसान पहुँचाता रहता है।
- 5. सोशल इंजीनियरिंग:** इसमें शरारती उपयोगकर्ता संवेदनशील जानकारी, जो आमतौर पर सरक्षित होती है, को प्राप्त करने के लिए और सुरक्षा प्रक्रियाओं को तोड़ने के लिए मानवीय कमजोरियों का प्रयोग करता है।

हाल के दिनों में दुनिया भर में ऐसे कई साइबर हमले हुए हैं। जैसा कि जर्मनी के फेडरल ऑफिस फॉर इंफॉर्मेशन सिक्योरिटी द्वारा रिपोर्ट

किया गया था कि 2014 में एक साइबर हमले के माध्यम से एक जर्मन स्टील प्लांट का बुनियादी नियंत्रण ढांचा क्षतिग्रस्त कर दिया गया था। हाल ही में अक्टूबर 2019 में हुई एक घटना में, भारत में परमाणु ऊर्जा संयंत्र को अपने आईटी सिस्टम में एक मैलवेयर के साथ एक साइबर हमले का शिकार होना पाया गया, जो सौभाग्य से संयंत्र के नियंत्रण प्रणाली नेटवर्क तक पहुँचने के लिए अपना रास्ता नहीं बना पाया था। सोलरविंड ओरियन प्लेटफॉर्म के माध्यम से हाल ही में आपूर्ति श्रृंखला का हमला, जिसने विभिन्न अमेरिकी सरकारी साइटों में घुसपैठ किया और महीनों तक पता चले बिना लगातार बना रहा। इन सबसे यह पता चलता है कि हम श्रृंखलाबद्ध हमलों की स्थिति में कितना असुरक्षित हैं। 2015 में कैस्पर्सकी (Kaspersky) प्रयोगशाला के शोधकर्ताओं ने एक और अधिक दुर्भाग्यपूर्ण घटना का पता लगाया था कि ऑपरेटरों का एक समूह, जिसका नाम इक्वेशन ग्रुप था और संभवतः यूएस नेशनल सिक्योरिटी एजेंसी (NSA) से जुड़ा था, उसने एक मालवेयर के माध्यम से भारत सहित कम से कम 42 देशों में कंप्यूटर और सूचना नेटवर्क को संक्रमित किया। इस तरह के मालवेयरस सीडी और USB में मानक वाणिज्यिक सॉफ्टवेयर के लिए डाक के माध्यम से पारगमन में डाले गए थे। उन्हें मेल पारगमन के दौरान इंटरसेप्ट किया गया, उसमें हेरफेर करके फिर सील किया गया और फिर से मूल गंतव्य पर भेज दिया गया था।

2015 में जब तक इसका पता नहीं चला था तबतक भारत में इक्वेशन ग्रुप ने डेढ़ दशक तक दूरसंचार, अनुसंधान संस्थानों, सेना और अन्य सूचना अवसंरचनाओं को संक्रमित करना जारी रखा। शोध से यह भी पता चलता है कि भारत सबसे अधिक संक्रमण दर वाले आठ देशों में पाँचवें स्थान पर है। इस तरह के साइबर हमलों के दौरान, जैसा कि इक्वेशन ग्रुप ने किया था भारत हमेशा एक उच्च जोखिम में रहता है क्योंकि भारत अपने लगभग सभी हार्डवेयर आयात करता है और इसके द्वारा हमेशा एक खतरा बना रहता है कि आयातित हार्डवेयर में से कुछ विदेशी देश कंप्यूटर या नेटवर्क पर उपलब्ध सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए पिछले दरवाजों से प्रवेश करने का प्रयास कर सकते हैं।

वस्तुतः इस तरह के साइबर हमलों या अनधिकृत पहुँच से नेटवर्क, डिवाइस, प्रोग्राम और डेटा की रक्षा करने के लिए, साइबर-सुरक्षा का कार्यान्वयन इस आधुनिक डिजिटल दुनिया में अत्यधिक महत्व रखता है। अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोपीय देशों, रूसी संघ, चीन, जापान



और दक्षिण कोरिया जैसे तकनीकी रूप से उन्नत देश सभी अपने साइबरस्पेस की सुरक्षा के लिए प्रौद्योगिकियों को विकसित करने की दिशा में उच्च स्तर पर काम कर रहे हैं। भारत भी साइबर सुरक्षा के महत्व को समझने में पीछे नहीं है। जुलाई 2013 में भारत सरकार ने साइबर सुरक्षा नीति- 2013 को जारी करते हुए अपनी चिंता को व्यक्त करते हुए कहा:

“राष्ट्र को प्रभावित करने वाली साइबर से संबंधित घटनाएं किसी भी रूप में हो सकती हैं: एक संगठित साइबर-हमला, एक अनियंत्रित कारनामा जैसे कि कंप्यूटर वायरस या वर्मस या कोई दुर्भावनापूर्ण सॉफ्टवेयर कोड, विशेष दुष्परिणामों के साथ एक राष्ट्रीय आपदा या अन्य संबंधित घटनाएं जो सूचना संरचना या प्रमुख संपत्ति के व्यापक क्षति का कारण बनती हैं।”

2013 की राष्ट्रीय नीति अधिसूचना भी भारत में साइबर सुरक्षा और साइबर रक्षा पर स्वदेशी अनुसंधान की तत्काल आवश्यकता को महत्व देती है। ऐसे मिशनों को तत्काल प्रभाव से लागू करने के लिए भारत के पास और भी बड़े कारण हैं। तकनीकी रूप से उन्नत देशों द्वारा साइबरस्पेस को सुरक्षित करने के लिए यद्यपि विकसित उपकरण और तकनीकें अक्सर निर्यात प्रतिबंधित होती हैं। परिणामस्वरूप, जब कुछ साइबर रक्षा प्रौद्योगिकियां व्यावसायिक रूप से उपलब्ध होती हैं तब भी, जिनकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है, वे अक्सर भारत जैसे अन्य देशों की पहुंच से परे होती हैं। उदाहरण के लिए, **GrammaTech**, **Klocwork** या **Coverity** जैसी कंपनियों द्वारा विकसित कई वाणिज्यिक स्थैतिक सॉफ्टवेयर विश्लेषण उपकरण भी संयुक्त राज्य में निर्यात के लिए प्रतिबंधित हैं। यही सब और अधिक कारण हैं कि भारत को साइबर-सुरक्षा और साइबर-रक्षा पर स्वदेशी अनुसंधान को अबिलम्ब वृहद स्तर पर करने की आवश्यकता है।

C3i सेंटर (साइबर सुरक्षा एवं महत्वपूर्ण अवसंरचनाओं की साइबर रक्षा हेतु अंतर्विषयक सेंटर) को 2017 में आईआईटी कानपुर में स्थापित किया गया। **C3i** सेंटर पारेषण, वितरण, जल उपचार संयंत्र, औद्योगिक स्वचालन, गृह स्वचालन आदि क्षेत्र में भौतिक प्रणालियों की साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में पहले ही एक अग्रणी सेंटर के रूप में खुद को स्थापित कर चुका है। पिछले वर्ष, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के तत्वावधान में अंतर्विषयक साइबर भौतिक प्रणालियों (**NM-ICPS**) के लिए राष्ट्रीय मिशन द्वारा **IIT** कानपुर को साइबर भौतिक प्रणाली की साइबर सुरक्षा में एक प्रौद्योगिकी नवाचार हब (**TIH**) के साइट के रूप में चयनित किया गया है। उल्लेखनीय है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग ने अगले 5 वर्षों में 170 करोड़ रुपये से अधिक के अनुदान को अनुमोदित किया है। **NM-ICPS** पत्र के अनुसार, “प्रौद्योगिकी नवाचार हब (**TIH**) का लीक से हटकर अनुसंधान और अनुप्रयोगों से संबंधित सभी सूचनाओं को एकत्रित करने का एकमात्र लक्ष्य है – जो कि **IITK** के संदर्भ में साइबर भौतिक प्रणालियों की साइबर-सुरक्षा होगी। प्रत्येक हब एक मिनी-मंत्रालय की तरह कार्य करेगा, जिसमें वे अन्य संस्थानों, उद्योगों से परियोजनाएं प्राप्त कर सकते हैं या उनका समर्थन कर सकते हैं और प्रौद्योगिकियों और अनुप्रयोगों के वितरण की दिशा में काम कर सकते हैं। सभी प्रौद्योगिकी नवाचार हब (**TIH**) मौलिक ज्ञान और प्रौद्योगिकियों के ऐसे स्रोत होंगे जो भारत को अगली पीढ़ी की प्रौद्योगिकियों के लिए तैयार रखने के लिए आवश्यक होंगे ”। इस प्रस्तावित प्रौद्योगिकी नवाचार हब (**TIH**) को **IIT** कानपुर में मौजूद **C3i** सेंटर पर स्थापित किया गया है और औपचारिक रूप से अक्टूबर 2020 में इसकी शासी निकाय का गठन भी कर लिया गया है। प्रौद्योगिकी नवाचार हब (**TIH**) को आधिकारिक तौर पर **C3i**

हब कहा जाएगा जिसे साइबर-सुरक्षा एवं साइबर भौतिक प्रणाली नवाचार की साइबर-सुरक्षा-हब के लिए जाना जाएगा।

C3i हब के चार प्रमुख चार्टर्स हैं: अनुसंधान एवं विकास, उद्योग-सहयोग, स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र और मानव संसाधन विकास।

अनुसंधान एवं विकास: **C3i** हब साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में **C3i** सेंटर की क्षमताओं का विस्तार करेगा और राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण अवसंरचनाओं की सुरक्षा के लिए साइबर सुरक्षा में मौलिक और अनुप्रयोगी अनुसंधान करेगा। प्रबंधन और नियंत्रण की रक्षा में गहराई से सुरक्षा प्रदान करने के लिए ये हब भौतिक हार्डवेयर से शुरू करके भौतिक प्रणालियों पर आधारित 9लेयर की साइबर साइबर सुरक्षा रणनीति तैयार करेगा। जहां साइबर हमले होते हैं वहाँ इस लेयरिंग और क्रॉस-लेयर इंटरैक्शन के द्वारा सभी शोध और प्रौद्योगिकी नवाचार को निर्देशित किया जाएगा। यह हब **IIT** कानपुर में पेटेंट योग्य बौद्धिक सम्पदा, कॉपीराइट सॉफ्टवेयर और साइबर सुरक्षा प्रौद्योगिकी उत्पादों का विकास करेगा।

उद्योग-सहयोग: **C3i** सेंटर में पहले से ही **L & T** प्रौद्योगिकी सेवाओं, टेक महिंद्रा, हिताची, और अन्य कम्पनियों के सहयोग से कई परियोजनाओं पर काम हो रहा है। प्रौद्योगिकी नवाचार हब (**TIH**) के तहत इन संबंधों को और मजबूत किया जाएगा और आगे की साझेदारी विकसित की जाएगी।

स्टार्ट-अप इकोसिस्टम: इस हब में टेक्नोलॉजी एंटरप्रेन्योरशिप प्रोग्राम होगा, ताकि कम से कम 30 नए स्टार्ट-अप इनक्यूबेट किए जा सकें तथा ये स्वदेशी साइबर सुरक्षा उत्पादों और सेवाओं के लिए समर्पित होंगे।

मानव संसाधन विकास: इस हब में देश में साइबर सुरक्षा जनशक्ति की भावी पीढ़ी को तैयार करने के लिए पोस्ट-डॉक्टरल, पीएच-डी और परास्नातक छात्रों को और साथ ही अधिस्नातक छात्रों के लिए पाठ्यक्रम बनाया जाएगा साथ ही नए संकाय-फेलो और चेयर-पोजीशन भी स्थापित किए जायेंगे। विकसित ज्ञान की पहुंच का अन्य लोगों तक विस्तार करने के लिए, **IIT** कानपुर में डिग्री पाठ्यक्रमों की सीमा के भीतर जितना संभव हो सकेगा, साइबर सुरक्षा में प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए विभिन्न ऑनलाइन पाठ्यक्रम भी बनाए जाएंगे।

प्रस्तावित अनुसंधान एजेंडा में, क्रिटिकल इन्फ्रास्ट्रक्चर, ऑटोमोटिव और अनमैन्ड एरियल व्हीकल सिम्युलेटिविटी की योजना बनाई गई है – और इनमें से प्रत्येक दिशा में विभिन्न रिसर्च प्रोजेक्ट्स और उत्पादन योग्य टेक्नोलॉजी विकसित की जाएंगी जिसे स्टार्ट-अप कंपनियों के माध्यम से विस्तार प्रदान किया जायगा। विभिन्न साइबर सुरक्षा कंसल्टेंसी, प्रयोगशालाओं और परीक्षण-सुविधाओं की भी योजना है। उल्लेखनीय है कि साइबर भौतिक प्रणाली आधारित महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे के अलावा – वित्तीय बाजार और बैंकिंग साइबर-सुरक्षा में भी काम करने का प्रावधान किया गया है।

IIT कानपुर के भागीदार संस्थान **IIT** खड़गपुर में **SEALS** लैब, **IISc** में साइबर सुरक्षा समूह, **IIIT** इलाहाबाद और **AKTU** लखनऊ हैं। प्रारंभिक अंतर्राष्ट्रीय भागीदार के रूप में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, सेन डिएगो, न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क और अबू-धाबी परिसर, तेल अवीव विश्वविद्यालय और इसराइल में बेन गुरियन विश्वविद्यालय सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

सुरत्ता दास
C3i सेंटर
IIT कानपुर



तकनीकी लेख

वर्चुअल लैब (आभासी प्रयोगशाला)

वर्चुअल लैब सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा पर राष्ट्रीय मिशन के तहत मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन (शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार –जो की पहले “मानव संसाधन विकास मंत्रालय” के अंतर्गत आता था) की एक पहल है। वर्चुअल लैब का मुख्य उद्देश्य विज्ञान और अभियांत्रिकी के विभिन्न विषयों में प्रयोगशालाओं को दूरस्थ पहुँच प्रदान करना है। इस वर्चुअल लैब से स्नातक स्तर, पोस्ट ग्रेजुएट स्तर के साथ-साथ अनुसंधान विद्वानों के लिए भी सहायता मिलेगी। इसका उद्देश्य छात्रों को उनकी जिज्ञासा को बढ़ाकर प्रयोगों का संचालन करना है जो उन्हें दूरस्थ प्रयोग के माध्यम से बुनियादी और उन्नत अवधारणाओं को सीखने में सहायक होगा।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर द्वारा निर्मित वर्चुअल लैब

(Web URL: <https://www.vlab.co.in/participating-institute-iit-kanpur/>)

क्रम संख्या	वर्चुअल लैब का नाम	शाखा (विषय)	मुख्य जाँचकर्ता (निर्माणकर्ता)
1.	Material Response to Micro-structural, Mechanical and Thermal Stimuli	पदार्थ-विज्ञान अभियांत्रिकी	डॉ. कांतेश बलानी
2.	Electron Microscopy for Beginners	पदार्थ-विज्ञान अभियांत्रिकी	डॉ. कांतेश बलानी
3.	RF and Microwave Characterization Laboratory	विद्युतीय अभियांत्रिकी	डॉ. एम. जे. अख्तर डॉ. कुमार वैभव
4.	Optical Visualization of Heat Transfer and Fluid Flow Phenomena	यांत्रिक अभियांत्रिकी	डॉ. के. मुरलीधर डॉ. पी. के. पानीग्रही
5.	Ultrafast Laser Spectroscopy	रसायन विज्ञान	डॉ. डी. गोस्वामी
6.	Production Shop Simulation Laboratory	औद्योगिक और प्रबंधन अभियांत्रिकी	डॉ. दीपू फिलिप
7.	Waves and Phenomena (Virtual Laboratory: Oscillations)	भौतिक विज्ञान	डॉ. एस. बनेर्जी
8.	Aerospace Virtual Laboratory	अंतरिक्ष-भौतिकी विज्ञान	डॉ. एस. कामले
9.	Virtual Astrophysics Laboratory	खगोल-भौतिकी विज्ञान	डॉ. पंकज जैन
10.	Virtual Combustion and Atomization	यांत्रिक अभियांत्रिकी	डॉ. डी. पी. मिश्रा
11.	Transducers and Instrumentation	विद्युतीय अभियांत्रिकी	डॉ. निश्चल वर्मा
12.	Acoustics Lab	ध्वनि-भौतिकी विज्ञान	डॉ. नचिकेता तिवारी

वर्चुअल लैब छात्रों को निम्नलिखित विधियों में से एक (या संभवतः एक संयोजन) प्रयोग का परिणाम प्रदान करेगा।

- समीकरणों के एक सेट द्वारा भौतिक घटना की मॉडलिंग करना और विशेष प्रयोग के परिणाम प्राप्त करने के लिए सिमुलेशन करना। यह एक प्रकार का वास्तविक दुनिया के प्रयोग का एक अनुमानित संस्करण प्रदान कर सकता है।
- वास्तविक प्रणाली पर माप द्वारा, पहले प्राप्त आंकड़ों के अनुरूप आभासी प्रयोगशाला प्रयोगों के लिए मापा गया डेटा प्रदान करना।
- दूर (Online) से एक वास्तविक प्रयोगशाला में प्रयोग शुरू करना और छात्र को कंप्यूटर इंटरफेस के माध्यम से प्रयोग का परिणाम प्रदान करना। यह दूर से वास्तविक प्रयोगशाला प्रयोग को अंजाम देगा।

वर्चुअल लैब एक संपूर्ण शिक्षण प्रबंधन प्रणाली प्रदान करती है, वर्चुअल लैब के माध्यम से छात्र एवं शिक्षक वेब-संसाधन, वीडियो-व्याख्यान, एनिमेटेड प्रदर्शन और आत्म-मूल्यांकन सहित सीखने के लिए विभिन्न उपकरणों का लाभ उठा सकते हैं। वर्चुअल लैब का उपयोग करके हम महंगे उपकरण और संसाधन साझा करने में सक्षम हैं जो समय और भौगोलिक दूरियों के कारण सीमित उपयोगकर्ताओं के लिए उपलब्ध हैं।

आजकल अधिकांश उपकरणों में नियंत्रण और डेटा भंडारण के लिए कंप्यूटर एक अंतराफलक (इंटरफेस) है। वर्चुअल लैब प्रोग्राम की सहायता से अच्छे प्रयोगों को डिजाइन करना संभव है जो की एक छात्र को जल्दी सीखने में बढ़ावा देगा।

इंटरनेट आधारित प्रयोग जो कि वेब पर उपलब्ध संसाधनों, ज्ञान, सॉफ्टवेयर और डेटा के उपयोग की अनुमति देता है, इसके अलावा अंतरिक्ष में अलग किए गए बिंदुओं (और संभवतः एक समय) पर एक साथ किए जा रहे कुशल प्रयोगों को प्रोत्साहित करने में सहायता मिलती है।

छात्रों को वास्तविक लैब प्रयोग और उपकरण की ऑडियो और वीडियो स्ट्रीमिंग के साथ अन्य इनपुट प्रदान करके वर्चुअल लैब को अधिक प्रभावी और यथार्थवादी बनाया जाएगा।

आई. आई. टी. कानपुर, वर्चुअल लैब प्रोजेक्ट में भाग लेने वाले संस्थानों में से एक रहा है। अब तक आई. आई. टी. कानपुर से संबद्ध 104 नोडल सेंटर हैं। विभिन्न नोडल सेंटरों में आई. आई. टी. कानपुर के माध्यम से लगभग 100 कार्यशालाओं का आयोजन किया जा चुका है। वर्चुअल लैब की अवधारणा को फैलाने और जिन विषयों में वर्चुअल लैब नहीं बन पाई है उनका निर्माण करने के लिए बूटाथॉन प्रोग्राम का संचालन किया गया।

बूटाथॉन:

बूटाथॉन दो शब्दों **बूटकैम्प + हैकाथॉन** पर आधारित है। यह एक राष्ट्रीय स्तर का वर्चुअल लैब डेवलपमेंट प्रोग्राम है जहाँ विभिन्न राज्यों के स्कूल और कॉलेज वर्चुअल लैब में भाग लेते हैं और प्रयोग करते हैं। पहला राष्ट्रीय बूटाथॉन बांदा के राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज में आयोजित किया गया, जो की आई. आई. टी. कानपुर का एक महत्वपूर्ण नोडल सेंटर है। इस आयोजन में देश भर की 140 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। आयोजन के दौरान 40 से अधिक प्रयोगों को बनवाया गया।

ई-बूटाथॉन (e-BOOTATHON):

COVID-19 संकट के दौरान जहां डिजिटल प्लेटफॉर्म काफी महत्वपूर्ण हो गए हैं। बूटाथॉन प्रोग्राम अपने नए संस्करण के साथ आया है जिसे ई-बूटाथॉन नाम दिया गया जो की ऑनलाइन कार्यशालाओं के माध्यम से संचालित किया गया। ई-बूटाथॉन एक सीखने और सह-प्रतियोगिता पर आधारित दृष्टिकोण का अनुसरण करता है जहां छात्र न केवल सीखते हैं, बल्कि आभासी प्रयोगशाला प्रयोगों को विकसित करने के लिए अन्य प्रतिभागियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने का मौका भी पाते हैं। इससे प्रतिभागी को अपनी प्रेरणा, उत्पादकता और प्रदर्शन को बढ़ाने में सहायता मिलती है।

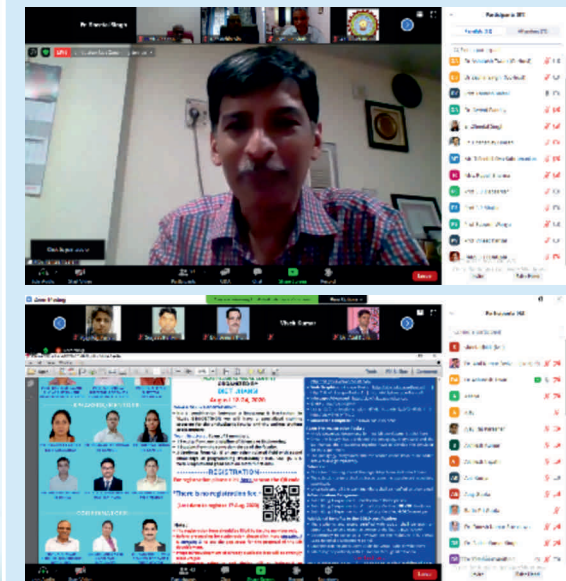
डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय लखनऊ एवं आई. आई. टी. कानपुर के संयुक्त तत्वावधान में राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज बांदा का सात दिवसीय ई-बूटाथॉन 01 कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। उदघाटन समारोह में डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय लखनऊ के कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक जी ने कहा कि वर्चुअल लैब और वर्चुअल क्लास आज के समय की मांग है। महामारी के समय प्रायोगिक पाठ्यक्रमों के पठन-पाठन का एक मात्र विकल्प है।

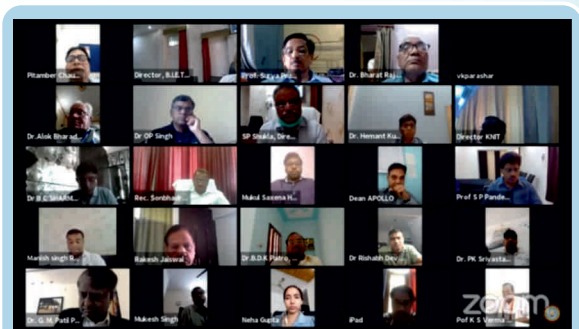
राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज बांदा के निदेशक प्रो. एस. पी. शुक्ला जी ने ई - बूटाथॉन 01 के विभिन्न पहलुओं और विशेषताओं से परिचय कराया। प्रो. शुक्ला ने बताया कि वर्चुअल लैब के प्रचार-प्रसार एवं निर्माण के लिए कुलपति के दिशा निर्देश में **इस वर्ष अप्रैल में वर्चुअल लैब प्रकोष्ठ की स्थापना की गई**। इस प्रकोष्ठ के माध्यम से लोगों में जागरूकता लाने के लिए कई वेबिनार का आयोजन किया गया। सात दिवसीय ई-बूटाथॉन प्रतियोगिता छः चरणों की है, जिसमें 43 टीमों ने प्रतिभाग किया। प्रत्येक टीम में पांच सदस्य थे। इसमें से चार विद्यार्थी और एक शिक्षक थे। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को वर्चुअल लैब का निर्माण करना भी सिखाया गया। एक एक्सपेरिमेंट (प्रयोग) का निर्माण करने वाली प्रतियोगी टीम को सर्टिफिकेट ऑफ पार्टिसिपेशन, दो निर्माण करने वाली टीम को सिल्वर सर्टिफिकेट और जो प्रतियोगी टीम तीन एक्सपेरिमेंट का निर्माण करने में सफल हुई उसे गोल्ड सर्टिफिकेट प्रदान किया गया। कार्यक्रम के पहले दिन के इस अवसर पर लखनऊ के डीन प्रोफेसर सुबोध वैरिया ने आने वाले सत्र में विद्यालय-लैब के एक्सपेरिमेंट्स अब वर्चुअल लैब के माध्यम से होने की संभवना जताई। आई. आई. टी. कानपुर के प्रोफेसर कांतेश बलानी द्वारा वर्चुअल लैब के उपयोग और निर्माण के बारीकियों पर प्रकाश डाला गया। ए. के. टी. यू.

लखनऊ के प्रो. वाईस चांसलर विनीत कंसल व आई. आई. टी. कानपुर के प्रोफेसर योगेश जोशी ने परीक्षा के परपेक्ष्य में वर्चुअल लैब और प्रतियोगिता के विभिन्न पहलुओं को समझाया। ए. के. टी. यू. वर्चुअल लैब सेल के सह संयोजक डा. आशुतोष तिवारी, डी. बी. ए. टी. यू. लोनेरे महाराष्ट्र के प्रो. एस.बी. देओसरकार (संस्थान के परियोजना निदेशक, TEQIP-III), आई. ई. टी. लखनऊ के डॉ. सचिन सिंह (एन. ओ. ए., TEQIP-III ए. के. टी. यू.) एवं डॉ. ब्रजेश अय्यर (डी. बी. ए. टी. यू. लोनेरे महाराष्ट्र) ने समापन पर सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के दौरान डा. संगीता अरोरा, डा. आशुतोष तिवारी, डा. अरविन्द्र कुमार पांडेय, धनंजय उमराव, शीतल सिंह, प्रवीण, डॉ. अनुराग चौहान, अजय राज पराशर, रूपाली शर्मा, डॉ. रमेश शर्मा, नीलम रावत, टी. शिवा सेंथिल सुब्रमणियन आदि उपस्थित रहे।

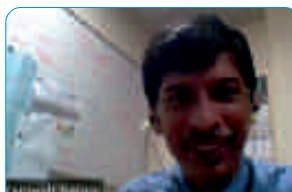
अब तक आयोजित ई-बूटाथॉन सह-प्रतियोगिता निम्नलिखित हैं..

1. ई. बूटाथॉन-01 समारोह (अगस्त 04.10.2020)
2. ई. बूटाथॉन-02 समारोह (अगस्त 18-24, 2020)
3. ई. बूटाथॉन-03 समारोह (अगस्त 27-सितंबर 02, 2020)
4. ई. बूटाथॉन-04 समारोह (सितंबर 10-16, 2020)





Developed Virtual lab Simulator



प्रो. कांतेश बलानी, (मुख्य
जाँचकर्ता वर्चुअल लैब
प्रकोष्ठ, आई. आई. टी.
कानपुर)



प्रो. योगेश जोशी.
(उपाध्यक्ष, आई. एन. ऐ.
ई. कानपुर चौपट)



प्रो. एस.पी. शुक्ला,
(निदेशक, राजकीय
इंजीनियरिंग कॉलेज
बाँदा)



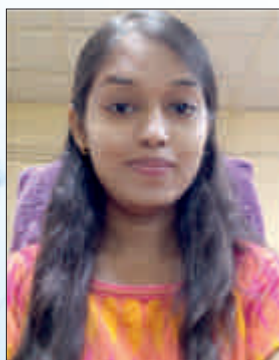
डॉ. आशुतोष तिवारी, (डीन
पी. जी., राजकीय
इंजीनियरिंग कॉलेज बाँदा)

चित्र.- ई – बूटाथॉन समारोह (अगस्त ०४-१०, २०२०), आई. आई. टी. कानपुर.

(<https://ebootathon.com>)



प्रोफेसर कांतेश बलानी
(पदार्थ विज्ञान और
अभियांत्रिकी विभाग)
मुख्य जाँचकर्ता, वर्चुअल लैब,
आई. आई. टी. कानपुर



शीतल सिंह
(वरिष्ठ परियोजना सहयोगी)
वर्चुअल लैब, आई. आई. टी.
कानपुर



धनंजय उमराव
(परियोजना अभियंता)
वर्चुअल लैब, आई. आई. टी.
कानपुर

विरासत अंतस पत्रिका का स्थायी स्तम्भ है, जिसे पाठकों ने बहुत पसंद किया है। मूल रूप से हम इस स्तम्भ में उन कालजयी रचनाओं को पाठकों के समक्ष रखते हैं जिन्होंने अपने कथ्य, शिल्प और भाव-भंगिमा से पाठकों के मन मस्तिष्क पर कई दशकों तक राज किया है।

इस अंक में 1915 में रचित हिंदी साहित्य की प्रथम पूर्ण कहानी के रूप में ख्याति-प्राप्त "उसने कहा था" को शामिल किया गया है। इस कहानी के रचनाकार सम्पादक के साथ-साथ प्रसिद्ध निबंधकार और कहानीकार श्री चंद्रशर्मा 'गुलेरी' जी हैं। यह कहानी आज की तरह किसी तरह के आधुनिक प्रेम-प्रदर्शन से इतर सदह-प्रसूत भावनाओं से सिक्त नैसर्गिक प्रेम की अभिव्यक्ति है। 100 वर्षों से अधिक बीत जाने के बाद भी इस कहानी के बारे में कभी प्रखर आलोचक स्वर्गीय नामवर सिंह ने कहा था "इस कहानी का समुचित मूल्यांकन होना अभी बाकी है और इसे अभी और समझे और पढ़े जाने की आवश्यकता है।"

उसने कहा था

बड़े-बड़े शहरों में इक्के-गाड़ीवालों की ज़बान के कोड़ों से जिनकी पीठ छिल गयी है और कान पक गये हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसर के बम्बूकार्टवालों की बोली का मरहम लगावें। जब बड़े-बड़े शहरों की चौड़ी सड़कों पर घोड़े की पीठ को चाबुक से धुनते हुए इक्केवाले कभी घोड़ों की नानी से अपना निकट सम्बन्ध स्थित रखते हैं, कभी राह चलते पैदलों की आंखों के न होने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैरों की अंगुलियों के पोरों को चिथकर अपने ही को सताया हुआ बताते हैं और संसार-भर की ग्लानि, निराशा और क्षोभ के अवतार बने नाक की सीध चले जाते हैं, तब अमृतसर में उनकी बिरादारीवाले, तंग, चक्करदार गलियों में, हर एक लड़कीवाले के लिए ठहरकर, सब्र का समुद्र उमड़ाकर, 'बचो खालसाजी', 'हटो भाईजी', 'ठहरना भाई', 'आने दो लालाजी', 'हटो बाछा' कहते हुए सफेद फेंटों खच्चरों और बल्लखों, गन्ने, खोमचे और भारे-वालों के जंगल में राह खेतें हैं। क्या मजाल है कि 'जी' और 'साहब' बिना सुने किसी को हटना पड़े। यह बात नहीं कि उनकी जीभ चलती ही नहीं, चलती है, पर मीठी छुरी की तरह महीन मार करती हई। यदि कोई बुढ़िया बार-बार चितौनी देने पर भी लीक से नहीं हटती, तो उनकी वचनावली के ये नमूने हैं-हट जा जीण जोगिये, हट जा करमां वालिये, हट जा पुतां प्यारिये, बच जा लम्बी बालिये। समशिट में इसके अर्थ हैं कि तू जीने योग्य है, तू भाग्य वाली है, पुत्रों को प्यारी है, लम्बी उमर तेरे सामने है, तू क्यों मेरे पहिये के नीचे आना चाहती है? बच जा।

ऐसे बम्बूकार्टवालों के बीच में से होकर एक लड़का और एक लड़की चौक की दुकान पर आ मिले। उसके बालों और इसके ढीले सुथने से जान पड़ता था कि दोनों सिख हैं। वह अपने मामा के केश धोने के लिए दही लेने आया था और यह रसोई के लिए बड़ियां। दुकानदार एक परदेसी से गुथ रहा था, जो सेर-भर गीले पापड़ों की गड्डी को गिने बिना नहीं हटता था।

'तेरे घर कहां है?'

'नगरे में, और तेरे?'

'मांझे में, यहां कहां रहती है?'

'अतरसिंह की बैठक में, वह मेरे मामा होते हैं।'

'में भी मामा के यहां आया हूं, उनका घर गुरु बाज़ार में है।'

इतने में दुकानदार निबटा और इनका सौदा देने लगा। सौदा लेकर दोनों साथ-साथ चले। कुछ दूर जाकर लड़के ने मुस्कराकर पूछा- 'तेरे कुड़माई हो गयी।' इस पर लड़की कुछ आंखें चढ़ाकर 'धत्' कहकर दौड़

गयी और लड़का मुंह देखता रह गया।

दूसरे-तीसरे दिन सब्जीवाले के यहां, दूधवाले के यहां, अकरमात् दोनों मिल जाते। महीना-भर यही हाल रहा। दो-तीन बार लड़के ने फिर पूछा- 'तेरी कुड़माई हो गयी?' और उत्तर वही 'धत्' मिला। एक दिन जब फिर लड़के ने वैसे ही हंसी में चिढ़ाने के लिए पूछा, तो लड़की, लड़के की सम्भावना के विरुद्ध बोली- 'हां, हो गयी।' 'कब?'

कल, देखते नहीं - यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू।' लड़की भाग गयी। लड़के ने घर की राह ली। रास्ते में एक लड़के को मोरी में ढकेल दिया, एक छाबड़ीवाले की दिन-भर की कमाई खोयी, एक कुत्ते को पत्थर मारा और एक गोभीवाले के ठेले में दूध उंडेल दिया। सामने नहाकर आती हुई किसी वैशणवी से टकराकर अन्धे की उपाधि पायी। तब कहीं घर पहुंचा।

'राम राम, यह भी कोई लड़ाई है। दिन-रात खन्दकों में बैठे हड़िडयां अकड़ गयीं। लुधियाने से दस गुना जाड़ा, और मेह और बर्फ ऊपर से। पिंडलियों तक कीचड़ में धंसे हुए हैं। गनीम कहीं दिखता नहीं - घण्टे-दो घण्टे में कान के परदे फाड़ने वाले धमाके के साथ सारी खन्दक हिल जाती है और सौ-सौ गज धरती उछल पड़ती है। इस गैबी गोले से बचे, तो कोई लड़े। नगरकोट का जलजला सुना था। यहां दिन में पच्चीस जलजले होते हैं। जो कहीं खन्दक से बाहर साफा या कुहनी निकल गयी, तो चटाक से गोली लगती है। न मालूम, बेईमान मिट्टी में लेटे हुए हैं या घास की पत्तियों में छिपे रहते हैं।'

'लहनासिंह, और तीन दिन हैं। चार तो खन्दक में बिता ही दिये। परसों 'रिलीफ' आ जायेगी और फिर सात दिन की छुट्टी। अपने हाथें झटका करेंगे और पेट-भर खाकर सो रहेंगे, उसी फिरंगी मेम के बाग में - मखमल का-सा हरा घास है। फल और दूध की वर्षा कर देती है। लाख कहते हैं, दाम नहीं लेती। कहती है - तुम राजा हो, मेरे मुल्क को बचाने आये हो।'

'चार दिन तक पलक नहीं झपकी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाये। फिर सात जर्मनों को अकेला मारकर न लौटू, तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो। पाजी कहीं के, कलों के घोड़े - संगीन देखते ही मुंह फाड़ देते हैं और पैर पकड़ने लगते हैं। यों अंधेरे में तीस-तीस मन का गोला फेंकते हैं। उस दिन धावा किया था - चार मील तक एक जर्मन नहीं छोड़ा था। पीछे, जनरल साहब ने हट आने का कमान दिया, नहीं तो.....'

'नहीं तो सीधे बर्लिन पहुंच जाते। क्यों?' सूबेदार हजारासिंह ने मुस्कराकर कहा, 'लड़ाई के मामले जमादार या नायक के चलाये नहीं चलते। बड़े अफसर दूर की सोचते हैं। तीन सौ मील का सामना है। एक तरफ बढ़ गये, तो क्या होगा?'

'सूबेदारजी, सच है,' लहनासिंह बोला, 'पर करें क्या?'



हड़िडियों—हड़िडियों में तो जाड़ा धंस गया है। सूर्य निकलता नहीं और खाई में दोनों तरफ से चम्बे के बावलियों के—से सोते झर रहे हैं। एक धावा हो जाये, तो गरमी आ जाये।

‘उदमी! उठ, सिगड़ी में कोयले डाल। वजीरा, तुम चार जने बाल्टियां लेकर खाई का पानी बाहर फेंको। महासिंह, शाम को गयी है, खाई के दरवाजे का पहरा बदला दे।’ यह कहते हुए सूबेदार सारी खन्दकमें चक्कर लगाने लगे।

वजीरासिंह पलटन का विदूषक था। बाल्टी में गन्दा पानी भरकर खाई के बाहर फेंकता हुआ बोला— ‘मैं पाधा बन गया हूं। करो जर्मनी के बादशाह का तर्पण।’ इस पर सब खिलखिला पड़े और उदासी के बादल फट गये।

लहनासिंह ने दूसरी बाल्टी भरकर उसके हाथ में देकर कहा— ‘अपनी बाड़ी के खरबूजों में पानी दो। ऐसा खाद का पानी पंजाब—भर में नहीं मिलेगा।’

‘हां, देश क्या है, स्वर्ग है। मैं तो लड़ाई के बाद सरकार से दस घुमा जमीन यहां मांग लूंगा और फलों के बूटे लगाऊंगा।’

‘लाड़ी होरां को भी यहां बुला लोगे? या वह दूध पिलाने वाली फिरंगी मेम...’

‘चुप कर। यहां वालों को शरम नहीं।’

‘देस—देस की चाल है। आज तक उसे मैं समझा न सका कि सिख तम्बाकू नहीं पीते। वह सिगरेट देने में हठ करती है, होठों में लगाना चाहती है, और मैं पीछे हटता हूं, तो समझती है कि राजा बुरा मान गया, अब मेरे मुल्क के लिए लड़ेगा नहीं।’

‘अच्छा, अब बोधासिंह कैसा है?’

‘अच्छा है।’

जैसे मैं जानता ही न होऊं। रात—भर तुम अपने दोनों कम्बल उसे उढ़ाते हो और आप सिगड़ी के सहारे गुजर करते हो। उसके पहरे पर आप पहरा दे आते हो। अपने सूखे लकड़ी के तख्तों पर उसे सुलाते हो, आप कीचड़ में पड़े रहते हो। कहीं तुम न मांदे पड़ जाना। जाड़ा क्या है, मौत है, और ‘निमोनिया’ से मरनेवालों को मुरब्बे नहीं मिला करते।’

‘मेरा डर मत करो। मैं तो बुलेल के खड़ड के किनारे मरूंगा। भाई कीरतसिंह की गोदी पर मेरा सिर होगा और मेरे हाथ से लगाये हुए आंगन के आम के पेड़ की छाया होगी।’

वजीरासिंह ने त्योरी चढ़ाकर कहा— ‘क्या मरने—मारने की बात लगायी है? मरें जर्मन और तुरक! हां भाड़यो, कुछ गाओ। हाँ कैसे—दिल्ली शहर ते पिशोर नु जादिये, कर लेणा लौंगाँ दा बपार मड़िये, कर लेणा नाड़ेदा सौदा अड़िये—(ओय) लाणा चटका कदुए नूं। कदू बणयाए मजेदार गोरिये। हुण लाणा चटका कदुए नूं।’

कौन जानता था कि दाढ़ियों वाले, घरबारी सिख ऐसा लुच्चों का गीत गायेंगे। पर सारी खन्दक इस गीत से गूँज उठी और सिपाही फिर ताजे हो गये, मानो चार दिन से सोते और मौज ही करते रहे हों।

दो पहर रात गयी है। अंधेरा है। सन्नाटा छाया हुआ है। बोधासिंह खाली बिस्कुटों के तीन टिनों पर अपने दोनों कम्बल बिछाकर और लहनासिंह

के दो कम्बल और एक बरानकोट ओढ़कर सो रहा है। लहनासिंह पहरे पर खड़ा हुआ है। एक आँख खाई के मुख पर है और एक बोधासिंह के दुबले शरीर पर। बोधासिंह कराहा।

‘क्यों बोधासिंह भाई, क्या है?’

‘पानी पिला दो।’

लहनासिंह ने कटोरा उसके मुंह से लगाकर पूछा, ‘कहो, कैसे हो?’ पानी पीकर बोधा बोला, ‘कंपनी छूट रही है। रोम—रोम में तार दौड़ रहे हैं। दांत बज रहे हैं।’

‘अच्छा, मेरी जरसी पहन लो?’

‘और तुम?’

‘मेरे पास सिगड़ी है और मुझे गरमी लगती है, पसीना आ रहा है।’

‘ना, मैं नहीं पहनता, चार दिन से तुम मेरे लिए...’

‘हां, याद आया। मेरे पास दूसरी गरम जरसी है। आज सवेरे ही आयी है। विलायत से मेमें बुन—बुनकर भेज रही हैं। गुरु उनका भला करें।’ यों कहकर लहना अपना कोट उतारकर जरसी उतारने लगा।

सच कहते हो?’

‘और नहीं झूठ?’ यों कहकर, नहीं करते बोधा को उसने जबरदस्ती जरसी पहना दी और आप खाकी कोट और जीन का कुरता—भर पहनकर पहरे पर खड़ा हुआ।

मेम की जरसी की कथा केवल कथा थी।

आधा घण्टा बीता। इतने में खाई के मुंह से आवाज आयी, ‘सूबेदार हजारासिंह।’

‘कौन, लपटन साहब?’ हुक्म हजूर, कहकर सूबेदार तनकर फौजी सलाम करके सामने खड़ा हुआ।

‘देखो, इसी समय धावा करना होगा। मील—भर की दूरी पर, पूरब के कोने में एक जर्मन खाई है। उसमें पचास से जियादह जर्मन नहीं हैं। इन पेड़ों के नीचे—नीचे दो खेत काटकर रास्ता है। तीन—चार घुमाव हैं। जहां मोड़ है, वहां पन्द्रह जवान खड़े कर आया हूं। यहां दस आदमी छोड़कर सबको साथ ले, उनसे जा मिलो। खन्दक छीनकर वहीं जब तक दूसरा हुक्म न मिले, डटे रहो। हम यहां रहेगा।’

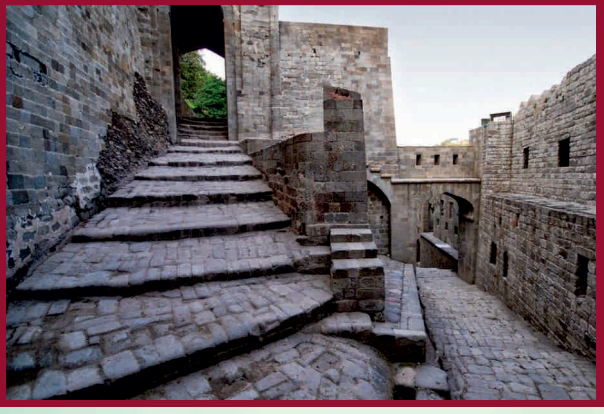
‘जो हुक्म।’

चुपचाप सब तैयार हो गये। बोधा भी कम्बल उतारकर चलने लगा। तब लहनासिंह ने उसे रोका। लहनासिंह आगे हुआ, तो बोधा के बाप सूबेदार ने उंगली से बोधा की ओर इशारा किया। लहनासिंह समझकर चुप हो गया। पीछे दस आदमी कौन रहें, इस पर बड़ी हुज्जत हुई। कोई रहना न चाहता था। समझा—बुझाकर सूबेदार ने मार्च किया। लपटन साहब लहना की सिगड़ी के पास मुंह फेरकर खड़े हो गये और जेब से सिगरेट निकालकर सुलगाने लगे। दस मिनट बाद उन्होंने लहना की ओर हाथ बढ़ाकर कहा—‘लो, तुम पियो।’

आंख मारते—मारते लहनासिंह समझ गया। मुंह का भाव छिपाकर बोला—‘लाओ साहब।’ हांथ आगे करते ही उसने सिगड़ी के उजाले में साहब का मुंह देखा। बाल देखे, तब उसका माथा ठनका। लपटन साहब के पट्टियों वाले बाल एक दिन में कहां उड़ गये और उनकी जगह कैदियों—जैसे कटे हुए बाल कहां से आये?

शायद साहब शराब पीये हैं, और उन्हें बाल कटवाने का मौका मिल गया है? लहनासिंह ने जांचना चाहा, लपटन साहब पांच वर्ष से उनके रेजिमेण्ट में थे।

क्यों साहब, हम लोग हिन्दुस्तान कब जायेंगे?’



‘लड़ाई खत्म होने पर। क्यों, क्या यह देश पसन्द नहीं?’

‘नहीं साहब, शिकार के वे मजे यहां कहाँ? याद है, पार साल नकली लड़ाई के पीछे हम—आप जगाधरी के जिल में शिकार करने गये थे। हां, हां, — वहीं जब आप खोते पर सवार थे और आपका खानसामा अब्दुल रास्ते में एक मन्दिर में जल चढ़ाने को रह गया था—‘बेशक, पाजी कहीं का’—सामने से वह नीलगाय निकली कि ऐसी बड़ी मैंने कभी न देखी थी। और आपकी एक गोली कन्धे में लगी और पुट्टे में निकली। ऐसे अफसर के साथ शिकार खेलने में मजा है। क्यों साहब, शिमले से तैयार होकर उस नील गाय का सिर आ गया था न? आपने कहा था कि रेजिमेण्ट की मैस में लगायेंगे।’

‘हां, पर मैंने वह विलायत भेज दिया।’

‘ऐसे बड़े-बड़े सींग! दो-दो फुट के तो होंगे?’

‘हां, लहनासिंह दो फुट चार इंच के थे। तुमने सिगरेट नहीं पीया?’

‘पीता हूँ साहब, दियासलाई ले आता हूँ।’ कहकर लहनासिंह खन्दक में घुसा। अब उसे सन्देह नहीं रहा था और उसने झटपट निश्चय कर लिया कि क्या करना चाहिए।

अंधेरे में किसी सोने वाले से वह टकराया।

‘कौन, वजीरसिंह?’

‘हां, क्यों लहना? क्या कयामत आ गयी? जरा तो आंख लगने दी होती?’

‘होश में आओ। कयामत आयी है और लपटन साहब की वर्दी पहनकर आयी है।’

‘क्या?’

लपटन साहब या तो मारे गये या कैद हो गये हैं। उनकी वर्दी पहनकर यह कोई जर्मन आया है। सूबेदार ने इसका मुंह नहीं देखा। मैंने देखा है और बातें की हैं। सौहरा साफ उर्दू बोलता है, पर किताबी उर्दू और मुझे पीने को सिगरेट दिया है।’

‘तो अब?’

‘अब मारे गये। धोखा है। सूबेदार कीचड़ में चक्कर काटते फिरेंगे और यहां खाई पर धावा होगा। उधर उन पर खुले में धावा होगा। उठो, एक काम करो। लपटन के पैरों के निशान देखते-देखते दौड़ जाओ। अभी बहुत दूर न गये होंगे। सूबेदार से कहो कि एकदम लौट-आवें। खन्दक की बात झूठ है। चले जाओ, खन्दक के पीछे से निकल जाओ। पत्ता तक न खड़के। देर मत करो।’

‘हुक्म तो यह है कि यहीं...’

‘ऐसी-तैसी हुक्म की। मेरा हुक्म — जमादार लहनासिंह, जो इस वक्त यही सबसे बड़ा अफसर है, उसका हुक्म है। मैं लपटन साहब की खबर लेता हूँ।’

‘पर यहां तो तुम आठ ही हो।’

‘आठ नहीं, दस लाख। एक-एक अकालिया सिख सवा लाख के बराबर होता है। चले जाओ।’

लौटकर खाई के मुहाने पर लहनासिंह दीवार से चिपक गया। उसने

देखा कि लपटन साहब ने जेब से बेल के बराबर तीन गोले निकाले। तीनों को जगह-जगह खन्दक की दीवार में घुसेड़ दिया और तीनों में एक तार-सा बांध दिया। तार के आगे सूत की एक गुत्थी थी, जिसे सिगड़ी के पास रखा। बाहर की तरफ जाकर एक दियासलाई जलाकर गुत्थी पर रखने...

बिजली की तरह दोनों हाथों से उलटी बन्दूक को उठाकर लहनासिंह ने साहब की कुहनी पर तानकर दे मारा। धमाके के साथ साहब के हाथ से दियासलाई गिर पड़ी। लहनासिंह ने एक कुन्दा साहब की गरदन पर मारा और साहब ‘आंख मीन गाट्ट’ (जर्मन, ओह माई गॉड) कहते हुए चित्त हो गये। लहनासिंह ने तीनों गोले बीनकर खन्दक के बाहर फेंके और साहब को घसीटकर सिगड़ी के पास लिटाया। जेबों की तलाशी ली। तीन-चार लिफाफे और एक डायरी निकालकर उन्हें अपनी जेब के हवाले किया।

साहब की मूर्छा हटी। लहनासिंह हंसकर बोला, ‘क्यों लपटन साहब, मिजाज कैसा है? आज मैंने बहुत बातें सीखीं। यह सीखा कि सिख सिगरेट पीते हैं। यह सीखा कि जगाधरी के जिले में नीलगायें होती हैं और उनके दो फुट चार इंच के सींग होते हैं। यह सीखा कि मुसलमान खानसामा मूर्तियों पर जल चढ़ाते हैं, और लपटन साहब खोते पर चढ़ाते हैं। पर यह तो कहो कि ऐसी साफ उर्दू कहां से सीख आये? हमारे लपटन साहब तो बिना ‘डेम’ के पांच लफज नहीं बोला करते थे। लहना ने पतलून के जेबों की तलाशी नहीं ली थी। साहब ने मानो जाड़े से बचने के लिए, दोनों हाथ जेब में डाले।

लहनासिंह कहता गया—‘चालाक तो बड़े हो, पर मांझे का लहना इतने बरस लपटन साहब के साथ रहा है। उसे चकमा देने के लिए चार आंखे चाहिए। तीन महीने हुए, एक तुरकी मौलवी मेरे गांव में आया था। औरतों को बच्चे होने के तावीज बांटता था और बच्चों को दवाई देकर जाता था। चौधरी के बड़ के नीचे मंजा बिछाकर हुक्का पीता रहता था और कहता था कि जर्मनी वाले बड़े पंडित हैं। वेद पढ़-पढ़कर उनमें से विमान चलाने की विद्या जान गये हैं। गौ को नहीं मारते। हिन्दुस्तान में आ जायेंगे, तो गोहत्या बन्द कर देंगे। मण्डी के बनियों को बहकाता था कि डाकखाने से रुपये निकाल लो, सरकार का राज जाने वाला है। डाकबाबू पोल्हूराम भी डर गया था। मैंने मुल्लाजी की डाढ़ी मूंड दी थी और गांव से बाहर निकालकर कहा था कि जो मेरे गांव में अब पैर रखा, तो...’

साहब के जेब में से पिस्तौल चला और लहना की जांघ में गोली लगी। इधर लहना की हैनरी मार्टिनी के दो फायरों ने साहब की कपाल-क्रिया कर दी। धड़का सुनकर सब दौड़ आये।

बोध चिल्लाया—‘क्या है?’

लहनासिंह ने उसे तो यह करकर सुला दिया कि ‘एक हड़का हुआ कुत्ता आया था, मार दिया’ और औरों से सब हाल कह दिया। सब बन्दूकें लेकर तैयार हो गये। लहना ने साफा फाड़कर घाव के दोनों तरफ कसकर पट्टी बांधी। घाव मांस में ही था। पट्टियों के कसने से लहू निकलना बन्द हो गया।

इतने में सत्तर जर्मन चिल्लाकर खाई में घुस पड़े। सिक्खों की बन्दूकों की बाढ़ ने पहले धावे को रोका। दूसरे को रोका। पर यहां थे आठ (लहनासिंह तक-तककर मार रहा था — वह खड़ा था, और लेते हुए थे) और वे सत्तर। अपने मुर्दा भाइयों के शरीर पर चढ़कर जर्मन आगे घुस आते थे। थोड़े से मिनटों में वेकू अचानक आवाज़ आयी—‘वाह गुरुजी की फतह! वह गुरुजी का खालसा!’ और धड़ाधड़ बन्दूकों के फायर जर्मनों की पीठ पर पड़ने लगे। ऐन मौके पर जर्मन दो चक्की के पाटों के बीच में आ गये। पीछे से सूबेदार हजारासिंह के जवान आग बरसाते थे और सामने लहनासिंह के साथियों के संगीन चल रहे थे। पास आने पर पीछेवालों ने भी संगीन पिरोना शुरू कर दिया।

एक किलकारी और—अकाल सिक्रखां दी फौज आयी! वाह गुरुजी दी फतह! वाह गुरुजी दा खालसा। सत श्री अकाल पुरुख!!! और लड़ाई खत्म हो गयी। तिरसठ जर्मन या तो खेत रहे थे ये कराह रहे थे। सिक्रखों में पन्द्रह के प्राण गये। सूबेदार के दाहिने कन्धे में से गोली आर—पार निकल गयी। लहनासिंह की पसली में एक गोली लगी। उसने घाव को खन्दक की गीली मिट्टी से पूर लिया और बाकी का साफा कसकर कमरबन्द की तरह लपेट लिया। किसी को खबर न हुई कि लहना को दूसरा घाव — भारी घाव लगा है।

लड़ाई के समय चांद निकल आया था। ऐसा चांद, जिसके प्रकाश से संस्कृत कवियों का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है और हवा ऐसी चल रही थी जैसी कि बाणभट्ट की भाशा में 'दन्तवीणोपदेशाचार्य' कहलाती। वजीरासिंह कह रहा था कि कैसे मन—मन भर फ्रांस की भूमि मेरे बूटों से चिपक रही थी, जब मैं दौड़ा—दौड़ा सूबेदार के पीछे गया था। सूबेदार लहनासिंह के सारे हाल सुन और कागजात पाकर उसकी तुरन्त—बुद्धि को सराह रहे थे और कह रहे थे कि तू न होता, तो आज सब मर जाते।

इस लड़ाई की आवाज तीन मील दाहिनी ओर के खाईवालों ने सुन ली थी। उन्होंने पीछे टेलीफोन कर दिया था। वहां से झटपट दो डॉक्टर और दो बीमार ढोने की गाड़ियां चलीं, जो कोई डेढ़ घण्टे के अन्दर—अन्दर आ पहुंची। फील्ड अस्पताल नज़दीक था। सुबह होते—होते वहां पहुंच जायेंगे। इसलिए मामूली पट्टी बांधकर एक गाड़ी में घायल लिटाये गये और दूसरी में लाशें रखी गयीं। सूबेदार ने लहनासिंह की जांघ में पट्टी बंधवानी चाही। पर उसने यह कहकर टाल दिया कि थोड़ा घाव है, सवरे देखा जायेगा। बोधासिंह ज्वर में बर्बाद रहा था। वह गाड़ी में लिटाया गया। लहना को छोड़कर सूबेदार जाते नहीं थे। यह देख लहना ने कहा—'तुम्हें बोधा की कसम है और सूबेदारनी जी की सौगन्ध, जो इस गाड़ी में न चले जाओ।'

'और तुम।'

'मेरे लिए वहां पहुंचकर गाड़ी भेज देना। और जर्मन मुर्दों के लिए भी तो गाड़ियां आती होंगी। मेरा हाल बुरा नहीं। देखते नहीं, मैं खड़ा हूँ? वजीरासिंह मेरे पास है ही।'

'अच्छा, पर...'

बोधा गाड़ी पर लेट गया? भला आप भी चढ़ जाओ। सुनिये तो, सूबेदारनी होरां को चिट्ठी लिखो, तो मेरा मत्था टेकना लिख देना। और जब घर जाओ, तो कह देना की मुझसे जो उसने कहा था, वह मैंने कर दिया।'

गाड़ियां चल पड़ी थीं। सूबेदार ने चढ़ते—चढ़ते लहना का हाथ पकड़कर कहा, 'तैने मेरे और बोधा के प्राण बचाये हैं। लिखना कैसा? साथ ही घर चलेंगे। अपनी सूबेदारनी को तू ही कह देना। उसने क्या कहा था?'

'अब आप गाड़ी पर चढ़ जाओ। मैंने जो कहा, वह लिख देना और कह भी देना।'

गाड़ी के जाते ही लहना लेट गया। 'वजीरा, पानी पिला दे और मेरा कमरबन्द खोल दे। तर हो रहा है।'

मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती है। जन्म—भर की घटनाएं एक—एक करके सामने आती हैं। सारे दृश्यों के रंग साफ हो जाते हैं, समय की धुन्ध बिल्कुल उन पर से हट जाती है।

लहनासिंह बारह वर्ष का है। अमृतसर में मामा के यहां आया हुआ है। दहीवाले के यहां, सब्जीवाले के यहां, हर कहीं उसे एक आठ वर्ष की लड़की मिल जाती है। जब वह पूछता है—'तेरी कुड़माई हो गयी', तब वह 'धत्' कहकर भाग जाती है। एक दिन उसने वैसे ही पूछा, तो उसने कहा, 'हां कल हो गयी, देखते नहीं यह रेशम के फूलों वाला सालू?' सुनते ही लहनासिंह को दुःख हुआ। क्रोध हुआ। क्यों हुआ? 'वजीरासिंह, पानी पिला दे।'

पच्चीस वर्ष बीत गये। अब लहनासिंह नं. 77 राइफल्स में जमादार हो गया है। उस आठ वर्ष की कन्या का ध्यान ही न रहा। न मालूम वह कभी

मिली थी, या नहीं। सात दिन की छुट्टी लेकर ज़मीन के मुकदमे की पैरवी करने वह अपने घर गया। वहां रेजिमेंट के अफसर की चिट्ठी मिली थी कि मैं और बोधासिंह भी लाम पर जाते हैं। लौटते हुए हमारे घर होते जाना। साथ चलेंगे। सूबेदार का गांव रास्ते में पड़ता था और सूबेदार उसे बहुत चाहता था। लहनासिंह सूबेदार के यहां पहुंचा।

जब चलने लगे, तब सूबेदार बेड़ में से निकल आया। बोला, 'लहना, सूबेदारनी तुमको जानती है। बुलाती है, जा मिल आ।' लहनासिंह भीतर पहुंचा। सूबेदारनी मुझे जानती है? कब से? रेजिमेंट के क्वार्टरों में तो कभी सूबेदार के घर के लोग रहे नहीं। दरवाज़े पर जाकर मत्था टेकना कहा, असीस सुनी। लहनासिंह चुप।

'मुझे पहचाना?'

'नहीं'

'तेरी कुड़माई हो गयी? धत् कल हो गयी,— देखते नहीं रेशमी बूटोंवाला सालू— अमृतसर में—'

भावों की टकराहट से मूर्छा खुली। करवट बदली। पसली का घाव बह निकला।

'वजीरा पानी पिला,' उसने कहा था।

स्वप्न चल रहा है। सूबेदारनी कह रही है, 'मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया था। एक काम कहती हूँ। मेरे तो भाग ही फूट गये। सरकार ने बहादुरी का खिताब दिया है, लायलपुर में ज़मीन दी है, आज नमकहलाली का मौका आया है। पर सरकार ने हम तीमियों की इस घघरिया पलटन क्यों न बना दी, जो मैं भी सूबेदारजी के साथ चली जाती? एक बेटा है। फौज में भर्ती हुए उसे एक ही बरस हुआ। उसके पीछे चार और हुए, और एक भी न जिया।' सूबेदारनी रोने लगी।

'अब दोनों चले जाते हैं। मेरे भाग! तुम्हें याद है, एक दिन तांगेवाले का घोड़ा, दहीवाले की दुकान के पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाये थे। आप घोड़ों की लातों में चले गये थे और मुझे उठाकर दुकान के तख्ते पर खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना। यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे में आंचल पसारी हूँ।'

रोती—रोती सूबेदारनी ओबरी में चली गयी। लहना भी आंसू पोंछता हुआ बाहर आया।

'वजीरासिंह पानी पिला,' उसने कहा था।

लहना का सिर अपनी गोद में रखे वजीरासिंह बैठा है। जब मांगता है, तब पानी पिला देता है। आठ घण्टे तक लहना चुप रहा, फिर बोला— कौन? कीरतसिंह?'

वजीरा ने कुछ समझकर कहा, 'हां।'

'भैया मुझे और ऊंचा कर ले। अपने पट्ट पर मेरा सिर रख ले।' वजीरा ने वैसे ही किया।

'हां, अब ठीक है। पानी पिला दे। बस, अब के हाड़ में यह आम खूब फलेगा। चाचा—भतीजा दोनों यहीं बैठकर आम खाना। जितना बड़ा तेरे भतीजा है, उतना ही यह आम है। जिस महीने उसका जन्म हुआ था, उसी महीने में मैंने इसे लगाया था।'

वजीरासिंह के आंसू टप—टप टपक रहे थे।

कुछ दिन पीछे लोगों ने अखबारों में पढ़ा — फ्रांस और बेलजियम — 68वीं सूची — मैदान में घावों से मरा, नं. 77 सिख राइफल्स जमादार लहनासिंह।

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'



अतिथि रचनाकार

लोकगीत : मानव हृदय के सहज उद्गार

मानव—जीवन के विभिन्न पक्षों की सरल और स्वाभाविक अभिव्यक्ति लोकगीतों में जितनी मिलती है, उतनी और किसी में नहीं। इन दृष्टियों से लोकगीत का महत्व और बढ़ जाता है। चूंकि लोक साहित्य किसी देश के सामाजिक—सांस्कृतिक इतिहास का मौखिक दस्तावेज होता है। इसमें समस्त लोक जीवन का सुख—दुःख, हर्ष—विषाद, आशा—निराशा रूप प्रतिबिम्बित होता है। लोक साहित्य की प्रमुख विधाओं में लोकगीत का स्थान सर्वोपरि है। लोकगीतों में मानव सभ्यता व संस्कृति का रूप अंकित रहता है। डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल ने कहा है कि 'लोकगीत किसी संस्कृति के मुंह बोलते चित्र हैं।' वास्तव में लोकगीत मानव हृदय के सहज उद्गार हैं जो वह सुख में उल्लासित होकर, दुःख में दुःखी होकर समय—समय पर अभिव्यक्त किया करता है। इन गीतों की परम्परा मौखिक होती है। समाज की अमूल्य एवं अनुपम निधि है। इन लोकगीतों में हमारे समाज के विविध क्रिया—कलापों, विभिन्न अवस्थाओं, प्राकृतिक गतिविधियों व सामूहिक रूपरेखा, राजनीतिक चेतना, जीवन के संघर्ष, हर्ष—उल्लास साथ ही लय—ताल व सुर का हृदय ग्राही रूप देखने को मिलता है।

भोजपुरी, अवधी, बुंदेली लोकगीतों का भंडार अत्यंत समृद्ध होने के कारण महात्मा गांधी से जुड़े लोकगीत आसानी से मिल जाते हैं लेकिन मैथिली और ब्रज भाषा के लोकगीतों में गांधी गीत की कमी महसूस की जाती है। इसके संबंध में जब लोगों से बातचीत हुई तो कई लोगों ने बताया कि चंपारण आंदोलन के कारण गांधी जी का आगमन भोजपुरी अंचल में हुआ तो लोगों ने उनके आगवानी में गीतों की रचना कर गाना शुरू कर दिया। गांधीजी के प्रति लोगों के दिल में जो प्यार, सम्मान था, वहीं लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त होता रहा। वैसे बुंदेली लोकगीतों में गांधी के बारे में भोपाल निवासी कपिल तिवारी बताते हैं कि बुंदेलखंड में गांधी जी अनेक बार आये थे। उस समय गांधीजी के आगवानी में अनेक जगहों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते थे, उन कार्यक्रमों में गांधी आधारित गीत गाये जाते थे, जो बाद में आमलोगों के कंठ का स्वर बन जाते हैं।

लोकगीत समाज और संस्कृति की अनमोल धरोहर है। एक बुंदेली लोकगीत में आजादी को सुशोभित करने वाले गांधी जी नंगे पांव लम्बी पैदल यात्रा कर लेते हैं। वे हर मौसम में आंधी की तरह तेज चलते, सूखे ठठरे के समान दुबले—पतले दिखते, उनमें स्फूर्ति—जोश हमेशा रहता है। उदाहरण के रूप में यह लोकगीत देखें—

आजादी के तिलक —सहोदर
जब आये गांधी बब्बा
आंधी जैसे चले हवा में
लांघे पैदल पथ—लम्बा
जब आये गांधी बब्बा
दुबरे—पतले लगे ठठरे
सेर के उपर हो सब्बा
जब आये गांधी बब्बा
निरमल मन समता की मूरत
राम—रहिम लगे रब्बा

जब आये गांधी बब्बा
जिनकी सत्य—अहिंसा चादर
नहीं है कोई धब्बा
जब आये गांधी बब्बा
राष्ट्रपिता—बापू—महात्मा
देश के जो हो गये अब्बा
जब आये गांधी बब्बा
लाल गुलेदे—गोरे बांके
गए बजाऊत खाली उब्बा
जब आये गांधी बब्बा

(आजादी को सुशोभित करने वाले श्रेष्ठ सहयोगी गांधीजी नंगे पांव लम्बी पैदल यात्रा कर लेते हैं। वे हर मौसम में आंधी की तरह तेज चलते सूखे ठठरे के समान दुबले—पतले दिखते, उनमें अधिक स्फूर्ति—जोश था। यदि ब्रिटिश सरकार सेर थी तो वे उस पर भार सवा सेर की तरह थे। गांधीजी सभी को एक समान देखते उनका मन निष्कपट—पवित्र था। जनमानस को वे राम—रहीम—भगवान की तरह थे। सत्य—अहिंसा उनके मनो—भवनाओं की साफ—स्वच्छ चादर की तरह थी। जिस पर कहीं कोई भी धब्बा नहीं था। गांधीजी, बापू, राष्ट्रपिता कहलाते किन्तु वे तो देश को गौरव प्रदान करने वाले व्यक्तित्व हो गये। गोरे रंग के सुन्दर अंग्रेज जो गुलेदे की तरह लाल रंग के थे। वे गांधी के भय से देश छोड़ कर अपना साज—समान लेकर भाग गये।)

अवध क्षेत्र में गांधी गीत की उपलब्धता पर उत्तर प्रदेश हिंदी साहित्य परिषद के पूर्व निदेशक श्रीमती विंदु विद्या सिंह बताती हैं कि गांधी जी कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लेने के लिए अवध प्रांत का दौरा करते थे। कांग्रेस के कार्यकर्ता गांधी जी के आगवानी में गांधी गीतों का वाचन करते थे। इसके अलावे जयप्रकाश महिला समिति से जुड़ी महिलायें भी विभिन्न संस्कार गीतों के तर्ज पर गांधी गीतों का निर्माण कर सार्वजनिक रूप से गाती रही हैं। इन गीतों में तत्कालिक समाज का चित्रण बारीक से बारीक रूप में हमें प्राप्त होता रहा है। एक गीत प्रस्तुत है—

देख गरीबी टपरिया में
बब्बा रहन लगे झुपड़िया में
मोड़ा—मोड़ी रार करत हैं
नंगे—धुरेंगे उधारे फिरते हैं
गांधीजी ने छोड़ों कपड़ा पहिरवो
बैठे वे घामों—दुपहरिया में
बब्बा रहन लगे झुपड़िया में
कांते वे सूत—कतावें सब खों
खादी—सुदेशी पहिरावे सब खों
सब खों समझावें—आजादी आहे
मंजीरा बजाऊत नगरिया में
ठक दिन गरीबी पे परहे तुषार
आंगन में सबके आहे बहार
धुध के धूआं—लगे जेहे आगी
जर—जुलम की अटरिया में
बब्बा रहन लगे झुपड़िया में

देश की गरीब जनता झोपड़ी में रह रही है। उनकी ऐसी दयनीय हालत देख गांधी जी का दिल भर आया। वे झोपड़ी में रहने लगे। जहां नंगे धूल से लिपटे वस्त्रविहीन बच्चों को रोते देखते हैं, उन्हें देख गांधी जी ने भी वस्त्र पहनना छोड़ दिया है।)



भारतीय जनता का सच्चा रस—उल्लास, आनंद—उत्सव, रीति—रिवाज, लोक परंपराएं, राग—विराग और सुख—दुख की वे अनकही बातें भी, जो हजारों हृदयों में घुमड़ती थीं और फिर चुपके—चुपके किसी ग्रामांचल के लोकगीतों में ढलकर हवा में गूँज उठती थीं। कहने को ये गांव की सीधी—सादी अनपढ़ जनता के गीत थे, पर वे इस देश की महान संस्कृति और हजारों बरस पुरानी लोक परंपराओं के वाहक भी थे, जिनसे इस देश की कोटि—कोटि जनता के मन और आत्मा का साक्षात्कार किया जा सकता था। अलग—अलग भाषाओं में बोलने वाले ग्रामांचलों के ये लोकगीत मिलकर एक ऐसा साझा पुल बनाते थे, जिसे समझे बिना इस महान देश की हजारों बरस पुरानी सभ्यता और संस्कृति को समझना असंभव था। शायद यही वजह थी कि गांधी जी लोकगीतों के संग्रह और उसके विवेचना को आजादी की लड़ाई का एक हिस्सा मानते थे।

जनमानस के मौखिक दस्तावेज के रूप में उपलब्ध गांधी सँ संबंधित लोकगीतों में उनकी आस्था, विश्वास, विचार, रूढ़िया, मान्यतायें, परम्परा, लोक विवेक व लोक मूल्य इत्यादि सन्निहित होते हैं और इन्हीं तत्वों के माध्यम से समाज की स्थिति, वास्तविकताओं को समझा जा सकता है। गांधी जी को केन्द्र में रख कर रची गई लोकगीतों में आजादी के लिए संघर्षरत देश के दीवानों का सच्चा प्रेम, समर्पण, दर्द और जिजीविषा की धून सुनाई पड़ती है।

लोकगीतों में समूची जनता का दुख—दर्द और धरती की आकुल पुकार सुनाई देते हैं। इसीलिए उनके लोक साहित्य संबंधी लेखों में वह चीज आती है, जो महात्मा गांधी को भी अपनी सारी राजनीतिक व्यस्तताओं के बावजूद रस ले—लेकर पढ़ने के लिए तैयार करती है। शायद इसीलिए महात्मा गांधी को देवेन्द्र सत्यार्थी जी का काम देश की आजादी की लड़ाई का एक जरूरी हिस्सा ही लगता था। वे बार—बार इस बात को जोर देकर कहते हैं कि सत्यार्थी जी निरंतर गांव—गांव भटककर, लोकगीतों के संग्रह के जरिए भारत की आत्मा की जो खोज कर रहे हैं, वही तो आजादी की लड़ाई की बुनियादी प्रेरणा है। हम भारत की जिस विशाल जनता के दुख—दर्द की बात करते हैं, उसकी समूची अभिव्यक्ति तो अलग—अलग भाषाओं के लोकगीतों में ही होती है। इसीलिए कांग्रेस का फ़ैजपुर अधिवेशन हुआ तो गांधी जी ने काका कालेलकर को विशेष रूप से भेजकर, देवेन्द्र सत्यार्थी जी को इस महाधिवेशन में भाग लेने के लिए न्योता। इतना ही नहीं, देवेन्द्र सत्यार्थी जी को कांग्रेस के महा अधिवेशन में बुलाया और उनका

सम्मान किया। वहां गांधी जी और बहुत—से अन्य प्रतिनिधियों ने सत्यार्थी जी के काम की खुलकर प्रशंसा की।

‘भारतमाता’ निबंध में सत्यार्थी जी बड़ी बारीकी से गांधी जी के प्रेरणा से रचे चरखा—गीतों के साथ जुड़ी लोक संस्कृति की पड़ताल करते हैं। इन चरखा गीतों में भारतीय महिला की जो अपार आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान छिपा है, उसकी ओर वे बार—बार इंगित करते हैं और बताते हैं कि कुछ निराले देवदूतों की तरह गांधी जी की स्वराज्य की भावना को जन—जन तक पहुंचाने में इन चरखा गीतों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

देश की आजादी के लिए रचे गए लोकगीतों के सम्बन्ध में स्पष्ट कारण जानना जरूरी है। असल में, सबसे मुख्य कारण था अंग्रेजों द्वारा उद्योग—धंधे नष्ट किये जाना, कृषि के लगान पर कब्जा, अपने देश के माल का भारत में बाजार बनाना आदि से अंग्रेजों द्वारा आर्थिक शोषण करने से किसान, मजदूर और व्यापारियों की निर्धनता की स्थिति आना और देश की आर्थिक दशा का विवरण दर्पण की तरह स्पष्ट है। दूसरा कारण था अंग्रेजों की कूटनीति, जिसने हिन्दू, मुस्लिम आदि में फूट बोयी थी और फसल उगने पर उसे काटी भी थी। तीसरा कारण था अंग्रेजों का आतंकपूर्ण शासन, जिससे सभी वर्गों के लोग दबे रहते थे। चौथा कारण था समाज में फैलता भ्रष्टाचार, जिसकी नकेल अंग्रेजों के हाथों थी। शोषण का एक व्यापक जाल फैलाने की साजिश अंग्रेजों की थी। एक बुंदेली लोकगीत में भारत में ब्रिटिश शासकों द्वारा की गई लूट और उनकी भारतीय जनता में फूट डालने व राज करने की नीति की पर्दाफाश करते हुए महात्मा गांधी के स्वदेशी कार्यक्रम को अपनाने की सलाह दी गई है:—

हरे हरे खेत उजड़ गये सबरे,
लूटी रे संपत सारी बिदेसिया।
छै छै बीज फूट के तैने,
कर दओ देश भिकारी बिदेसिया।
जल भरवे न जाव, जल भरवे न जाव
पनघट में डोले फिरंगी।
बाजीगर सौ दिखाय, बाजीगर सौ दिखाय,
बंदरा बिलायत वारौ।
फूट बीजा जाये, फूट बीजा खाये,
लूटो गुड़ानो फिरंगिया।
सिर पै बांधे कफन, सिर पै बांधे कफन,
सहीदन की पलटन निकल गई।
चलावत जाओ चरखा, कताउत जाओ सूत।
गोरा खदेरन के बनिया पूत

(सब हरे—भरे खेत उजड़ गए, विदेशियों ने सारी संपति लूट ली है। विदेशियों, तुमने फूट के बीज बोकर सारे देश को भिखारी बना दिया है। सखी, जल भरने न जाओ, पनघट पर फिरंगी डोल रहा है। विलायत का बंदर बाजीगर—सा दिखता है। अंग्रेजों ने फूट के बीज बोकर गुड़ाने अर्थात् बुंदेली भाषा में लूट लिया है। सिर पर कफन बांधकर शहीदों की सेना निकल गई है। चरखा चलाते जाओ, सूत काटते जाओ, गोरे अंग्रेजों को बनिया का बेटा अर्थात् गांधीजी देश से भगाने का प्रयास कर रहे हैं।)

अंग्रेजों के प्रति भारतीयों की नाराजगी और देश के दुर्दशा पर एक लोकगीतों में लाचारी दिखाई देती है। भारत के लोग आज दानन खों तरसैं, लंदन के कुत्ता उड़ाबै मौज माल हो, बिदेसी तोरे राज में।

(भारत के लोग आकाश आने से खाने के लिए दाना-दाना के लिए मोहताज है लेकिन अंग्रेजों के कुता लंदन में मौज उड़ा रहा है। उसे आम भारतीयों से ज्यादा सहूलियत मिल रही है। अंग्रेजों के राज में काम करने वाला परेशान रह रहा है और मस्ती करने वाला मौज उड़ा हरा है।)

बुंदेली लोकगीतों में भी एक बानगी दिखाई देती है।
गुइयों चलो नागपुर चलिये, अब महंगाई हो गई भारी।
पिसी सेर भर की दर्ई मारी, बढ़त आपनी लाचारी।।
सात समुंदर दूर से आकें, हम पै डाँकों डारो जू।
कै हाँ हाँ जू कै हूँ हूँ जू।।टेक।।
हमें बना दओ गली को कंगला, गोरन माल डकारो
जू।।टेक।।

रक्त चूस रये खटमल भइया, इनखों तुरतई मारो जू।।टेक।।
एड़ी टेड़ी पगड़ी अरे जिन बैधियो, जिन बजार कों जाव।
राज बुरओ है रे अंगरेज को, कहूँ टँगें टँगें मर जाव।।
पहले उदाहरण में कृषि का नष्ट होना और अंग्रेजों द्वारा देश की सारी सम्पत्ति लूटने का संबोधन है। साथ ही फूट के बीज बोकर देश को भिखारी बनाने की साजिश भी अंग्रेजों की है। दूसरे में भारत का दाने-दाने के लिए तरसना और लंदन के कुत्तों का माल खाना वैषम्य का द्योतक है। तीसरे में महंगाई का संकेत है, तो चौथे में अंग्रेजों का खटमल की तरह भारत के तन का रक्त चूसना वर्णित है और उन खटमलों को मारने के लिए कहा गया है। पांचवें में पगड़ी ठीक से न बाँधकर बाजार जाने से अंग्रेजों के शासन में दमन के फलस्वरूप व्यक्ति को पकड़कर टांग दिया जाता था, जिससे वह मर जाता था। इन सबसे देश की आर्थिक दुर्दशा स्पष्ट है। साथ ही अंग्रेजों के चारित्रिक पतन और दमन का भी संकेत है। इन्हीं कारणों से अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष अनिवार्य सा हो गया था। इस समय लोक में गांधी एक मार्गदर्शक की भूमिका में दिखाई देते हैं। गांधी हमें सावधान कर समझाते हुए-सुनाते हुए दिखाई दे रहे हैं।)

एक बुंदेली लोगगीत में महात्मा गांधी का संदेश प्रलक्षित हुआ है।

गांधी हमें जगा रये ते
गांधी हमें बता रये ते
गांधी हमें सुना रये ते
चेत-चातो-गुनो उठो फिर
ऊ देखों अंगरेजन खों
जिसने देश हड़प लव भैया
काम-धाम-स्टेशन खों
टंगरेजी सरकार स्वारथी
टापस में खूब लड़ाई है
अपनो देश पतंग सरीखों
अपनी डोर-उड़ा रई है
अपनो अबे गरीब देश है
खावें खों रोटी नइयां
रहबे खों घर-दोर नहीं हैं
पीवे पानी टोंटी नइया
समझ बूझ से काम करो अुर
लड़ो नें झगड़ों आफत में
परवशता में दुनर होंके
धरौं कछू नाहि खांसत में
भेदभाव खों दूर करों अुर
मन से गरे मिलो भैया
आपस कों जौ बैर-बुराव हैं
होखें फूल खिलो भैया



(गांधी हमें सावधान कर समझाते हुए-सुनाते हुए दिखा रहे थे। व बता रहे थे कि उन अंग्रेजों का जिन्होंने हमारा काम धंधा रहने की जगह हड़प ली। हमें गुलाम बना लिया है। ब्रिटिश सरकार बड़ी स्वार्थी हमें आपस में लड़ा कर राज्य कर रही है। हमारे ही देश की पतंग हमारी ही डोर से उड़ा रही है। अपना देश गरीब हो गया। उसे भरपेट खाने को रोटी नहीं मिलती। रहे हो घर-गृहस्ती, पीने को साफ पानी नहीं मिलता है भाई। समझदारी से काम करो इस मुसीबत में फंस कर आपस में लड़ों-झगड़ों नहीं। दूसरे के सहारे या गुलामी और रोगों से त्रस्त झुकने-खांसने से कुछ नहीं होगा। जाति पांति के भेदभावों को दूर करो। आपस की दुश्मनी कमजोर करती है। सभी एक होकर-गले में बांह डाल मिलों। मुस्कुराहट और उत्साह लिये फूलों की तरह खिलों।)

संघर्षपरक लोकगीतों में जितनी उत्कट अभिलाषा है, जितना ओजत्व है और जितनी बलिदानी शक्ति है, उतनी कहीं नहीं दिखाई पड़ती। संकल्पित इच्छा से लेकर बलिदान तक की मनोभूमियां इन लोकगीतों में रच-बस गयी हैं। अंग्रेजों ने तो आगे-पीछे थाने, पुलिस चौकी खड़ी कर दिये थे और देहरी में जेलखाने, जिनसे उनके दमन का रूप स्पष्ट है। फिर भी कितनों ने गोलियां खायीं, कितने फांसी के फंदे को डालकर झूल गये और कितनों को मार-पीट के घावों से पीड़ित रहना पड़ा। अंग्रेजों की कूटनीति ने हिन्दू और मुसलमानों में फूट फैला दी, जिससे स्वतंत्रता की प्राप्ति में केवल बिलंब नहीं हुआ, वरन् हमेशा के लिए एक शत्रुता की दीवार खड़ी कर गया।

एक कहावत है 'कोस कोस पर पानी बदले, पांच कोस पै बानी'। इससे पता चलता है कि कोई भी जीवित भाषा सदा अपने को बदलती रहती है। फिर भी गंगा की धारा की तरह उसकी अपनी धारा बनी ही रहती है। रास्ते में जो कुछ मिलता है भाषा की धार उसे अपने साथ बहा ले जाती है। इस प्रकार जनपदीय भाषाओं का विकास हुआ, जिनमें अवधी-भोजपुरी, भोजपुरी-मैथिली, बुंदेली-ब्रज का अपना विशेष महत्त्व है। हालांकि विभिन्न शोध पत्रों से मिली जानकारी के अनुसार प्रतिमाह दो लोक भाषाओं की मृत्यु हो रही है तथा आज बोली जाने वाली 5-6 हजार भाषाओं में 90 प्रतिशत भाषाएं शीघ्र समाप्त हो जाएंगी। यह तथ्य गंभीर, चिन्तनीय एवं विचारणीय है।

अमरेन्द्र कुमार आर्य
पी.एच.डी शोधार्थी
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं
संचार विश्वविद्यालय भोपाल

भाषा-विमर्श आलोचना



‘आलोचना’ ‘लोच्’ धातु से बना है—आ+लोच्+अन+आत्र आलोचना। लोच् का अर्थ है देखना। इसीलिए किसी वस्तु या कृति की सम्यक् व्याख्या अथवा उसका मूल्यांकन आदि करना ही आलोचना है। नित्य के व्यावहारिक जीवन में किसी न किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा कार्यकलाप की समीक्षा में हमारी सहज प्रवृत्ति होती है। किंतु संस्कारों, चिंतन क्षमता एवं सामाजिक अवधारणा प्रभृति अन्य व्यक्तिगत विशेषताओं के परिणामस्वरूप हमारी प्रतिक्रियाओं में प्रायः अंतर रहता है। इसी प्रकार साहित्य की आलोचना भी प्रतिक्रियाओं की देन है, किंतु ये प्रतिक्रियाएं उच्छृंखल न होकर एक प्रकार के वैज्ञानिक संयम से अनुशासित रहती हैं। ‘आलोचना’ के लिए ‘समीक्षा’ शब्द भी प्रयुक्त होता है। ‘समीक्षा’ का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है ‘सम्यक् निरीक्षण’। आलोचना मानव की सहज प्रवृत्ति है। यही कारण है कि उसका अस्तित्व अन्य मानवीय वृत्तियों अथवा संवेदनाओं की भांति चिरकाल से ही स्वीकार किया जाता है। आलोचना को साहित्य के संदर्भ में देखने पर साहित्य-रचना के बाद इसका आविर्भाव स्वतः सिद्ध हो जाता है वस्तुतः पहले सर्जनात्मक साहित्य प्रकाश में आता है तत्पश्चात् उसकी आलोचना की आवश्यकता का अनुभव किया जाता है।

हिंदी आलोचना के आरम्भिक युग में सामान्यतः यह धारणा प्रचलित थी कि आलोचना का अर्थ कृति विशेष का गुण-दोष विवेचन मात्र है। व्युत्पत्तिपरक अर्थ लेने पर भी तात्पर्य में कोई बाधा नहीं पड़ती। इसलिए चिरकाल से ही आलोचक, कृति विशेष का गुण-दोष निर्णय मात्र अपना धर्म समझते रहे, पर आज हिंदी आलोचना का क्षेत्र-विस्तार हो जाने के परिणामस्वरूप ‘समीक्षा’, ‘आलोचना’, ‘समालोचना’ प्रभृति शब्दों का अर्थ-विस्तार हो गया है। आज आलोचना के अंतर्गत किसी कृति की विशेषताओं पर विचार करना, उसकी उपलब्धियों एवं अभावों का मूल्यांकन करना, श्रेष्ठता एवं अभावों के विषय में निर्णय देना, उसे श्रेणीबद्ध करना आदि अनेक कार्य आते हैं। इतना ही नहीं, रचना को समझने में पाठक की मदद करना भी आलोचक का दायित्व है।

हिंदी में ‘आलोचना’ शब्द अंग्रेजी के क्रिटिसिज्म (Critisism) का पर्याय है जिसका अर्थ है ‘मूल्यांकन’ अथवा ‘निर्णय करना’। बाबू गुलाब राय के अनुसार आलोचना का अर्थ है, “कवि की कृति का सभी दृष्टियों से आस्वादकर पाठकों का उस प्रकार के आस्वाद में सहायता देना।” एक सुधी आलोचक में विषय का गहन बोध तथा व्याख्या-विश्लेषण और मूल्यांकन की क्षमता होती है। वास्तव में “समालोचक में कविवत भावुकता, चिंतन की कोमलता, भावों की प्रवणता और रस ग्राहिता होनी चाहिए, अन्यथा वह उन मनोदशाओं में धूमिल विश्व में पहुंच ही नहीं सकता, जिनमें कविता की सृष्टि की जाती है।” आलोचना में गुण-दोष विवेचन के संतुलित आधार को महत्व दिया जाता है, फलतः उसका सर्वप्रमुख लाभ यह है कि सहृदय को साहित्य के प्रामाणिक अनुशीलन की सुविधा प्राप्त हो जाती है। कृति विशेष एवं उसकी पूर्वग्रह रहित समीक्षा के एक साथ अध्ययन व अनुशीलन से पाठक की बोधवृत्ति का निश्चय ही परिष्कार होगा, क्योंकि उसके माध्यम से सत्साहित्य का प्रसार और असत्साहित्य का बहिष्कार होता है। वास्तविकता तो यह है कि समीक्षा से पाठक की निर्णयात्मक प्रवृत्ति में वृद्धि एवं बौद्धिक सजगता प्राप्त होती है और उससे

सहृदय में रस-ग्रहण क्षमता एवं साहित्य-विषयक जिज्ञासा भी बढ़ती है। आलोचना के विषय में डॉ. रामकुमार वर्मा का सुझाव ग्रहणीय है। डॉ. वर्मा के अनुसार, आवश्यकता इस बात की है कि साहित्य की समीक्षा करने के लिए जो भी नियम या सिद्धांत बनाये जायें, वे इतने व्यापक व लचीले हों कि साहित्य की विकासोन्मुखी प्रकृति के अनुरूप वे स्थानांतरित होती हुई दृष्टि को अपने में भी समाहित कर सकें।

हिंदी में शुद्ध व्यावहारिक आलोचना का सूत्रपात भारतेंदु युग में, गद्य के विकास के साथ-साथ प्राप्त होता है। इसके पूर्व हिंदी आलोचना के जो रूप प्रचलित थे उसका श्रेय संस्कृत साहित्य को है। रीतिकाल में लक्षण ग्रंथों के प्रणयन की एक लंबी परंपरा प्राप्त होती है। इनका क्रम हमें संस्कृत साहित्य से प्राप्त होता है। संस्कृत में सैद्धांतिक आलोचना के छह प्रमुख सिद्धांत प्रचलित थे— रस, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि, अलंकार और औचित्य। हिंदी में इनमें से रस, ध्वनि और अलंकार का विशेष प्रचलन हुआ। इन लक्षण ग्रंथों के माध्यम से अलंकारों आदि का लक्षण और उनका उदाहरण प्रस्तुत करना कवि-आचार्यों का प्रमुख उद्देश्य रहता था। यह लक्षण-ग्रंथों का रूप सैद्धांतिक था। उस काल की यह अत्यंत परिपुष्ट पद्धति बन चुकी थी।

समीक्षा के लिए दूसरी महत्वपूर्ण परंपरा टीका-पद्धति थी। यह पद्धति भी संस्कृत साहित्य से चली आ रही थी। मल्लिनाथ के अनुसार टीका के अभाव में कालिदास की वाणी ‘दुर्व्याख्या विषमूर्च्छिता’ हो गयी थी। मल्लिनाथ ने टीका लिखकर उसे सुगम बनाया टीकाकर काव्य की टीका करते-करते कवियों के विषय में भी अंत में आलोचनात्मक उक्तियां कह दिया करते थे। इस प्रकार की आलोचना हिंदी में ‘रामचरितमानस’ और ‘बिहारी सतसई’ की टीकाओं, कुलपति, श्रीपति, चिंतामणि और सोमनाथ द्वारा लिखी गयी वचनिका-वार्ता, तिलक आदि के रूप में मिलती है। रीतिकाल के अंतिम चरण में सरदार कवि कृत ‘मानस-रहस्य’ को रीतिकालीन व्यावहारिक आलोचना में टीका-पद्धति का श्रेष्ठ उदाहरण स्वीकार किया जा सकता है। इसमें काव्यांगों के लक्षण, उन लक्षणों के अनुसार ‘मानस’ से उदाहरण और अंत में उन स्थलों की गद्य में व्याख्या देकर सैद्धांतिक और व्यावहारिक आलोचना का समन्वित रूप प्रस्तुत किया गया है।

संस्कृत साहित्य में प्रचलित सूक्तियों के आधार पर ही हिंदी में भी ‘सूर-सूर तुलसी ससी उडगन केशव दास’ “तुलसी गंग दुवो भये सुकविन के सरदार, उनके काव्यन में मिली भाषा विविध प्रकार”, “और कवि गढ़िया, नंद दास जड़िया” आदि सूक्तियां भक्तिकालीन आलोचना का एक रूप प्रस्तुत करती हैं। इस प्रकार भारतेंदु काल के आरंभ में हमें हिंदी आलोचना के यही तीन रूप प्राप्त होते हैं—

(क) लक्षण-ग्रंथों की रचना और उनके आधार पर अलंकार आदि का उदाहरण प्रस्तुत करना।

(ख) टीका-पद्धति और उसमें कवि के विषय में प्रशंसात्मक उक्तियां।

(ग) सूक्तियों के रूप में कवि से संबंधित उक्तियां।

भारतेंदु के आगमन से हिंदी में जो नव युग का सूत्रपात हुआ उसमें पाश्चात्य शिक्षा-संस्कृति के संपर्क से नवीन विचारों का अभ्युदय और उसके प्रकाशन के माध्यम के रूप में गद्य का आविर्भाव हुआ। भारतेंदु युग में हिंदी आलोचना के परंपरागत तीनों रूप चलते रहे

अर्थात् लक्षण या सिद्धांत ग्रंथों की रचना होती रही, टीकाएं लिखी जाती रहीं और उनमें कवियों के वैशिष्ट्य को संकेतिक किया जाता रहा तथा सूक्तियों के रूप में कवियों के मूल्यांकन का क्रम भी चलता रहा तथा इन तीनों परंपराओं के साथ इस युग में हिंदी आलोचना के दो नये रूप सामने आये—

(क) पत्र-पत्रिकाओं में 'पुस्तक समीक्षा' के रूप में की जाने वाली आलोचना।

(ख) इतिहास-ग्रंथों में कवि-परिचय के साथ उनके महत्व का प्रतिपादन करने वाली आलोचना।

इस प्रकार यदि सूक्तियों को छोड़ भी दिया जाये तो भारतेंदु युग में हिंदी आलोचना के चार रूप लक्षित होते हैं। काव्य के लक्षण या सिद्धांत निरूपण के क्षेत्र में प्रताप नारायण साह का 'रस कुसुमाकर' (1899 ई.), कविराजा मुरारिदान का 'जसवंत भूषण' (1893 ई.), जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' का 'काव्य प्रभाकर' (1910 ई.) और भारतेंदु का 'नाटक' उल्लेखनीय है। इन सिद्धांत ग्रंथों में लक्षण गद्य में दिये गए, साथ ही, युग की प्रवृत्ति के अनुसार शास्त्र के नियमों की जटिलता को सरल करने का भी प्रश्न उठाया गया। यह प्रश्न स्वयं भारतेंदु ने उठाया। इस प्रकार पहली बार परंपरागत शास्त्रीय नियमों को परिवर्तित सामाजिक रुचि की चुनौती का सामना करना पड़ा भारतेंदु ने स्पष्ट शब्दों में कहा, "वर्तमान समय में इस काल के कवि तथा सामाजिक लोगों की रुचि उस काल की अपेक्षा अधिकांश में विलक्षण है। इससे संप्रति प्राचीन मत अवलम्ब करके नाटक आदि दृश्य काव्य लिखना युक्तिसंगत नहीं बोध होता है।"

टीकाओं के क्षेत्र में दो नाम महत्वपूर्ण हैं — सरदार कवि, जिन्होंने केशव की 'कवि प्रिया' और 'रसिक प्रिया' की टीकायें लिखीं तथा लल्लूलाल, जिन्होंने 'बिहारी सतसई' की टीका 'लालचंद्रिका' नाम से लिखी। यह टीका भारतेंदु काल से कुछ पूर्व लिखी गयी थी। किंतु भारतेंदु युग में पुनः परिष्कार हुआ और यह परिष्कार पंडित सुधाकर द्विवेदी और जार्ज ग्रियर्सन ने मिलकर किया।

इतिहास ग्रंथों में कवि परिचय के साथ प्राप्त होने वाली आलोचना का सूत्रपात 'शिव सिंह सरोज' (1879 ई.) से हुआ। शिव सिंह ने कवियों का इतिवृत्त प्रस्तुत करते हुए उनकी श्रेष्ठ रचनाओं को भी उद्धृत किया और उनके संबंध में प्रशंसात्मक उक्तियां कहीं।

इस काल में शुद्ध व्यावहारिक समीक्षा का सूत्रपात समकालीन पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ हुआ। इन पत्रों में 'कवि वचन सुधा' (1867 ई.), 'हरिश्चंद्र मैगजीन' (1873 ई.) जो आगे चलकर 'हरिश्चन्द्र पत्रिका' के रूप में प्रकाशित हुई। (1873 ई.), 'हिंदी प्रदीप' (1877 ई.), 'ब्राह्मण' (1883 ई.), 'भारत मित्र' (1878 ई.), 'सार सुधा निधि' (1878 ई.), 'आनंद कादम्बिनी' (1881 ई.) आदि मुख्य हैं। इन पत्रिकाओं में पुस्तक की समीक्षाएं प्रस्तुत की जाती थीं। 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' के मुख्य पृष्ठ पर पत्रिका में प्रकाशित होने वाले विषयों की सूची के अंत में और 'आलोचना संभूषिता' लिखा हुआ होना यह प्रमाणित करता है कि उसमें समालोचनात्मक रचनाओं को स्थान देने के भी प्रयत्न हुए हैं और भारतेंदु ने ही इसका आरंभ किया। 'कवि वचन सुधा' में 'हिंदी कविता' नाम से पहला आलोचनात्मक निबंध भी उन्होंने लिखा। 1880 ई. के पूर्व इन पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली आलोचनाएं 'पुस्तक परिचय' मात्र थीं। किंतु उसके बाद आलोचना का स्तर गंभीर होता गया। इन पुस्तक समीक्षाओं की अपेक्षा वास्तव में आलोचनात्मक निबंधों में हमें सच्ची व्यावहारिक आलोचना का दर्शन होता है और इस

तरह की आलोचना का आरंभ पंडित बालकृष्ण भट्ट और बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' से प्राप्त होता है। इन दोनों ने सन् 1886 ई. में लाला श्रीनिवास दास के 'संयोगिता स्वयंवर' की आलोचना अपने-अपने पत्रों-क्रमशः 'हिंदी प्रदीप' और 'आनंद कादंबिनी' में की थी। भट्ट जी द्वारा संपादित 'हिंदी प्रदीप' इस दृष्टि से सर्वाधिक समृद्ध माना जा सकता है। उन्होंने स्वयं लगभग 30 वर्षों तक व्यंगात्मक निबंध और पुस्तक-समीक्षाएं लिखीं। उनकी आलोचना शैली मुख्यतः व्यंगात्मक थी। तात्पर्य यह है कि इस युग में एक ओर पारंपरिक समीक्षा-शैलियों का विकास हुआ तो दूसरी ओर नवीन शैली को व्यावहारिक आलोचना का सूत्रपात हुआ।

त्रैमासिक 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' के प्रकाशन (1896 ई.) के बाद हिंदी आलोचना के इतिहास में एक नये युग का आरंभ होता है। 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' के प्रथम वर्ष में ही प्रकाशित गंगा प्रसाद अग्निहोत्री का 'समालोचना', बाबू जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' का 'समालोचनादर्श', अंबिका दत्त व्यास का 'गद्य काव्य मीमांसा' आदि लेख हिंदी समीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' के प्रकाशन से हिंदी में पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबू श्याम सुंदर दास, अम्बिका दत्त व्यास, मिश्रबंधु जैसे धुरंधर लेखकों की प्रतिभा को विकसित होने का अवसर मिला। इसमें इतिहास, साहित्य, भाषा तत्व, पुरातत्व आदि के बारे में लेख प्रकाशित होने लगे और खोज संबंधी सामग्री भी पाठकों के सामने आने लगी। इसके अतिरिक्त 'सुदर्शन' (1900 ई.), 'सरस्वती' (1900 ई.) और 'समालोचक' (1902 ई.) जैसी पत्रिकाओं ने आधुनिक आलोचना को संवारने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

सन् 1904 ई. में द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' में 'पुस्तक-समीक्षा' का सूत्रपात किया। उनके हाथ में 'पुस्तक-समीक्षा' की यह छिछली प्रशंसा निष्पक्ष और सूक्ष्म मूल्यांकन की स्थिति में पहुंच गयी। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित 'कालिदास की निरंकुशता' शीर्षक निबंध अपने ढंग का आलोचनात्मक लेख था। उन्होंने अपनी आलोचना में भारतीय रस-सिद्धांत को पूरा-पूरा महत्व दिया और नवीनता की भी उपेक्षा नहीं की। उनकी आलोचनात्मक दृष्टि मुख्यतः भाषा और शैली की शुद्धता, व्याकरण और मुहावरों के सही प्रयोग की ओर ध्यान दिलाने वाली थी। उनकी मिश्र बंधुओं द्वारा रचित 'हिंदी-नवरत्न' की आलोचना विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

द्विवेदी जी के अतिरिक्त मिश्रबंधुओं ने पुस्तक-समीक्षा, अनुसंधान तथा विशुद्ध आलोचना के क्षेत्र में यथेष्ट कार्य किया है। उनकी आलोचना में आलोचित कृतियों के गुण-दोष का सम्यक विवेचन होता था। अनुसंधान की प्रवृत्ति का द्योतक 'मिश्रबंधु विनोद' में भी हमें आलोचनात्मक दृष्टि का परिचय मिलता है। इसके अतिरिक्त हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित मिश्रबंधुओं के आलोचनात्मक लेख उनकी शुद्ध आलोचनात्मक दृष्टि के परिचायक हैं।

इसी युग में हिंदी में तुलनात्मक आलोचना का भी सूत्रपात हुआ। यद्यपि मिश्रबंधु कृत 'हिंदी नवरत्न' में कवियों के श्रेणी विभाजन में ही तुलनात्मक आलोचना का क्षीण आभास मिल जाता है पर उसका व्यवस्थित रूप 'सरस्वती' (1907 ई.) में प्रकाशित पंडित पद्मसिंह शर्मा के 'बिहारी' और फारसी कति 'शेखसादी' की तुलनात्मक आलोचना में मिलता है। मिश्रबंधुओं ने अपने नवरत्न में देव को बहुत ऊंचा स्थान दिया और बिहारी को उनके बाद रखा। इसके विरोध में पंडित शर्मा ने 'आर्या सप्तशती', 'अमरुक शतक', 'गाथा सप्तशती' आदि संस्कृत-प्राकृत के ग्रंथों तथा हिंदी और फारसी के अन्य कवियों से 'बिहारी सतसई' की तुलना करके 'बिहारी को श्रृंगार रस का सर्वश्रेष्ठ कवि सिद्ध किया। पुनः पंडित कृष्ण बिहारी मिश्र ने 'देव

और बिहारी' के द्वंद को और आगे बढ़ाया और परिणामस्वरूप एक समय ऐसा आया जब हिंदी जगत 'देव और बिहारी' के द्वंद का अखाड़ा हो गया। इससे चाहे और कुछ न हुआ हो पर तुलनात्मक समीक्षा—दृष्टि के विकास के साथ—साथ हिंदी पाठकों को रचना—कौशल और उक्ति—चमत्कार का बोध तो हुआ ही।

इसके बाद हिंदी आलोचना के क्षेत्र में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का आगमन हुआ, जिन्होंने उसे एक नवीन और दृढ़ आधार दिया। वे हिंदी आलोचना के प्राधिकृत आचार्य हैं। उनकी समीक्षा—पद्धति अत्यंत प्रौढ़, सारगर्भित, मौलिक एवं विशद है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल की आलोचना को दो रूपों में देखा जा सकता है—सैद्धांतिक आलोचना और व्यावहारिक आलोचना। सैद्धांतिक आलोचना की प्रौढ़तम कृति 'रसमीमांसा' है और उनकी व्यावहारिक आलोचना का प्रौढ़तम रूप तुलसी एवं जायसी ग्रंथावली की भूमिकाओं, 'भ्रमरगीतसार' की भूमिका और 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में देखा जा सकता है।

आचार्य शुक्ल की समीक्षा का मूलाधार रस सिद्धांत है। उन्होंने उस सिद्धांत की आधुनिक मनोविज्ञान के आलोक में नयी व्याख्या की और उसे अधिक व्यावहारिक बनाया। रीति, अलंकार, ध्वनि, औचित्य और वक्रोक्ति के महत्व को उन्होंने वहीं तक स्वीकार किया जहां तक वे रस के उपकारक के रूप में आते हों।

आचार्य शुक्ल के आदर्श कवि तुलसी हैं। तुलसी के अतिरिक्त उन्होंने सूर, जायसी और रीतिकालीन कवियों में घनानंद, ठाकुर, बोधा और द्विजदेव जैसे कवियों की सराहना की, जबकि, केशव और कबीर उन्हें अधिक प्रभावित न कर सके।

आचार्य शुक्ल हिंदी आलोचना के आधार—स्तंभ की तरह हैं। परवर्ती सभी समीक्षकों को उन्होंने किसी न किसी रूप में प्रभावित किया है। आचार्य शुक्ल के बाद हिंदी आलोचना की कई पद्धतियां विकसित हुईं। इनमें मार्क्सवादी आलोचना, स्वच्छंदतावादी आलोचना, ऐतिहासिक—सांस्कृतिक आलोचना, प्रभाववादी आलोचना, नयी आलोचना, मनोविश्लेषणवादी आलोचना आदि मुख्य हैं। संप्रति हिंदी आलोचना काफी विकसित हो चुकी है और अन्य साहित्यिक विधाओं की भांति एक प्रमुख स्वतंत्र विधा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है।

साभार

हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली
डॉ अमरनाथ

भाषा-विमर्श

मलयालम भाषा

एक परिचय

मलयालम भाषा द्रविड़ भाषा परिवार के दक्षिण द्रविड़ उपसमूह की एक उपभाषा है। मलयालम मुख्य रूप से भारत में बोली जाती है जहाँ यह केरल राज्य एवं लक्षद्वीप के केंद्र शासित प्रदेश की आधिकारिक भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है।

मलयालम भाषा की उत्पत्ति

'मलयालम' शब्द शुरुआत में एक स्थानीय बोली के रूप में विकसित हुआ। 'मलयालम' शब्द का पहला भाग, अर्थात्, 'माला' पहाड़ी को संदर्भित कर सकता है और अंतिम भाग आलम 'सागर की गहराई' को इंगित करता है। इसलिए 'मलयालम' शब्द पश्चिमी घाट तथा अरब सागर के बीच स्थित भूमि को संदर्भित करता है।

उद्गम

13 वीं शताब्दी से मलयालम ने एक अलग भाषा के रूप में अपनी पहचान बनानी प्रारंभ कर दी थी। मलयालम केरल तथा लक्षद्वीप की प्रमुख भाषा है। वट्टेळत्त लिपि [Vattezhuthu Script] 9वीं शताब्दी से मलयालम भाषा के लिए प्रयोग की जाने वाली लिपि थी जबकि मलयालम भाषा की आधुनिक लिपि ग्रन्थ लिपि से विकसित हुई जो 16 वीं शताब्दी अस्तित्व में आई। मलयालम, द्रविड़ भाषाओं में से एक संभवतः सबसे प्राचीन समय में तमिल से विभाजित होने के कारण विकसित हुई तथा 9 वीं शताब्दी तक एक स्वतंत्र भाषा के रूप में विकसित हो गई। आज मलयालम लगभग 38 मिलियन लोगों द्वारा बोली जाती है।

अनेकों व्याकरणविदों, भाषाविदों तथा विद्वानों ने मलयालम भाषा की उत्पत्ति के बारे में अपने विचार प्रकट किये। लेकिन इनमें से अधिकांश विचार मात्र मत बनकर रह गये। तत्कालीन विमर्श के उपरान्त मलयालम के लिए सबसे रूढ़िवादी विचारों में से एक संस्कृत भाषा से उत्पन्न हुआ। कुछ विद्वानों का मानना है कि प्राचीन प्राकृत से मलयालम का विकास हुआ। विद्वानों का एक ऐसा समूह भी है जो कहता है कि जंगलों में रहने वाले जनजातियों ने एक स्वतंत्र भाषा का प्रयोग किया जिसमें द्रविड़ भाषा मिश्रित थी तथा मलयालम भाषा बनने के लिए यह वर्षों तक परिवर्तन के दौर से गुजरी। बहुत से विद्वान इस बात को लेकर आश्चर्यचकित हैं कि किस प्रकार से तमिल एवं मलयालम भाषा कई विषयों पर एक समानता रखती हैं।

हालांकि विद्वान आधुनिक भाषा इतिहास तथा तथा मलयालम भाषा के संदर्भ में विकसित तुलनात्मक साहित्य से भी परिचित हैं। आज सभी इस बात पर एक मत हैं कि मलयालम को तमिल, कोटा, टोडक, कोडक और कन्नड़ भाषा के साथ सम्मिलित किया जाना चाहिए क्योंकि ये सभी भाषाएं दक्षिण द्रविड़ परिवार से संबंध रखती हैं। यह बात सत्य है कि मलयालम का तमिल भाषा के साथ घनिष्ठ संबंध है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इतिहास में कभी तमिल एवं मलयालम एक ही भाषा के रूप में जानी जाती थी। एक स्वतंत्र भाषा के रूप में मलयालम का विकास 9 वीं शताब्दी के अभिलेखों में पाया जाता है। संभवतः चार या पाँच

शताब्दियों (9 वीं शताब्दी से 13 वीं शताब्दी) के दौरान तमिल तथा मलयालम अलग-अलग भाषाएँ बन गईं। हालांकि उस काल की मौखिक भाषा को फिर से विकसित किये जाने की आवश्यकता थी लेकिन इसने कभी भी मूर्तरूप नहीं लिया। चार प्रमुख द्रविड़ भाषाओं में से मलयालम अपने साहित्यिक रचनाओं को विकसित करने वाली अंतिम भाषा थी। इस बात में कोई शंका नहीं कि तमिल ने सबसे प्राचीन एवं समृद्ध परंपरा वाली भाषा के रूप में अपने अस्तित्व को सिद्ध कर दिया है। इसलिए यह केवल स्वाभाविक है कि केरलवासी भी सबसे पुरानी भाषा का लाभ लेना चाहेंगे। मलयालम भाषा पर तमिल भाषा के प्रभाव को इसके विकास के पहले दशकों में ही समझा जा सकता है। यद्यपि मलयालम आमजन की भाषा थी लेकिन तमिल को केरल के पश्चिमी हिस्सों में विद्वानों की भाषा के रूप में पहचान मिली। धीरे-धीरे, समय बीतने के साथ, मलयालम भाषा शिखर पर पहुंच गई तथा शाही उद्घोषणाओं एवं दस्तावेजों में अपनी जगह बना ली। इसके अतिरिक्त आर्य भाषा के प्रभाव को ध्वनियों, वाक्य संरचना के स्वरूप, अर्थों आदि पर देखा जा सकता है। उल्लेखनीय है कि इस प्रभाव ने एक उत्प्रेरक की तरह काम किया है।

मलयालम भाषा का स्वरूप एवं इस पर अन्य भाषाओं का प्रभाव

आधुनिक मलयालम में विभिन्न प्रकार के भाषा स्वरूपों को देखा जा सकता है। जाति, क्षेत्र—व्यवसाय, शैली तथा असंख्य भाषा स्वरूप मलयालम का निर्माण करते हैं। समाचार पत्र, रेडियो, अध्ययन सामग्री तथा शिक्षा ने मानवीय भाषा के स्वरूप को पोषित करने में योगदान उपलब्ध कराया है। भूगोल, समाज एवं संस्कृति के अतिरिक्त जाति एवं धर्म ने भी मलयालम भाषा को विकसित करने में अपना योगदान दिया है। प्राकृत, पाली, मराठी, हिंदी, फारसी, उच्च तथा फ्रांसीसी जैसी कुछ अन्य भाषाओं के प्रभाव को इसके विकास एवं परिवर्तन काल के दौरान देखा जा सकता है। इसलिए इस पर कोई आश्चर्य नहीं कि कई विदेशी शब्द मलयालम भाषा के अभिन्न अंग बन गये हैं।

मलयालम लिपि

ऐसा माना जाता है कि आधुनिक मलयालम लिपि 'ग्रंथ' लिपि से विकसित हुई जिसे आर्य एञ्जुथु [Arya ezhuthu] के नाम से भी जाना जाता है। वट्टेळुत्तु [Vattezhuthu] लिपि से पूर्व मलयालम को रिकॉर्ड करने में प्रयुक्त होती थी क्योंकि इससे पूर्व यह कार्य ग्रंथ लिपि किया करती थी। यह कोलेजुथु [Kolezhuthu] तथा मलायनम्मा [Malayanma] नामक लिपियों का भी व्यापक रूप से उपयोग किया गया था।?

7 वीं शताब्दी के बाद से 'ग्रन्थअक्षरम [ग्रन्थ लिपि] का उपयोग संस्कृत लिखने के लिए किया जाता था। पल्लव राजाओं जिन्होंने कांचीपुरम शहर से शासन किया ने ग्रंथ लिपि को लोकप्रिय बनाया क्योंकि तमिल अक्षर संस्कृत भाषा को रिकॉर्ड करने के लिए पर्याप्त रूप में उपलब्ध नहीं थे। यह नई लिपि शीघ्र ही केरल में भी फैल गई। पांड्या तथा विजयनगर राज्यों के शासनकाल के दौरान मालाबार क्षेत्र में पश्चिमी ग्रन्थ लिपि विकसित हुई तथा तमिलनाडु क्षेत्र में एक पूर्वी ग्रन्थ लिपि का संस्करण विकसित हुआ। पश्चिमी ग्रंथ लिपि विकसित हुई एवं तेलगु एवं मलयालम जैसी द्रविड़ भाषाओं की लिपियों के स्वरूप को विकसित किया।

वट्टेळुत्तु [Vattezhuthu] लिपि जिसमें कोई भी महाप्राण (उच्चारित) व्यंजन नहीं थे, संस्कृत भाषा की पुस्तकों को लिखने के

लिए उपयुक्त नहीं थी जिसके फलस्वरूप ग्रंथ लिपि को व्यापक स्वीकार्यता प्राप्त हुई। इस कमी को पूरा करने के लिए मलयालम भाषा के पूर्वज एषुत्तच्छन [Ezhuthachan] ने ग्रंथ लिपि को संशोधित करके मलयालम में वर्णमाला का एक नया समूह बनाया। हालांकि यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि एषुत्तच्छन [Ezhuthachan] ने मलयालम वर्णमाला बनाई थी। प्रसिद्ध व्याकरणशास्त्री ए आर राजा राजा वर्मा के अनुसार तुलु भाषा ने भी इसी लिपि का उपयोग किया था तथा इसलिए वर्णमाला के इस समूह को "तुलु मलयालम अक्षरमाला" कहा जाता था।

ग्रन्थ लिपि ब्राह्मी से विकसित हुई जो एक प्राचीन भारतीय लिपि थी। वर्तमान मलयालम लिपि की संरचना तथा पूर्णता 'ग्रंथ' लिपि की कृतज्ञ है। वट्टेळुत्तु, कोलेजुथु एवं मलयालम [Vattezhuthu] Kolezhuthu and ^Malayanma] लिपि में व्यंजनों के अभाव के कारण संस्कृत भाषा लिखने की आवश्यकता पड़ी जिसने ग्रंथ लिपि से वर्तमान मलयालम लिपि के विकास को प्रोत्साहित किया। पश्चिमी

— ग्रन्थ लिपि को तुलु — मलयालम के नाम से भी जाना जाता था (क्योंकि इसे तेलु भाषा एवं मलयालम भाषा दोनों को लिखने के लिए प्रयुक्त किया जाता था) तथा आर्य एञ्जुथु [Arya ezhuthu] के रूप में भी (क्योंकि यह संस्कृत लिखने के लिए प्रयुक्त की जाती थी जो आर्यों की भाषा थी)। यह सब इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि आधुनिक मलयालम वर्णमाला 'ग्रंथ' लिपि से विकसित हुई है। वट्टेळुत्तु तथा कोलेजुथु [Vattezhuthu and Kolezhuthu] में संस्कृत के शब्द 'ग्रंथ' लिपि में भी थे।

मलयालम भाषा की वर्णमाला

अंग्रेजी के विपरीत मलयालम भाषा में अक्षर एवं लिपि एक-दूसरे से संबंधित हैं। विभिन्न व्याकरण पुस्तकें मलयालम में अक्षरों की संख्या पर भिन्न-भिन्न तथ्य उपलब्ध कराती हैं।

मलयालम भाषा में अक्षरों की प्रमाणिक संख्या बताना काफी मुश्किल कार्य है। अक्षर उच्चारण का सबसे छोटा रूप होता है। शब्दांश भाषा का सबसे छोटा रूप होता है। लेकिन अगर कोई जानना चाहता है कि अंग्रेजी में कितने अक्षर हैं तो वे शब्दों का उल्लेख कर रहे होते हैं। संक्षेप में अंग्रेजी में 26 अक्षर होते हैं तथा 26 लिपियाँ उन्हें निर्दिष्ट (बताने) के लिए उपलब्ध हैं। मलयालम में हालांकि अक्षर एवं लिपि में कोई अंतर नहीं है। अक्षर एवं लिपि भाषा को समृद्ध बनाने के लिए उपयोगी बनाई गई हैं। इसका कारण शब्दों का अधिमिश्रण है। मलयालम में व्याकरण की विषय वस्तु मूल व्याख्या के रूप में लिपि सुधार के तौर पर जुड़ी हुई है। जबकि ए आर राजा राजा वर्मा तथा शेषगिरी प्रभु का दावा है कि मलयालम भाषा में 53 अक्षर हैं। हरमन गंडर्ट, का दावा है कि मलयालम भाषा में 49 अक्षर होते हैं जबकि जॉर्ज माथन डंजींद, का दावा है कि मलयालम भाषा में 48 अक्षर होते हैं। केरल पाणिनियम के अनुसार वर्णमाला का क्रम अधोलिखित रूप में व्यवस्थित किया गया है:

स्वर

ഏ(अ) ഇ(इ) ഉ(उ) ഋ(ऋ)

എ(ए)ഒ(ओ)

ഏ(आ)ഇ(ई) ഊ(ऊ) ഐ(ഈ)

ഓ(औ) ഐ(ഈ) ഐ(ഈ)

नानाजी गाड़ी आगे बढ़ाने लगे।
नानाजी ! ये बैल तो दो हैं। ये हम सबका और गाड़ी का इतना सारा बोझ कैसे ढो लेते हैं ? राहुल ने बड़ी ही उत्सुकता से पूछा।
नानाजी बोए ' ये भूसा, घास और दाना खाते हैं। इन सब चीजों में बड़ी ताकत होती है।

कुछ सोचते हुए से राहुल ने कहा हाँ! माँ भी कहती है, हम जैसी चीज खाते हैं वैसे ही बनते हैं। दूध पीने से ताकतवर बनते हैं। चाट पकौड़े आदि खाने से पेट खराब ही होता है और बीमार पड़ते हैं।

'हाँ राहुल! यह बात सच है।' नानी बोली।

'पर माँ ने कभी ये तो नहीं बताया की भूसा और घास खाने से ताकत बढ़ती है। उन्होने न ही मुझे, न ही पिताजी को ये चीजें खिलाई हैं। राहुल अभी भी न जाने किस सोच में डूबा हुआ कह रहा था। राहुल की बात सुनकर सभी खिलखिलाकर हंस पड़े। नानाजी बोले पगले! ये चीजें तो जानवर खाते हैं। तभी घर आ गया और सभी गाड़ी से उतर पड़े।

पूरे एक दिन राहुल मन में ये सोचता रहा की भूसा खाने से ताकत आती है। मैं भूसा खाऊँगा तो मुझमें भी खूब-सी शक्ति आ जाएगी। फिर कोई भी भाई-बहिन उसे 'सिकीय-पहलवान' कह के नहीं चिढ़ाएगा। पर उसे ये बात नाना नानी से कहने की हिम्मत न पड़ी। राहुल सोच रहा था उन्हें अगर बताऊँगा तो वे हसेंगे ही। इसलिए जब मैं भूसा खा-खाकर पहलवान हो जाऊँगा तभी बताऊँगा।

दूसरे दिन शाम को राहुल चुपचाप घर के दारवाजे पर आ गया। वहाँ बैल बंधे हुए थे और अपनी अपनी नाद में सानी खा रहे थे। राहुल ने चोर निगाहों से इधर उधर देखा सब ठीक है। नानी रसोई घर में खाना पका रही हैं और नाना चारपाई पर बैठे अखबार पढ़ने में लीन हैं।

तभी घर के अंदर से सोनल आया। राहुल को चुपचाप देख कर बोला 'यहाँ क्यूँ खड़े हो राहुल?'

'शी शी चुप रहो। मुँह पर उंगली रखते हुए राहुल बोला। फिर वो सोनल के कान में बोला- 'सोनल! आज बैलों की सानी खाएँगे। पर आखिर क्यूँ?' सोनल पूछने लगा।

'ओह! तुम जानते नहीं बैल सानी खाते हैं, इसलिए इनमें इतनी शक्ति है। हम खाएँगे तो हम भी बहुत शक्तिशाली बन जाएंगे। फिर गाँव के टीपू पहलवान को हम मिनटों में हरा दिया करेंगे।' राहुल ने उसे समझाया।

सोनल को भी ये तर्क अच्छा लगा। अब क्या था ? राहुल और सोनल दोनों ने ही बैलों की नाद में से घास व भूसे की सानी खानी शुरू कर दी। प्रारम्भ में उनका जी बहुत मिचलाया, मुँह में भी भूसा चुभा। पर पहलवान बनने के लालच में राहुल और सोनल ने बहुत सी घास निगल ली।

रात को नानी ने खाने के लिए दोनों को पुकारा। पर उन्होने कह दिया की भूख नहीं है। राहुल और सोनल के पेट में दर्द भी होने



लगा था। थोड़ी देर तक तो वे उसे सहते रहे। जब न सहा गया तो जोर जोर से रोने लगे।

रोने की आवाज सुन कर नानाजी दौड़े चले आये। वे तुरंत दौड़े दौड़े डॉक्टर के पास गये। डॉक्टर ने उनका पेट टटोला। वह सख्त था। डॉक्टर ने पूछा 'बच्चों ! तुमने क्या खाया है ? सच सच बताओ। नहीं तो फिर इंजेक्सन लगाना पड़ेगा।'

इंजेक्सन के डर के कारण राहुल और सोनल दोनों ही बोल पड़े- 'डॉक्टर साहब! हमने भूसा और घास खायी है।'

'वह क्यूँ?' डॉक्टर ने आश्चर्यचकित होकर पूछा। अब उन दोनों ने उन्हें भूसा खाने की सारी कथा विस्तार से सुना दी। उनकी बात सुन कर डॉक्टर और नाना नानी खूब हँसे।

नानाजी बोले- 'बेटा! अनुकरण सोच समझ कर ही करना चाहिए। सब काम सबके अनुकूल नहीं हुआ करता। बिना अकल के जो नकल की जाती है वह सफल नहीं हुआ करती।'

डॉक्टर ने दोनों को कड़वी-कड़वी दवा पीने के लिये दी। उस दिन से राहुल ने अपने कान पकड़े की अब वो किसी की नकल नहीं करेगा और अकल से काम लेगा।



**उरपोक प्राणियों में सत्य भी गुँगा हो जाता है।
वही सीमेंट जो ईंट पर चढ़कर पत्थर हो जाती है,
मिट्टी पर चढ़ा दिया जाय तो मिट्टी हो जाती है।**

-मुंशी प्रेमचंद-

**सेवा छोटी है या बड़ी, इसकी कीमत नहीं है।
किस भावना से, किस दृष्टि से वह की जा रही है,
उसकी कीमत है।**

-आचार्य विनोबो भावे-

कार्यालयीन टिप्पणियाँ

अंतरिम अनुदान	Interim Grant
अंतर्विभागीय	Inter Departmental
अनधिकृत	Unofficial
उपदान	Gratuity
करार भंग	Breach of agreement
कार्यसूची	Agenda
केन्द्रीय उपकर	Central cess
तदर्थ	Ad hoc
प्रतिकर छुट्टी	Compensatory leave
पत्राचार	Correspondence
पदनाम	Designation



श्रद्धांजलि



लोकसंगीत के प्रति अगाध प्रेम रखनेवाली मृदुभाषी विद्वान महिला, प्रख्यात हिंदी साहित्यकार एवं गोवा राज्य की पूर्व राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा का 18 नवम्बर, 2020 को आकस्मिक निधन हो गया।

श्रीमती सिन्हा का जन्म 27 नवम्बर, 1942 को बिहार के मुजफ्फरपुर जनपद में हुआ था। मनोविज्ञान में एम. ए. और बी-एड करने के उपरांत कुछ वर्षों तक शिक्षण-कार्य के पश्चात नौकरी छोड़ हिंदी-साहित्य की सेवा करते हुए आपने कई प्रसिद्ध कृतियों की रचना की जिसमें प्रमुख रूप से नई देवयानी (उपन्यास), सीता पुनि बोलों (उपन्यास), मात्र देह नहीं है औरत, स्पर्श की तासीर (स्त्री-विमर्श), देखन में छोटन लगे (कहानी संग्रह) आदि उनकी प्रतिनिधि रचनाएँ हैं।

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने श्रीमती मृदुला सिन्हा को साहित्य-भूषण व दीन दयाल उपाध्याय पुरस्कार से सम्मानित किया। अगस्त, 2014 से अक्टूबर, 2019 तक गोवा राज्य के राज्यपाल के रूप में भी मृदुला जी ने अपनी सेवाएँ दीं।

उनके असमय निधन से हिंदी-साहित्य जगत ने एक बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न साहित्यकार को खो दिया है। संस्थान एवं अंतस-परिवार श्रीमती मृदुला सिन्हा को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

अभिकल्प: अल्पना दीक्षित

सम्पर्क:

राजभाषा प्रकोष्ठ

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर (उ.प्र.)

दूरभाष:0512-259-7122

ईमेल: arkverma@iitk.ac.in; vedps@iitk.ac.in

वेब: <https://www.iitk.ac.in/new/antas>